नअी तालीमकी ओर

गांधीजी

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद

बुनियादी शिक्षा

लेखक : गांधीजी

स्वतंत्र भारतका हर व्यक्ति जब तक सुशिक्षित नागरिक नहीं बन जाता, तब तक हम सच्चे अर्थमें आजादीका अुपभोग नहीं कर सकते।

मात्र
पुस्तकमें
जानेवाल
कीमत

अि
कहना
गया है
छुआ ग
जोर धर्म
विद्यार्थी
गहरा अ
करेंगे,
राष्ट्रका
कीमत

अिस पुस्तकमें शिक्षाका सच्चा स्वरूप, आदर्श, माध्यम वगैरा आजके शिक्षा-संबंधी अनेक प्रश्नोंका समुचित और विस्तृत अुत्तर पाठकोंको मिलेगा।

कीमत २.००   डाकखर्च १.००

हमारे कुछ हिन्दी प्रकाशन

सत्यके प्रयोग अथवा आत्मकथा	१.५०
बापूके पत्र–२ : सरदार वल्लभभाईके नाम	३.००
बापूके पत्र मीराके नाम	३.००
सच्ची शिक्षा	२.००
बुनियादी शिक्षा	१.५०
शिक्षाकी समस्या	२.५०
विद्यार्थियोंसे	२.००
हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण	१.५०
गोसेवा	१.५०
दिल्ली-डायरी	३.००
गांधीजीकी संक्षिप्त आत्मकथा	०.७५
राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी	१.५०
अहिंसक समाजवादकी ओर	१.००
खादी	२.००
सत्य ही ओश्वर है	०.८०
बापूकी कलमसे	२.५०
रामनाम	०.५०
आरोग्यकी कुंजी	०.४४
खुराककी कमी और खेती	२.५०
सर्वोदय	२.००
विवेक और साधना	४.००
विचार-दर्शन	१.५०
महादेवभाओकी डायरी–१	५.००
महादेवभाओकी डायरी–२	५.००
महादेवभाओकी डायरी–३	६.००
सरदार वल्लभभाओ–१	६.००
सरदार वल्लभभाओ–२	५.००

डाकखर्च अलग]

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद–१४

नअी तालीमकी ओर

गांधीजी

संपादक

भारतन् कुमारप्पा

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर

अहमदाबाद
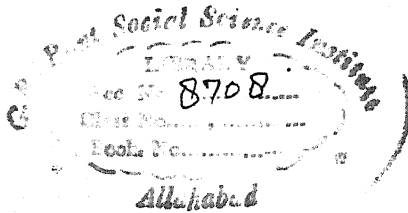
संपादकका निवेदन

शुरूमें ही यह बता देना जरूरी है कि अिस पुस्तकमें क्या क्या बातें होंगी। नवजीवन प्रकाशन मंदिरकी तरफसे बुनियादी शिक्षा पर गांधीजीकी अेक किताब पहले ही प्रकाशित हो चुकी है। अुसमें गांधीजीके शिक्षा-विषयक लेख और भाषण मुख्यतः १९३७ के अुत्तरार्धसे दिये गये हैं, जब अुन्होंने शिक्षाकी अपनी नयी योजना प्रारंभ की थी। यह नअी योजना बुनियादी शिक्षा कहलाने लगी। अिसका सम्बन्ध बच्चेको सातवेंसे चौदहवें वर्ष तक दी जानेवाली शिक्षासे था। कालान्तरमें अिसमें पूर्व-बुनियादी और अुत्तर-बुनियादी शिक्षाअें जुड़ गअीं, जिनका सम्बन्ध क्रमशः सातवें वर्षसे पहलेकी और चौदहवें वर्षके बादकी शिक्षासे है। अिन तीन सीढ़ियोंसे युक्त शिक्षा ही वह शिक्षा है, जिसका नवीन शिक्षा अथवा नअी तालीममें समावेश होता है।

अवश्य ही अिस नअी तालीमके बारेमें गांधीजीके ये विचार अुनके दिमागसे अचानक १९३७ में नहीं निकल आये थे, बल्कि वे दीर्घ कालके निरंतर विचार और अनुभवका फल थे। प्रस्तुत पुस्तकका सम्बन्ध अुस प्रारम्भिक निर्माण-कालसे है, जब अुन्होंने प्रचलित शिक्षा-प्रणालीके ख़िलाफ विद्रोह करके अुसके बजाय विभिन्न तरीकोंसे शिक्षाके अुन प्रयोगोंकी स्थापना करनेकी कोशिश की, जो शिक्षा-कार्यकी अुनकी अपनी कल्पनाके साथ मेल खाते थे। १९३७ में अुन्होंने बुनियादी शिक्षाकी जो योजना तैयार की, अुसे पूरी तरह समझनेके लिअे पीछे फिर कर अुस प्रारम्भिक काल पर दृष्टिपात करना जरूरी है, जहां हम अुसे जन्म लेते हुअे और बढ़ते हुअे देख सकते हैं। अिसलिअे यह पुस्तक बुनियादी शिक्षावाली पुस्तकके साथकी अेक जरूरी रचना कही जा सकती है।

अिस पुस्तकके लिअे सामग्री प्रो० निर्मलकुमार बोस और प्रो० अनाथनाथ बोसने अिकट्ठी की थी। परन्तु अुसको वर्तमान रूपमें सम्पादित और क्रमबद्ध करनेकी जिम्मेदारी अुन पर नहीं है।

यहां अिन लेखोंको अैसे ढंगसे क्रमबद्ध करनेका प्रयत्न किया गया है कि पाठक शिक्षा-संबंधी गांधीजीके विचारोंका विकास खुद देख सकें।

पहले विभागमें अुनके विद्रोह-कालका वर्णन है; दूसरे विभागमें प्रयोगोंका तथा तीसरे और बादके विभागोंमें सिद्धान्तोंके निर्माणका। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि यह विभाजन किसी भी प्रकारसे कठोर नहीं है, क्योंकि गांधीजीके विद्रोह — और प्रयोग-कालमें भी हम अुन्हें सिद्धान्त निर्माण करते देखते हैं। फिर भी यह आशा की जाती है कि अुनके लेखोंका अिस प्रकार वर्गीकरण करनेसे अुनके विचारोंके विकासको और भी स्पष्ट समझनेमें सुविधा होगी।

अुपरोक्त व्यवस्थाके अनुकूल बनानेके लिअे अधिकांश अध्यायों और अुद्धरणोंके नाम बदल दिये गये हैं।

अिस पुस्तकका हिन्दी अनुवाद श्री रामनारायण चौधरीने किया है।

भारतन् कुमारप्पा

अनुक्रमणिका

पांचवां विभाग : भाषाकी समस्या

छठा विभाग : अनिवार्य शिक्षा

सातवां विभाग : विशेष समूहोंकी शिक्षा

आठवां विभाग : अुच्च शिक्षा

नअी तालीमकी ओर

पहला विभाग : प्रचलित शिक्षाकी अपर्याप्तता

१
साहित्यिक शिक्षा

संपादक (गांधीजी) : शिक्षाका मामूली अर्थ अक्षरज्ञान होता है। लड़कोंको पढ़ना, लिखना और अंकगणित सिखलाना प्रारंभिक शिक्षा कहलाती है। अेक किसान अपनी रोटी अीमानदारीसे कमाता है। असे दुनियाका साधारण ज्ञान होता है। वह खासी अच्छी तरह जानता है कि असे अपने मां-बाप, अपने स्त्री-बच्चों और अपने गांववालोंके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये। वह सदाचारके नियम समझता और पालता है। परन्तु वह अपना नाम भी नहीं लिख सकता। असे अक्षरज्ञान देकर आप क्या करना चाहते हैं? क्या आप असका सुख रत्ती भर भी बढ़ायेंगे? क्या आप असे अपनी कुटिया अथवा किस्मतसे असंतुष्ट बना देना चाहते हैं? और आप अैसा करना चाहते हों तो भी असे अैसी शिक्षाकी जरूरत नहीं होगी। पाश्चात्य विचारोंकी बाढ़में बहकर हमने आगापीछा सोचे बिना यह नतीजा निकाल लिया कि हमें लोगोंको अिस प्रकारकी शिक्षा देनी चाहिये।

अब हम अच्च शिक्षाको लें। मैंने अितिहास, खगोलविद्या, बीजगणित, रेखागणित आदि पढ़े हैं। अिससे क्या हुआ? मुझे या मेरे आसपासवालोंको अिससे क्या फायदा हुआ? मैंने ये चीजें क्यों सीखीं? प्रोफेसर हक्सलेने शिक्षाकी व्याख्या यों की है:

> “मेरे खयालसे सच्ची शिक्षा अस आदमीको मिली है, जिसने बचपनमें अैसी तालीम पाओी हो कि असका शरीर असकी मरजीका मुस्तैद नौकर हो और आसानी व खुशीके

साथ वह सब काम कर ले जो अेक यंत्रके रूपमें वह कर सकता है, जिसकी बुद्धि निर्मल, शांत और तर्कशुद्ध विचार करनेमें समर्थ हो और जिसके सब भाग बराबरकी शक्तिवाले और अेकरस होकर काम करनेकी स्थितिमें हों, . . . जिसके मस्तिष्कमें प्रकृतिके मौलिक सत्योंका ज्ञानभण्डार भरा हो, . . . जिसकी अिन्द्रियोंको अेक प्रबल अिच्छाशक्तिके अधीन काम करनेकी तालीम मिली हो और वे अेक कोमल अंतःकरणकी सेविका हों, . . . जिसने सब प्रकारकी नीचताओंसे घृणा करना और दूसरोंका अपनी ही तरह आदर करना सीखा हो। मेरी कल्पनामें और किसीने नहीं, अैसे ही मनुष्यने सच्ची शिक्षा पाअी है, क्योंकि वह प्रकृतिके नियमोंके अनुसार चलेगा। वह प्रकृतिका और प्रकृति अुसका पूरा सदुपयोग करेगी।"

अगर यही सच्ची शिक्षा हो, तो मुझे जोरके साथ कहना चाहिये कि जिन शास्त्रोंका मैंने अूपर जिक्र किया है अुनका अुपयोग मैं अपनी अिन्द्रियोंका नियंत्रण करनेके लिअे कभी नहीं कर सका हूं। अिसलिअे चाहे आप प्रारंभिक शिक्षाको ले लीजिये, चाहे अुच्च शिक्षाको, मुख्य वस्तुके लिअे अुसकी आवश्यकता नहीं है। वह हमें मनुष्य नहीं बनाती। वह हमें अपना कर्तव्य-पालन करनेके योग्य नहीं बनाती।

पाठक : अगर यह बात है तो मुझे आपसे पूछना पड़ेगा कि आपमें ये सब बातें मुझे बतानेकी शक्ति कहांसे आअी? अगर आपको अुच्च शिक्षा न मिली होती, तो जो बातें आपने मुझे समझाअी हैं, वे आप कैसे समझा सकते थे?

संपादक : आपने अच्छी बात पूछी। परन्तु मेरा अुत्तर सीधा-सादा है — मैं क्षणभरके लिअे भी नहीं मानता कि मुझे अूंची या नीची शिक्षा न मिली होती, तो मेरा जीवन व्यर्थ गया होता। न मैं यह सोचता हूं कि मेरे बोलनेसे सेवा ही होती है। परन्तु सेवा

करनेकी मेरी अिच्छा जरूर है और यह अिच्छा पूरी करनेके प्रयत्नमें मुझे जो शिक्षा मिली है असका अपयोग मैं कर लेता हूं। अगर मैं असका सदुपयोग कर रहा हूं तो भी वह लाखोंके लिअे नहीं है, परंतु आप जैसे लोगोंके लिअे ही असे अिस्तेमाल कर सकता हूं; और अिससे मेरे कथनका समर्थन होता है। आप और मैं दोनों अिस झूठी शिक्षाके बुरे असरमें आये हैं। मैं मानता हूं कि मैं असके अिस बुरे असरसे मुक्त हो गया हूं और आपको अपने अनुभवका लाभ देनेकी कोशिश कर रहा हूं, और अैसा करके मैं अिस शिक्षाके निकम्मेपनका प्रत्यक्ष प्रमाण दे रहा हूं।

अिसके सिवा, मैंने हर हालतमें अक्षरज्ञानकी निन्दा नहीं की है। मैंने अितना ही दिखाया है कि हमें असकी मूर्तिपूजा नहीं करना चाहिये। वह हमारी कामधेनु नहीं है। अपने स्थानमें वह अपयोगी हो सकती है, और असका स्थान तब है जब हम अपनी अिन्द्रियोंको वशमें कर लें और अपने सदाचारकी नींव पक्की कर लें। यदि तब वह शिक्षा पानेकी हमारी अिच्छा हो तो हम असका सदुपयोग कर सकते हैं। आभूषणके तौर पर वह हमें शोभा दे सकती है। अिससे यह परिणाम निकलता है कि अिस शिक्षाको अनिवार्य बनाना जरूरी नहीं है। हमारी प्राचीन पाठशाला-प्रणाली काफी है। असमें चरित्र-निर्माणको प्रथम स्थान है और यही प्रारंभिक शिक्षा है। अिस बुनियाद पर खड़ी की गअी अिमारत ही टिकेगी।

हिन्द स्वराज्य (१९०८), अध्याय १८

लिखाअी-पढ़ाअीकी शिक्षाकी पूजा करनेकी बात मुझे कभी नहीं जंची। मेरे अनुभवने अच्छी तरह सिद्ध कर दिया है कि मात्र लिखाअी-पढ़ाअीकी शिक्षासे किसीकी नैतिक अूंचाअी तिलभर भी नहीं बढ़ती और चरित्र-निर्माण असससे स्वतंत्र दूसरी ही चीज है। मेरी यह पक्की राय है कि सरकारी स्कूलोंने हमें पुरुषार्थहीन, लाचार और नास्तिक

बना दिया है। अुन्होंने हममें असंतोष भर दिया है और अुस असंतोषका कोअी अुपाय न करके हमें निराश और दु:खी कर दिया है। अुन्होंने हमें, जैसी कि अपेक्षा रखी गअी थी, क्लार्क और दुभाषिया बना दिया है।

यंग अिंडिया, १–६–'२१

प्रश्न अुठता है कि अिस शिक्षासे लोगोंकी जरूरतें पूरी होती हैं या नहीं? शेष भारतकी तरह बड़ोदेमें भी आबादी मुख्यत: किसानोंकी है। क्या अिन किसानोंके बच्चे बेहतर किसान बनते हैं? अुन्हें जो शिक्षा मिलती है अुसके फलस्वरूप अुनमें कोअी नैतिक और आर्थिक सुधार दिखायी देता है? परिणाम दिखलानेके लिअे पचास सालका समय काफी लंबा है। मुझे भय है कि अिस प्रश्नका अुत्तर संतोषजनक नहीं हो सकता। बड़ोदेके किसान और जगहोंके अपने दूसरे भाअियोंसे ज्यादा सुखी या बेहतर नहीं हैं। अकालके समय वे भी अुतने ही नि:सहाय हो जाते हैं जितने दूसरे। अुनके गांवोंकी सफाअी अुतनी ही प्रारंभिक अवस्थामें है जैसी भारतके दूसरे हिस्सोंमें है। अुन्हें अपना कपड़ा आप बना लेनेके महत्त्वका भी पता नहीं है। बड़ोदेमें काफी जमीन अैसी है जिसकी गिनती भारतकी अुर्वरतम भूमिमें की जा सकती है। अुसे अपनी कपास बाहर भेजनेकी जरूरत नहीं होनी चाहिये। वह आसानीसे आत्म-संपूर्ण और स्वावलंबी राज्य हो सकता है और अुसके किसान खुशहाल बन सकते हैं। परंतु वह विदेशी वस्त्रोंसे सजा हुआ है — जो अुनकी गरीबी और गिरावटका प्रत्यक्ष चिह्न है। मद्यपानके मामलेमें भी अुनकी हालत अच्छी नहीं है; बल्कि शायद और भी खराब है। बड़ोदेकी शिक्षा पर शराबकी आमदनीका वैसा ही धब्बा है, जैसा अंग्रेजी भारतकी आय पर। कालीपरज प्रदेशके बच्चोंका अिस शिक्षाके बावजूद मदिरा-राक्षसी द्वारा सत्यानाश हो रहा है। बात यह है कि बड़ोदेमें दी जा रही शिक्षा

अंग्रेजी प्रणालीकी लगभग गुलामोंकी-सी नकल है। अुच्च शिक्षा हमें अपने ही देशमें विदेशी बना देती है और प्रारंभिक शिक्षाका बादके जीवनमें लगभग कोअी अुपयोग न होनेके कारण वह निकम्मी-सी हो जाती है। अुसमें न कोअी नवीनता है, न स्वाभाविकता। नवीनता न होनेसे कोअी हानि नहीं, अगर वह जनताकी आवश्यकताओंको पूरा करनेवाली पुरानी शिक्षा ही हो। लेकिन वह तो निकम्मी नकल है।

यंग अिंडिया, २१–१–'२६

२

अंग्रेजी शिक्षा

अंग्रेजी शिक्षा

पाठक : तो क्या मैं यह समझूं कि आप स्वराज्य-प्राप्तिके लिअे अंग्रेजी शिक्षाको जरूरी नहीं समझते?

सम्पादक (गांधीजी) : मेरा अुत्तर हां और ना दोनों है। लाखोंको अंग्रेजीका ज्ञान कराना अुन्हें गुलाम बनाना है। मैकालेने शिक्षाकी जो बुनियाद रखी थी अुसने हमें गुलाम बना दिया है। मेरा यह कहना नहीं है कि अुसका कोअी अैसा अिरादा था, परंतु फल यही निकला है। क्या यह दुःखकी बात नहीं है कि हमें स्वराज्यकी बात अेक विदेशी भाषामें करनी पड़ती है?

और यह ध्यान देने लायक बात है कि यूरोपवालोंने जो प्रणालियां छोड़ दी हैं, वे हमारे यहां प्रचलित हैं। अुनके विद्वान लगातार परिवर्तन करते रहते हैं। हम अज्ञानवश अुनकी छोड़ी हुअी प्रणालियोंसे चिपटे रहते हैं। वहां प्रत्येक विभाग अपनी शिक्षा-सम्बन्धी हालत सुधारनेके लिअे प्रयोग कर रहा है। वेल्स अिंग्लैंडका अेक छोटासा हिस्सा है। वेल्सवालोंमें वेल्श भाषाका ज्ञान पुनर्जीवित करनेके

बड़े प्रयत्न किये जा रहे हैं। अिंग्लैंडके खजानची श्री लायड जार्ज 'वेल्सके बच्चे वेल्श भाषा बोलें' अिस आंदोलनमें प्रमुख भाग ले रहे हैं। और हमारी क्या दशा है? हम अेक-दूसरेसे गलत अंग्रेजीमें पत्र-व्यवहार करते हैं और अिस दोषसे हमारे अेम० अे० भी मुक्त नहीं हैं; हमारे अुत्तम विचार अंग्रेजीमें प्रगट होते हैं; हमारी कांग्रेसकी कार्रवाअी अंग्रेजीमें की जाती है; हमारे अच्छेसे अच्छे अखबार अंग्रेजीमें छपते हैं। अगर यह हालत बहुत समय तक जारी रही, तो मेरा दृढ़ मत है कि आनेवाली सन्तानें हमें कोसेंगी और शाप देंगी।

यह अुल्लेखनीय बात है कि अंग्रेजी शिक्षा पाकर हमने राष्ट्रको गुलाम बना दिया है। दम्भ और अत्याचार बढ़ गये हैं; अंग्रेजी जाननेवाले हिन्दुस्तानियोंने लोगोंको धोखा देने और भयभीत करनेमें संकोच नहीं किया है। अिसलिअे अगर हम जनताके लिअे कुछ भी कर रहे हैं, तो अुसके अृणका अेक भाग ही चुका रहे हैं।

क्या यह दुःखकी बात नहीं है कि अगर मैं किसी न्यायालयमें जाना चाहूं तो मुझे अंग्रेजी भाषाका व्यवहार करना पड़ता है; और अगर बैरिस्टर बन जाता हूं तो अपनी मातृभाषामें नहीं बोल सकता और मेरी अपनी भाषाका अनुवाद मेरे लिअे किसी औरको करना पड़ता है? क्या यह बिलकुल बेहूदी बात नहीं है? क्या यह दासताका चिह्न नहीं है? अिसके लिअे मैं अंग्रेजोंको दोष दूं या अपने आपको? हम अंग्रेजी जाननेवाले लोगोंने ही भारतको गुलाम बनाया है। राष्ट्रका शाप अंग्रेजोंको नहीं बल्कि हमको लगेगा।

मैं आपसे कह चुका हूं कि आपके पिछले सवालका मेरा जवाब हां और ना दोनों है। मैंने आपको समझा दिया कि हां क्यों है। अब मैं यह समझाअूंगा कि ना क्यों है।

हम सभ्यताकी बीमारीमें अितने फंस गये हैं कि अंग्रेजी शिक्षाके बिना अपना काम पूरा चला नहीं सकते। जिन्होंने यह

शिक्षा प्राप्त कर ली है, वे जहां जहां जरूरत हो वहां अुसका सदुपयोग कर सकते हैं। अंग्रेज लोगोंसे व्यवहार करते समय, अपने यहांके लोगोंके साथके व्यवहारमें अुस हालतमें जब हम अंग्रेजी भाषाके द्वारा ही अुनसे पत्रव्यवहार कर सकते हों, और यह जाननेके लिअे कि अंग्रेज खुद अपनी सभ्यतासे कितने अूब गये हैं, हम अंग्रेजीका अिस्तेमाल कर सकते हैं, या अुसे सीख सकते हैं। जिन्होंने अंग्रेजीका अध्ययन किया है अुन्हें अपनी सन्तानको अपनी मातृभाषा द्वारा पहले नीति-धर्म सिखाना चाहिये, अेक दूसरी भारतीय भाषा सिखानी चाहिये; फिर जब वे बड़े हो जायं तब भले अंग्रेजी सीख लें, मगर अंतिम लक्ष्य यही होगा कि हमें अुसकी आवश्यकता नहीं होनी चाहिये। अुसके द्वारा रुपया कमानेका ध्येय नहीं होना चाहिये। अिस सीमित रूपमें अंग्रेजी सीखनेके बारेमें भी हमें यह विचार करना पड़ेगा कि अुसके द्वारा हमें क्या सीखना चाहिये और क्या नहीं सीखना चाहिये।

हिन्द स्वराज्य (१९०८), अध्याय १८

क्लार्क तैयार करनेवाली शिक्षा

मद्रासके विद्यार्थियों और भारत-भरके विद्यार्थियोंसे मैं यह पूछता हूं कि क्या तुम अैसी शिक्षा पा रहे हो, जो तुम्हें अिस आदर्शको प्राप्त करनेके योग्य बनायेगी और तुम्हारे अुत्तम गुणोंको बाहर लायेगी? या यह शिक्षा अैसी है जो सरकारी कर्मचारी या व्यापारी दफ्तरोंके क्लार्क बनानेवाला कारखाना बन गअी है? जो शिक्षा तुम्हें मिल रही है क्या अुसका अुद्देश्य सरकारी विभागों या दूसरे महकमोंमें केवल नौकरी पाना है? अगर तुम्हारी शिक्षाका यही ध्येय है, अगर तुमने अपने सामने यही लक्ष्य रख छोड़ा है, तो मेरा खयाल है और मुझे अन्देशा है कि कवि* ने जिस आदर्शकी कल्पना की है वह पूरा नहीं

---

* रवीन्द्रनाथ टागोर — संपा०

होगा। जैसा कि तुमने मुझे शायद कहते सुना हो या पढ़ा हो, मैं आधुनिक सभ्यताका कट्टर विरोधी हूं। मैं चाहता हूं कि यूरोपमें जो कुछ आजकल हो रहा है अुस पर नजर डालो और अगर तुम अिस नतीजे पर पहुंच चुके हो कि अिस वक्त यूरोप आधुनिक सभ्यताके पैरों तले कराह रहा है, तो तुम्हें और तुम्हारे माता-पिताको हमारी मातृभूमिमें अुस सभ्यताकी नकल करनेसे पहले दस बार सोचना पड़ेगा। मगर मुझे कहा गया है: "जब हमारे शासक हमारी मातृ-भूमिमें अुस संस्कृतिको लाते हैं, तब हम अुसे कैसे रोक सकते हैं?" अिस बारेमें जरा भी गलती न करना। मैं क्षण भरके लिअे भी नहीं मानता कि अगर तुम अुस संस्कृतिको अपनानेको तैयार नहीं हो तो किसी शासकको अुसे यहां लाना चाहिये, और अगर फिर भी वे अुसे हमारे यहां लाते हैं, तो मेरा खयाल है कि हमारे अपने भीतर वह बल मौजूद है जिससे हम अुस संस्कृतिको ठुकरा सकते हैं।

स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी, पृष्ठ ३१२, ३१३;
२७–४–'१५

अंग्रेजी शिक्षा

यह मेरा दृढ़ मत है कि अंग्रेजी शिक्षा जिस ढंगसे दी गअी है अुसने अंग्रेजी पढ़े-लिखे भारतीयोंको सत्त्वहीन बना दिया है, भारतीय विद्यार्थियोंके दिमाग पर बहुत जोर डाला है और हमें नकलची बना दिया है। ब्रिटिश राज्यसे हमारे संबंधके अितिहासका अेक सबसे दु:खद अध्याय यह रहा है कि अुसने देशी भाषाओंको क्रमश: स्थान-भ्रष्ट कर दिया है। राजा राममोहन राय अधिक बड़े सुधारक होते और लोकमान्य तिलक अधिक बड़े पंडित होते, अगर शुरूसे ही अुनके सामने अंग्रेजीमें विचार करने और अपने विचार मुख्यत: अंग्रेजीमें प्रगट करनेकी बाधा न होती। अुनकी अपनी जनता पर अुनका प्रभाव अद्भुत था। परंतु अगर वे किसी कम अस्वाभाविक प्रणालीमें पले होते, तो वह

प्रभाव और भी अधिक होता। बेशक, अुन दोनोंको अंग्रेजी साहित्यके रत्न-भंडारके ज्ञानसे लाभ हुआ। परंतु ये रत्न अुन्हें अुनकी अपनी देशी भाषाओंके द्वारा भी अुपलब्ध होने चाहिये थे। कोअी देश नकलचियोंकी जाति पैदा करके राष्ट्र नहीं बन सकता। विचार कीजिये कि अंग्रेजोंके पास बाअिबिलका अधिकृत संस्करण न होता तो अुनका क्या हाल हुआ होता। मैं जरूर मानता हूं कि चैतन्य, कबीर, नानक, गुरु गोविन्दसिंह, शिवाजी और राणा प्रताप राममोहन राय और तिलकसे बड़े पुरुष थे। मैं जानता हूं कि तुलना करना अटपटा काम है। सभी अपने अपने ढंगके अनुसार अेकसे बड़े हैं। परंतु परिणामोंकी दृष्टिसे राममोहन राय और तिलकका जनसाधारण पर अितना स्थायी अथवा दूरवर्ती प्रभाव नहीं है, जितना अुनसे अधिक भाग्यशाली परिस्थितियोंमें जन्मे कबीर वगैराका है। अुन्हें जिन बाधाओं पर विजय प्राप्त करनी पड़ी, अुन्हें देखते हुअे वे महान पुरुष थे; और दोनोंको ही अधिक महत्त्वपूर्ण और अधिक स्थायी सफलता प्राप्त हुअी होती, यदि अुन्हें अुस प्रणालीकी बाधा न होती जिसके अनुसार अुन्होंने अपनी तालीम पाअी। मैं यह माननेसे अिनकार करता हूं कि राजा राममोहन राय और लोकमान्यने जो विचार सोचे, अुन्हें वे अंग्रेजी भाषाकी जानकारीके बगैर नहीं सोच सकते थे। भारत पर प्रभाव डालनेवाले तमाम अन्ध-विश्वासोंमें से कोअी अितना बड़ा नहीं है जितना यह है कि स्वतंत्रताका अर्थ समझने और तर्कशुद्ध विचारकी शक्तिका विकास करनेके लिअे अंग्रेजी भाषाका ज्ञान जरूरी है। यह याद रखना चाहिये कि पिछले पचास सालसे देशके सामने अेक ही शिक्षा-पद्धति रही है और देश पर अभिव्यक्तिका अेक ही माध्यम आरोपित रहा है। अिसलिअे हमारे सामने अिस बारेमें कोअी सामग्री नहीं है कि मौजूदा स्कूल-कॉलेजोंकी शिक्षाके बिना हम क्या होते। किन्तु हम यह जरूर जानते हैं कि भारत पचास वर्ष पहले जैसा था अुससे आज अधिक गरीब है, अपनी रक्षा करनेमें कम समर्थ है और अुसकी सन्तानोंमें पहलेसे कम

शक्ति है। मुझे यह बतानेकी जरूरत नहीं कि यह सब शासन-प्रणालीमें दोष होनेके कारण है। शिक्षा-प्रणाली अुसका सबसे दूषित भाग है।

अुसकी कल्पना और जन्ममें ही भूल थी, क्योंकि अंग्रेज शासक अीमानदारीसे यह मानते थे कि देशी शिक्षा-पद्धति निकम्मीसे भी बुरी है। अिसका लालन-पालन पापमें हुआ है, क्योंकि शासकोंकी प्रवृत्ति यह रही है कि भारतीय शरीर, मन और आत्माको बौना बनाकर रखा जाय।

यंग अिंडिया, २७–४–'२१

टागोरको अुत्तर

मैं नहीं चाहता कि मेरा मकान चारों तरफ दीवारोंसे घेर दिया जाय और मेरी खिड़कियां बन्द कर दी जायं। मैं चाहता हूं कि सब देशोंकी संस्कृतियोंकी हवा मेरे घरके चारों ओर अधिकसे अधिक आजादीसे घूमती रहे। लेकिन अुनमें से किसीके प्रवाहमें बह जानेसे मैं अिनकार करता हूं। मैं दूसरोंके घरोंमें अवांछनीय आगन्तुक, भिखारी या गुलाम बनकर नहीं रहना चाहता। मुझे यह मंजूर नहीं कि मैं अपनी बहनों पर मिथ्याभिमान या संदिग्ध सामाजिक लाभके खातिर अंग्रेजी सीखनेका अनावश्यक भार डालूं। मैं चाहूंगा कि हमारे साहित्यिक अभिरुचिवाले युवक-युवतियां जितनी चाहें अंग्रेजी और दूसरी विश्व-भाषाअें सीखें और फिर आशा रखूंगा कि वे बोस या रॉय अथवा स्वयं कविकी भांति अपनी विद्वत्ताका लाभ भारत और संसारको प्रदान करें। परन्तु मैं नहीं चाहता कि अेक भी भारतवासी अपनी मातृभाषाको भूल जाय, अुसकी अुपेक्षा करे या अुस पर लज्जित हो, अथवा यह महसूस करे कि वह अपने अुत्तम विचार अपनी ही देशी भाषामें सोच या प्रकट नहीं कर सकता। मेरा धर्म जेलखानेका नहीं है। अुसमें अीश्वरकी सृष्टिके छोटेसे छोटे प्राणीके लिअे जगह है। मगर अुसमें गुस्ताखी और जाति, धर्म या रंगके अभिमानकी गुंजाअिश नहीं है।

यंग अिंडिया, १–६–'२१

अंग्रेजी साहित्यके अनुवाद काफी हैं

हमारे यहांके स्त्री-पुरुषोंको अंग्रेजीके अध्ययनमें आजकी अपेक्षा कम समय खर्च करनेको कहनेमें मेरा हेतु यह नहीं है कि अिससे अुन्हें जो आनंद मिल सकता है अुससे अुन्हें वंचित कर दूं, परन्तु मेरी यह राय है कि अगर हम अधिक स्वाभाविक तरीका अख्तियार करें, तो वही आनंद कम खर्च और कम कष्टसे मिल सकता है। संसारमें अनेक अमूल्य सुन्दर रत्न भरे हैं, परन्तु वे सब रत्न अंग्रेजी साहित्यकी अुपज नहीं हैं। अितनी ही अुत्तम रचनाओंका गर्व दूसरी भाषाअें भी कर सकती हैं; ये सब हमारे जनसाधारणके लिअे अुपलब्ध की जानी चाहिये और यह तभी हो सकता है जब हमारे अपने विद्वान हमारी अपनी भाषाओंमें अुनका अनुवाद करनेका बीड़ा अुठायें।

स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ़ महात्मा गांधी, पृ० ४२६–२८;
२०–२–'१८

दूसरा विभाग : नये ढंगकी शिक्षाका पूर्वाभास

शिक्षामें प्रयोगोंकी जरूरत

धोखा-धड़ी, आत्मवंचना और रिवाजके आगे झुकनेकी प्रवृत्ति आजकल बहुत दीख रही है। शिक्षाके क्षेत्रमें, जिसमें देशके बच्चोंके भविष्यके बीज निहित हैं, पूरी सचाअी, सत्यकी निर्भय शोध और अत्यन्त साहसपूर्ण प्रयोगोंकी जरूरत है। परन्तु शर्त यह है कि वे प्रयोग सही हों और अुनका आधार निष्ठापूर्ण जीवन द्वारा पावन और परिपक्व बना हुआ गहन विचार हो। शिक्षामें हरअेक नौसिखिया अैसे प्रयोग नहीं कर सकता। यह क्षेत्र सही प्रयोगोंके लिअे अवश्य काफी लम्बा-चौड़ा है, पर साथ ही अुसमें कोअी जल्दबाजी नहीं हो सकती, जैसी कि सोनेकी खोजमें पागल बने हुअे कुछ लोग करते हैं। शिक्षामें अिस तरहकी जल्दबाजीके खतरनाक परिणाम आयेंगे।

यंग अिंडिया, ३०–९–'२६

३

घरकी शिक्षा

घरमें मिलनेवाली शिक्षा

जब जनवरी १८९७ में मैंने डरबनकी भूमि पर पैर रखा, तब मेरे साथ तीन बच्चे थे। अेक मेरा १० वर्षका भानजा था और ९ और ५ वर्षकी आयुके मेरे अपने पुत्र थे। मेरे सामने यह प्रश्न था कि अुन्हें कहां शिक्षा दिलाअी जाय? भारत वापस भेज देनेकी मेरी अिच्छा नहीं थी, क्योंकि अुस समय भी मैं मानता था कि छोटे बच्चोंको अुनके माता-पितासे अलग नहीं रखना चाहिये। बच्चे अेक सुव्यवस्थित घरमें कुदरती तौर पर जो शिक्षा ग्रहण करते हैं, वह

छात्रावासोंमें मिलना असम्भव है। अिसलिअे मैंने अपने बच्चोंको अपने साथ रखा। बच्चोंको जितना समय मैं देना चाहता था अुतना नहीं दे सका। अुन पर काफी ध्यान न दे सकनेसे और दूसरे अनिवार्य कारणोंसे मैं जो साहित्यिक शिक्षा अुन्हें देना चाहता था, वह नहीं दे सका और अिस मामलेमें मेरे सब लड़कोंको मेरे खिलाफ शिकायतें रही हैं। जब कभी अुनका किसी अेम० अे० या बी० अे० या मैट्रिक पाससे भी काम पड़ता है, तो अैसा मालूम होता है कि स्कूलकी शिक्षा न मिलनेकी कमीको वे महसूस करते हैं।

फिर भी मेरा यह मत है कि यदि वे सार्वजनिक पाठशालाओंमें किसी न किसी तरहकी शिक्षा पानेका आग्रह करते, तो वे अुस तालीमसे वंचित रह जाते जो अनुभवकी पाठशालामें या माता-पिताके सम्पर्कसे ही मिल सकती है। अुनकी तरफसे जैसा मैं आज चिन्तासे मुक्त हूं वैसा हरगिज नहीं होता; और मुझसे अलग रह कर अिंग्लैण्ड या दक्षिण अफ्रीकामें अुन्हें जो बनावटी शिक्षा मिलती, अुससे वे वह सादगी और सेवाकी भावना, जो अुनके जीवनमें अिस वक्त प्रकट होती है, कभी न सीखते। अुलटे, अुनके रहन-सहनके कृत्रिम ढंगसे मेरे सार्वजनिक कार्यमें गम्भीर बाधा पड़ती। अिसलिअे, यद्यपि अुनके या अपने संतोषके लायक साहित्यिक शिक्षा मैं अुन्हें नहीं दे पाया हूं, फिर भी जब मैं अपने पिछले कालका सिंहावलोकन करता हूं, तो मुझे अैसा नहीं मालूम होता कि मैंने अुनके प्रति भरसक अपने कर्तव्यका पालन नहीं किया है। मुझे अुन्हें सार्वजनिक पाठशालाओंमें न भेजनेका अफसोस भी नहीं है। मैंने सदा ही अनुभव किया है कि मेरे सबसे बड़े लड़केमें जो अवांछनीय बातें मैं आजकल देखता हूं, वे मेरे अपने ही अनुशासनहीन और अपरिपक्व आरम्भिक जीवनका प्रतिबिम्ब हैं। मैं अुस कालको अपरिपक्व ज्ञान और असंयमका काल मानता हूं। वही काल मेरे ज्येष्ठ पुत्रकी अत्यन्त ग्रहणशील आयुका काल था और स्वभावतः अुसने अुस कालको मेरे असंयम और

अनुभवहीनताका काल माननेसे अिनकार किया है। अिसके विपरीत वह मानता रहा है कि वह मेरे जीवनका सबसे अुज्ज्वल काल था और बादमें जो परिवर्तन हुअे वे भ्रमके कारण हुअे और अुस भ्रमको गलतीसे ज्ञान समझ लिया गया। और अुसका यह समझना ठीक हो सकता है। वह क्यों न समझे कि मेरा प्रारम्भिक काल जागृतिका काल था और बादके मौलिक परिवर्तनके वर्ष भ्रम और अहंकारके वर्ष थे? मित्रोंने अकसर अिस सम्बन्धमें मेरे सामने अिस तरहके प्रश्न रखे हैं : अगर मैं अपने लड़कोंको साहित्यिक शिक्षा देता तो क्या हानि होती? मुझे अिस तरह अुनके पर काट देनेका क्या हक था? डिग्रियां लेकर अपना जीवनमार्ग खुद पसंद करनेके अुनके रास्तेमें मुझे क्यों आना चाहिये था?

मैं नहीं समझता कि अिन सवालोंमें बहुत सार है। मेरा बहुतसे विद्यार्थियोंसे काम पड़ा है। मैंने खुद अथवा दूसरोंके जरिये दूसरे बच्चों पर भी अपने शिक्षा-सम्बन्धी विचार — जिन्हें दूसरे मेरी सनक मान सकते हैं — लादनेकी कोशिश की है और अुसके परिणाम देखे ह। मेरी जानकारीमें अिस समय अैसे अनेक नौजवान हैं, जो मेरे लड़कोंकी ही अुम्रके हैं। मैं नहीं समझता कि मनुष्यकी हैसियतसे वे मेरे लड़कोंसे कुछ भी बेहतर हैं या मेरे लड़कोंको अुनसे बहुत कुछ सीखना है।

परन्तु मेरे प्रयोगोंका अन्तिम परिणाम भविष्यके गर्भमें है। अिस विषयकी यहां चर्चा करनेका मेरा हेतु यह है कि सभ्यताके अितिहासके विद्यार्थियोंको कुछ अन्दाज हो जाय कि अनुशासनपूर्ण गृह-शिक्षा और स्कूली शिक्षामें क्या फर्क है और माता-पिताके जीवनमें होनेवाले फेरबदलका बच्चों पर क्या असर पड़ता है। अिस अध्यायका अुद्देश्य यह भी दिखलाना है कि सत्यके अुपासकको अपने सत्यके प्रयोगोंमें कहां तक जाना पड़ता है और स्वतंत्रताके पुजारीको अुस कठोर देवीकी अुपासनामें क्या क्या कुरबानियां करनी पड़ती हैं।

अगर मुझमें स्वाभिमानकी भावना नहीं होती और मैं अिस बात पर सन्तोष कर लेता कि जो शिक्षा दूसरे बच्चोंको नहीं मिल सकती, वह मेरे बच्चोंको मिल रही है, तो अुनकी साहित्यिक शिक्षाको नुकसान पहुंचाकर मैंने अुन्हें स्वतंत्रता और स्वाभिमानका जो पदार्थपाठ पढ़ाया अुससे वे वंचित रह जाते। और जहां स्वतंत्रता और साहित्यिक शिक्षाके बीच चुनाव करना पड़ता है, वहां कौन नहीं कहेगा कि स्वतंत्रता साहित्यिक शिक्षासे हजार गुनी बढ़कर है?

आत्मकथा (१९२६); पृष्ठ २४५–४८

४

टॉल्स्टॉय फार्म पर

टॉल्स्टॉय फार्ममें शिक्षा

जब फार्म बढ़ने लगा तो यह जरूरी मालूम हुआ कि वहांके लड़के-लड़कियोंकी शिक्षाका कुछ प्रबन्ध किया जाय। वर्तमान शिक्षा-प्रणालीमें मेरा विश्वास नहीं था और मैं चाहता था कि अनुभव और प्रयोगसे सही पद्धति खोज निकालूं। मैं अितना ही जानता था कि आदर्श स्थितिमें सच्ची शिक्षा तो माता-पिताके द्वारा ही दी जा सकती है, और अुसमें बाहरकी सहायता कमसे कम होनी चाहिये। मैंने सोचा कि टॉल्स्टॉय फार्म अेक परिवार है, जिसमें मैं पिताके स्थान पर हूं और जहां तक सम्भव हो बच्चोंकी तालीमकी जिम्मेदारी मुझे अपने कंधों पर लेनी चाहिये।

बेशक यह कल्पना त्रुटियोंसे खाली नहीं थी। सारे नौजवान लोग अपने बचपनसे मेरे साथ नहीं थे। अुनका लालन-पालन विभिन्न परिस्थितियोंमें और वातावरणोंमें हुआ था और वे अेक ही धर्मके नहीं थे। अैसी हालतमें मैं पिताका स्थान ग्रहण कर भी लेता, तो अुन नौजवानोंके प्रति पूरा न्याय कैसे कर सकता था?

परन्तु मैंने हृदयके परिष्कार अथवा चरित्रके निर्माणको हमेशा पहला स्थान दिया था और चूंकि मेरा यह विश्वास था कि अुनकी अुम्र और अुनका लालन-पालन कितना ही अलग अलग तरहका क्यों न हो, नैतिक शिक्षा अुन सबको अेकसी दी जा सकती है, अिसलिअे मैंने चौबीसों घंटे पिता बनकर अुनके बीचमें रहनेका निश्चय किया। मैं मानता था कि अुनकी शिक्षाके लिअे चरित्र-निर्माण सही बुनियाद है और अगर बुनियाद दृढ़तासे रख दी गअी, तो मुझे विश्वास था कि बालक और सब बातें अपने-आप अथवा हितैषियोंकी मददसे सीख लेंगे।

परन्तु चूंकि मैं साथ ही साथ लिखने-पढ़नेकी शिक्षाकी जरूरतको भी पूरी तरह समझता था, अिसलिअे मैंने श्री कैलनबैक और श्री प्रागजी देसाअीकी सहायतासे कुछ कक्षायें शुरू कीं। शारीरिक शिक्षाका मूल्य भी मैं कम नहीं मानता था। यह अुन्हें अुनके रोजके कामसे ही मिल जाती थी, क्योंकि फार्म पर कोअी नौकर नहीं थे और खाना बनानेसे लगाकर सफाअी तकका सब काम आश्रमवासी ही करते थे। बहुतसे फलोंके पेड़ोंकी देखभाल करनी पड़ती थी और बागवानीका काम भी काफी करना होता था। श्री कैलनबैकको बागवानीका शौक था और अुन्होंने सरकारके अेक आदर्श बागमें अिस कार्यका कुछ अनुभव प्राप्त कर लिया था। जो लोग रसोअीघरमें काम नहीं करते थे, अैसे जवान और बूढ़े सब लोगोंके लिअे कुछ समय बागवानीमें देना लाजिमी था। यह काम अधिकांशमें बालक करते थे और अिसमें खड्डे खोदना, लकड़ी काटना और बोझ अुठाना भी शामिल था। अिससे अुनका खूब व्यायाम हो जाता था। अिस काममें अुन्हें आनन्द आता था और अिसलिअे साधारणतः अुन्हें किसी दूसरे व्यायाम या खेलकूदकी जरूरत नहीं रहती थी। अवश्य ही अुनमें से कुछ और कभी कभी सबके सब कामकी चोरी करते थे और अुससे बचनेकी कोशिश करते थे। कभी कभी मैं अुनकी चालाकी पर आंखें मूंद लेता था, परन्तु अकसर मैं अुनके प्रति कठोर

रहता था। मैं यह तो कहूंगा कि अुन्हें मेरी सख्ती पसंद नहीं थी। परन्तु मुझे यह याद नहीं पड़ता कि अुन्होंने कभी अुसका विरोध किया हो। जब कभी मैं कठोर बनता तो दलील देकर अुनको समझा देता कि अपने कामसे खिलवाड़ करना अुचित नहीं है।

परन्तु यह समझ थोड़ी ही देर रहती और दूसरे ही क्षण वे फिर अपना काम छोड़कर खेलने लग जाते। फिर भी हमारा काम चलता रहता और हर हालतमें अुनके शरीर अच्छे बन गये। फार्म पर शायद ही कोअी बीमार होता था, यद्यपि यह कहना पड़ेगा कि अिसका कारण बहुत कुछ अच्छा जलवायु और भोजनका निश्चित समय भी था।

अेक बात औद्योगिक शिक्षाके बारेमें। मेरा अिरादा प्रत्येक बालकको कोअी न कोअी अुपयोगी हाथका धन्धा सिखानेका था। अिस कामके लिअे श्री कैलनबैक अेक ट्रेपिस्ट मठमें गये और जूता बनाना सीख कर लौटे। अुनसे मैंने यह कला सीखी और जो लोग अुसे अपनानेको तैयार हुअे अुन्हें सिखाअी। श्री कैलनबैकको बढ़ईगिरीका कुछ अनुभव था और अेक दूसरे आश्रमवासी भी अिसे जानते थे; अिसलिअे बढ़ईगिरीकी हमारे यहां अेक छोटीसी कक्षा हो गअी। खाना बनाना तो लगभग सभी बालकोंको आता था।

ये सब अुनके लिअे नअी बातें थीं। अुन्हें कभी सपनेमें भी खयाल नहीं आया होगा कि किसी दिन ये चीजें हमें सीखनी पड़ेंगी, क्योंकि आम तौर पर दक्षिण अफ्रीकामें भारतीय बच्चोंको केवल लिखने-पढ़ने और अंकगणितकी ही तालीम मिलती थी।

टॉल्स्टॉय फार्म पर हमने यह नियम बना दिया था कि जो बात शिक्षक न करें वह बच्चोंसे न कराअी जाय और अिसलिअे जब कभी अुन्हें कोअी काम करनेके लिअे कहा जाता, तो कोअी न कोअी शिक्षक हमेशा अुन्हें सहयोग देता और वास्तवमें अुनके साथ काम करता था। अिस प्रकार बालक जो कुछ सीखते थे प्रफुल्लतापूर्वक सीखते थे।

परन्तु साहित्यिक शिक्षाका मामला अधिक कठिन था। अिसके लिअे मेरे पास न तो आवश्यक साधन थे और न साहित्यिक योग्यता थी; और अिस विषय पर समय लगाना चाहता तो वह भी मेरे पास नहीं था। जो शारीरिक काम मैं कर रहा था, अुससे दिन-भरके बाद मैं बुरी तरह थक जाता था और मैं कक्षायें ठीक अुस समय लेता था जब मुझे आरामकी अधिकसे अधिक आवश्यकता होती थी। अिसलिअे कक्षाके लिअे ताजा रहना तो दूर, मैं जागता भी बहुत कठिनाअीके साथ रह सकता था। सुबहका वक्त खेतमें और घरेलू कामकाजमें लगाना पड़ता था, अिसलिअे स्कूलके घंटे दुपहरके भोजनके बाद रखने पड़ते थे। और कोअी समय पाठशालाके लिअे अनुकूल नहीं था।

साहित्यिक शिक्षाके लिअे हम अधिकसे अधिक तीन घंटे देते थे। हिन्दी, तामिल, गुजराती और अुर्दू सब सिखाअी जाती थीं, और पढ़ाअी लड़कोंकी मातृभाषाओंके द्वारा कराअी जाती थी। अंग्रेजी भी सिखाअी जाती थी। अिसके सिवा, यह भी आवश्यक था कि गुजराती हिन्दू बालकोंको थोड़ीसी संस्कृतका परिचय कराया जाय और सब बालकोंको प्रारम्भिक अितिहास, भूगोल और अंकगणित सिखाया जाय।

तामिल और अुर्दू सिखानेका बीड़ा मैंने अुठाया था। तामिलका जो थोड़ा ज्ञान मुझे था, वह समुद्र-यात्राओं और जेलखानोंमें प्राप्त किया हुआ था। वह ज्ञान पोपकी लिखी बढ़िया तामिल पुस्तकके आगे नहीं पहुंचा था। अुर्दू लिपिका ज्ञान मेरा अुतना ही था जितना मैंने अेक ही समुद्र-यात्रामें प्राप्त किया था और अुस भाषाकी मेरी जानकारी अुन सुपरिचित फारसी और अरबी शब्दों तक सीमित थी जो मैंने मुसलमान मित्रोंके संपर्कसे सीख लिये थे। संस्कृतका ज्ञान जो कुछ मैंने हाअीस्कूलमें सीखा था अुससे अधिक नहीं था; मेरी गुजराती भी जो कुछ स्कूलमें सीखी जाती है अुससे अच्छी नहीं थी।

यह थी वह पूंजी जिससे मुझे काम चलाना था। साहित्यिक योग्यतामें मेरे साथियोंकी कमी मुझसे भी दो कदम आगे थी। परन्तु अपने देशकी भाषाओंके प्रति मेरा प्रेम, अपनी शिक्षण-शक्तिमें मेरा विश्वास, मेरे विद्यार्थियोंका अज्ञान और अुससे भी अधिक अुनकी अुदारता, अिन सब चीजोंने मेरी लाज रख ली।

तामिल लड़के सब दक्षिण अफ्रीकामें पैदा हुअे थे, अिसलिअे बहुत थोड़ी तामिल जानते थे और लिपि तो बिलकुल नहीं जानते थे। अिसलिअे अुनको लिपि और प्रारंभिक व्याकरण मुझे सिखाना पड़ता था। यह आसान काम था। मेरे विद्यार्थी जानते थे कि तामिल बातचीतमें वे मुझे कभी भी हरा सकते हैं और जब अंग्रेजी न जाननेवाले तामिल लोग मुझसे मिलने आते थे, तो ये लड़के मेरे दुभाषिया बन जाते थे। मेरा काम मजेसे चलता रहा, क्योंकि मैंने अपने विद्यार्थियोंसे अपना अज्ञान छिपानेका कभी प्रयत्न नहीं किया। सब बातोंमें मैं जैसा सचमुच था ठीक वैसा ही मैंने अपनेको अुन्हें दिखाया। अिसलिअे भाषाके मेरे जबरदस्त अज्ञानके बावजूद मैंने अुनका प्रेम और आदर कभी नहीं गंवाया। मुसलमान लड़कोंको अुर्दू सिखाना ज्यादा आसान था। लिपि वे जानते थे। अुनमें पढ़नेका शौक जगाना और अुनकी लिपि सुधारना, बस अितना ही मेरा काम था। ये बालक ज्यादातर निरक्षर थे और किसी स्कूलमें पढ़े न थे। परन्तु अपने कामके सिलसिलेमें मैंने देखा कि मुझे अुनसे आलस्य छुड़वाने और अुनकी पढ़ाअीकी देखरेख रखनेके अलावा अुन्हें कुछ खास सिखाना नहीं था। मुझे अिससे संतोष था, अिसलिअे मैं अलग-अलग अुम्रके और विभिन्न विषय सीखनेवाले लड़कोंको अेक साथ अेक ही कमरेमें बिठाकर अपना काम कर लेता था।

पाठ्यपुस्तकोंके बारेमें हम बहुतसी बातें सुनते हैं, लेकिन अुनकी कमी मुझे कभी महसूस नहीं हुअी। मुझे यह भी याद नहीं कि जो पुस्तकें अुपलब्ध थीं अुनका भी बहुत अुपयोग किया गया हो। मुझे लड़कों

पर पुस्तकोंका ढेर लादनेकी बिलकुल आवश्यकता नहीं जान पड़ी। मेरा हमेशासे यह खयाल रहा है कि विद्यार्थीके लिअे सच्ची पाठ्य-पुस्तक अुसका शिक्षक है। मुझे वे बातें बहुत कम याद हैं जो मेरे शिक्षकोंने मुझे पुस्तकोंसे पढ़ाओी थीं, परन्तु वे बातें अब भी मुझे स्पष्ट याद हैं जो अुन्होंने जबानी सिखायी थीं।

बच्चे अपनी आंखोंकी अपेक्षा अपने कानोंके द्वारा कहीं अधिक मात्रामें और कम मेहनतमें ग्रहण करते हैं। मुझे याद नहीं पड़ता कि मैंने कोओी पुस्तक अपने लड़कोंको शुरूसे आखिर तक पढ़ाओी हो। परन्तु विभिन्न पुस्तकोंको पढ़कर मैं जो कुछ हजम कर लेता था, वह सब अपनी ही भाषामें अुन्हें दे देता था और मैं कह सकता हूं कि अुसकी याद अुनके मनमें आज भी होगी। वे जो कुछ पुस्तकोंसे सीखते थे, अुसे याद रखना अुनके लिअे परिश्रम-साध्य था, परन्तु जो कुछ मैं अुन्हें जबानी सिखा देता था, अुसे वे बहुत ही आसानीसे दोहरा सकते थे। पढ़ना अुनके लिअे अेक कठिन काम हो जाता था, मगर मेरी बात सुननेमें अुन्हें मजा आता था, बशर्ते कि मैं अपने विषयको अुनके लिअे दिलचस्प न बना सकनेके कारण अुन्हें अुबा न दूं। और मेरे प्रवचन सुनकर अुन्हें जो प्रश्न पूछनेकी प्रेरणा होती थी, अुनसे मुझे अुनकी समझनेकी शक्तिका अन्दाजा हो जाता था।

लड़कोंकी आध्यात्मिक शिक्षाका काम अुनकी शारीरिक और मानसिक शिक्षासे बहुत अधिक कठिन था। आत्माकी शिक्षाके लिअे मैंने धार्मिक ग्रंथों पर बहुत थोड़ा आधार रखा। अवश्य ही मैं मानता था कि प्रत्येक विद्यार्थीको अपने खुदके धर्मके तत्त्वोंका परिचय और अपने धर्मशास्त्रोंका साधारण ज्ञान होना चाहिये। असलिअे मैंने अैसे ज्ञानकी भरसक अच्छी व्यवस्था कर दी। परन्तु मेरे विचारसे वह बौद्धिक शिक्षाका ही भाग था। टॉल्स्टॉय फार्मके बालकोंकी शिक्षाका काम हाथमें लेनेसे बहुत पहले ही मैंने समझ लिया था कि आत्माकी तालीमका काम अलग ही चीज है। आत्माका विकास करनेका

अर्थ है चरित्रका निर्माण करना और ओश्वरके ज्ञान तथा आत्माके साक्षात्कारकी दिशामें बढ़ने योग्य बनना। और मेरी निश्चित राय थी कि यह बच्चोंकी शिक्षाका जरूरी अंग है, और यह कि आत्माके परिष्कारके बिना सारी तालीम बेकार है, बल्कि हानिकारक भी हो सकती है।

मैं अिस वहमसे खूब परिचित हूं कि आत्म-साक्षात्कार जीवनके चौथेपन अर्थात् संन्यास आश्रममें ही संभव है। परन्तु यह सभी जानते हैं कि जो लोग अिस अमूल्य अनुभवकी तैयारीको जीवनकी आखिरी मंजिल तक मुलतवी रखते हैं, वे आत्म-साक्षात्कार तो प्राप्त नहीं करते, परन्तु बुढ़ापा जरूर पा लेते हैं—जो दूसरे और दयाजनक बालपनके बराबर ही होता है—और पृथ्वी पर भार बनकर जीते हैं। मुझे पूरी तरह याद है कि मैं जब पढ़ा रहा था तब अर्थात् १९११-१२ में भी मेरे यही विचार थे, भले ही मैं अुन्हें अुस समय अिस भाषामें प्रकट न कर पाता।

तो फिर यह आध्यात्मिक शिक्षा दी कैसे जाय? मैं लड़कोंको भजन कंठस्थ कराता और बुलवाता था और नीतिकी पुस्तकें पढ़कर सुनाता था। परन्तु अिससे मुझे संतोष नहीं होता था। जैसे-जैसे मैं अुनके निकट सम्पर्कमें आया, मैंने देखा कि पुस्तकोंके जरिये आत्माकी तालीम नहीं दी जा सकती। जैसे शारीरिक शिक्षा शारीरिक व्यायाम और बौद्धिक शिक्षा बौद्धिक अभ्यासके द्वारा देनी होती है, ठीक वैसे ही आत्माकी शिक्षा आत्माके व्यायाम द्वारा ही दी जा सकती है। और आत्माका व्यायाम सर्वथा शिक्षकके जीवन और चरित्र पर निर्भर है। शिक्षकको अपने आचरण पर सदा ध्यान रखना पड़ेगा, चाहे वह अपने लड़कोंके बीचमें हो या न हो।

कोसों दूर बैठे हुओ भी शिक्षक अपने रहन-सहनके तरीकेसे विद्यार्थियोंकी आत्मा पर प्रभाव डाल सकता है। अगर मैं झूठा हूं तो मेरा लड़कोंको सच बोलना सिखाना व्यर्थ होगा। अेक कायर शिक्षक अपने लड़कोंको बहादुर बनानेमें कभी सफल नहीं होगा, और स्वयं

संयम न जाननेवाला अपने विद्यार्थियोंको संयमका मूल्य हरगिज नहीं सिखा सकता। अिसलिअे मैंने देख लिया कि मुझे अपने साथ रहनेवाले लड़के-लड़कियोंके सामने सदा पदार्थपाठ बनकर रहना चाहिये। अिस प्रकार वे मेरे गुरु बन गये और मैंने किसी और कारणसे न सही, परन्तु केवल अुन्हींके खातिर भला बनना और सीधा रहना सीख लिया। मैं कह सकता हूं कि टॉल्स्टॉय फार्ममें मैंने अपने पर जो अधिकाधिक अनुशासन और संयम लगाया, वह ज्यादातर मेरे अिन संरक्षितोंके कारण ही था।

अुनमें से अेक लड़का बड़ा क्रोधी, अुच्छृंखल, झूठ बोलनेका आदी और झगड़ालू था। अेक मौके पर अुसने बहुत ज्यादा अूधम किया। मैं अुत्तेजित हो अुठा। अपने लड़कोंको मैं कभी दंड नहीं देता था, परन्तु अिस बार मुझे बहुत गुस्सा आ गया। मैंने अुसे समझानेकी कोशिश की। परन्तु वह टससे मस नहीं हुआ और मुझे चकमा देने तककी कोशिश करने लगा। अन्तमें मैंने पास ही रखा हुआ रूल अुठा कर अुसकी बांह पर दे मारा। मारते वक्त मैं कांप रहा था। मैं कह सकता हूं कि अुसने यह देख लिया। अुन सबके लिअे यह बिलकुल नया अनुभव था। लड़का रो पड़ा और माफी मांगने लगा। वह अिसलिअे नहीं रोया कि मारसे अुसे पीड़ा हुअी; वह चाहता तो मुझसे निबट सकता था, क्योंकि वह सत्रह वर्षका तगड़ा नौजवान था; परन्तु अुसने मेरे अिस हिंसक साधन अिस्तेमाल करनेके लिअे मजबूर होनेका दर्द महसूस कर लिया। अिस घटनाके बाद अुसने कभी मेरी अवज्ञा नहीं की। परन्तु मुझे अब तक अुस हिंसाका पछतावा होता है। मुझे अंदेशा है कि अुस दिन मैंने अुसके सामने अपनी आत्माका नहीं, अपनी पशुताका ही प्रदर्शन किया था।

शारीरिक दंडके मैं हमेशा खिलाफ रहा हूं। मुझे अेक ही अवसर याद है जब मैंने अपने अेक पुत्रको शारीरिक दंड दिया था। अिसलिअे मैं आज तक निर्णय नहीं कर पाया हूं कि रूल अिस्तेमाल करके

मैंने अुचित किया था या अनुचित। शायद अैसा करना बेजा ही था, क्योंकि अुसकी प्रेरणा क्रोध और दंड देनेकी अिच्छासे हुअी थी। अगर यह मेरे दुःखका ही प्रदर्शन होता तो मैं अुसे अुचित समझ सकता था। परन्तु अिस मामलेमें हेतु मिश्र था।

अिस घटनाने मुझे विचारमें डाल दिया और विद्यार्थियोंको सुधारनेका अेक बेहतर तरीका सिखाया। पता नहीं यह तरीका अुक्त अवसर पर काम देता या नहीं। लड़का अुस घटनाको जल्दी ही भूल गया और मैं नहीं समझता कि अुसमें कभी बड़ा सुधार दिखाअी दिया हो। परन्तु अुस घटनाने मुझे अेक शिक्षकका अपने विद्यार्थियोंके प्रति रहा कर्तव्य ज्यादा अच्छी तरह समझा दिया।

लड़कोंसे अैसे दोष अिसके बाद भी अकसर हुअे, लेकिन मैंने शारीरिक दंडका आश्रय कभी नहीं लिया। अिस प्रकार मेरी निगरानीमें रहनेवाले लड़के-लड़कियोंको आध्यात्मिक शिक्षा देनेके अपने प्रयत्नमें मैं आत्माकी शक्तिको और भी अच्छी तरह समझने लगा।

दिन-दिन मुझे अधिकाधिक स्पष्ट होता गया कि लड़के-लड़कियोंका सही ढंगसे लालन-पालन करना और अुन्हें शिक्षा देना कितना अधिक कठिन है। अगर मुझे अुनका सच्चा शिक्षक और संरक्षक बनना है, तो मुझे अुनके हृदयोंको स्पर्श करना होगा, अुनके दुःख-सुखमें शरीक होना होगा, अुनके सामने जो समस्यायें आती हैं अुन्हें हल करनेमें अुनको मदद देनी होगी और अुनकी जवानीकी अुमड़ती हुअी आकांक्षाओंको ठीक मार्ग पर ले जाना होगा।

मेरा मत यह है कि विद्यार्थियोंके दोषोंके कुछ अवसरों पर शिक्षकके लिअे अुपवासका कठोर अुपाय अपनाना जरूरी होता है। परन्तु अिसके पहले दृष्टिकी स्पष्टता और आध्यात्मिक योग्यता होनी चाहिये। जहां शिक्षक और शिष्यमें सच्चा प्रेम न हो, जहां शिष्यके दोषसे शिक्षकको आत्मिक दुःख न हुआ हो और जहां

शिष्यको गुरुके प्रति कोओी आदर न हो, वहां अुपवासके लिअे कोओी स्थान नहीं है और वह हानिकारक भी हो सकता है। अिस प्रकार यद्यपि अैसे मामलोंमें अुपवासके औचित्य पर संदेह करनेकी गुंजाअिश है, फिर भी अपने शिष्यकी भूलोंके लिअे गुरुकी जिम्मेदारीके बारेमें कोओी शंका नहीं।

आत्मकथा (१९२६); पृ० ४०७–१५, ४१८, ४१९

५

राष्ट्रीय पाठशालाओंमें

राष्ट्रीय पाठशालाअें

स्वराज्यकी दृष्टिसे राष्ट्रीय पाठशालाअें, जो स्वराज्यकी प्राप्तिके लिअे ही शुरू की गओी थीं, तभी अपना नाम सार्थक कर सकती हैं, जब शिक्षा-संस्थाओं पर लागू होनेवाले राष्ट्रीय कार्यक्रमको आगे बढ़ानेकी दृष्टिसे अुनका संचालन किया जाय। अुदाहरणके लिअे राष्ट्रीय पाठशालाअें चरखेके संदेशका प्रचार करने, हिन्दू-मुसलमान और दूसरे लोगोंको अेक-दूसरेके नजदीक लाने, ‘अछूतों’ को शिक्षा देने और पाठशालाओंसे अछूतपनका शाप मिटानेका सबसे प्रबल साधन होनी चाहिये। अिस पैमानेसे नापने पर अिस प्रयोगको बिलकुल असफल नहीं तो बहुत ही कम सफल घोषित करना होगा। ३०,००० लड़कों और लड़कियोंमें से मुश्किलसे १,००० आध घंटे रोजके हिसाबसे १०० चरखों पर कात रहे हैं। सैंकड़ों चरखे बेकार और अुपेक्षित पड़े हैं। सिद्धान्त रूपसे तो पाठशालाअें ‘अछूतों’ के लिअे खुली हैं, परन्तु वास्तवमें ‘अछूत’ बालक बहुत थोड़ी पाठशालाओंमें हैं। मुसलमानोंकी अुपस्थिति पाठशालाओंमें बहुत थोड़ी है। अिसलिअे मुझे यह सलाह देनेमें कोओी संकोच नहीं हुआ कि अब हमें संख्याके लिअे प्रयत्न न करके गुणके लिअे प्रयत्न करना चाहिये। भरतीके

लिअे परीक्षा दिनोंदिन ज्यादा कठिन होनी चाहिये। जो माता-पिता नहीं चाहते कि अुनके बालक कातना सीखें या 'अछूतों' के साथ घुलें-मिलें, वे चाहें तो अपने बच्चोंको हटा लें। मुझे यह परामर्श देनेमें हिच-किचाहट नहीं हुअी है कि शिक्षकोंको अपनी पाठशालाअें बन्द कर देनेकी जोखिम अुठा लेनी चाहिये, अगर अुन्हें चलानेकी शर्त यह हो कि 'अछूतों' और चरखेको दूर रखा जाय। अितना ही काफी नहीं है कि अछूत बालक किसी तरह आ जायें तो अुन्हें निबाह लिया जाय, परन्तु जरूरत अिस बातकी है कि अुनकी प्रेमपूर्वक देखभाल की जाय तथा अुन पर पूरा ध्यान दिया जाय, और अिस तरह अुन्हें हमारी पाठशालाओंमें आकर्षित किया जाय। शिक्षक अिस बातकी प्रतीक्षा न करें कि मुसलमान और पारसी माता-पिता अपने बच्चोंको स्वतः भेज देंगे, परंतु आवश्यकता अिस बातकी है कि अैसे माता-पिताओंको अपने बच्चे भेजनेके लिअे निमंत्रित किया जाय। अेक राष्ट्रीय शिक्षकको अपने क्षेत्रमें स्वराज्यका प्रचारक बन जाना चाहिये। अुसे अपनी निगरानीमें रहनेवाले हरअेक बच्चेका अितिहास मालूम होना चाहिये और जो बच्चे अुसकी पाठशालामें नहीं हैं अुनकी जानकारी होनी चाहिये। अुसे अुनके माता-पितासे परिचित होना चाहिये और अुन्हें समझाना चाहिये कि वे अपने बच्चोंको अुसकी पाठशालामें भेजें। यह सारा काम वह असहिष्णुतासे नहीं परंतु प्रेमसे करेगा। कांग्रेसके प्रस्तावके अनुसार राष्ट्रीय पाठशालाअें वास्तवमें राष्ट्रीय अिसी तरह होंगी।

कार्यकी कठिनता असंदिग्ध है। अिस सरकारने हर चीजको किरायेकी बना दिया है। चरित्र किसी बातकी कसौटी नहीं रह गया है। अेक छिछला पाठ्यक्रम पूरा कर डालनेकी यांत्रिक योग्यता ही अेक-मात्र कसौटी है। हरअेक पेशेको गिराकर अुसका अर्थ कमाअीका धंधा कर दिया गया है। हम वकील, डॉक्टर और शिक्षक अपने देशवासियोंकी सेवा करनेके लिअे नहीं, परन्तु रुपया पैदा करनेके लिअे

बनते हैं। अिसलिअे विद्यापीठको अैसे आत्मनाशक वातावरणमें शिक्षकोंकी भरती करनी पड़ी। शिक्षकोंमें से अधिकांशको अपने आपसे और अपने वातावरणसे अूपर अुठना पड़ा है। आश्चर्य तो यही है कि अुन्होंने देशकी पुकारका थोड़ा भी जवाब कैसे दिया।

परंतु अब लगभग चार वर्षके अनुभवके पश्चात् हमें नया अध्याय शुरू करना ही चाहिये। यह नहीं हो सकता कि हम चुपचाप अेक जगह खड़े रहें और डूबे नहीं। अिसलिअे हमें अिस बातका आग्रह करना चाहिये कि लड़के-लड़कियां कमसे कम आध घंटा चरखा ज़रूर चलायें। यह काफी बड़ी शिक्षा है कि तीस हजार लड़के-लड़कियां और आठ सौ शिक्षक रोज आध घंटा कातें अर्थात् देशके लिअे श्रम करें। यह देशप्रेमका, अुपयोगी श्रमका और दानका दैनिक व्यावहारिक पाठ है। अेक लड़केका अपने शिक्षाकालमें बदलेकी आशाके बिना दान-कार्यका श्रीगणेश करना त्यागका अैसा पदार्थपाठ है, जिसे वह अुत्तर-जीवनमें नहीं भूलेगा। और राष्ट्रके लिअे अिसका अर्थ है १,८७५ मन सूतका प्रतिमास दान। अिससे कमसे कम ५,००० मनुष्योंको अेक अेक धोती मिल जायगी। और सब विचार छोड़कर प्रत्येक शिक्षकको यह हिसाब लगाना चाहिये कि प्रत्येक बालक अिस विचारसे कितना मूल्यवान सबक सीखेगा कि वह और पांच जनोंके साथ हर महीने अितना सूत कात रहा है, जो मद्रासकी हालकी बाढ़में वस्त्रहीन बने हुअे अपने प्रत्येक देशवासीको अेक धोती मुहैया करनेके लिअे काफी है।

यंग अिंडिया, ७–८–'२४

मैं राष्ट्रीय शिक्षाका केवल स्वराज्यकी दृष्टिसे ही विचार कर सकता हूं। अिसलिअे मैं चाहूंगा कि कॉलेजके विद्यार्थी भी कताओीकी कला और अुसकी दूसरी सारी क्रियाओंमें प्रवीणता प्राप्त करने पर ध्यान लगायें। मैं चाहूंगा कि वे खद्दरके अर्थशास्त्रका और अुसके फलितार्थोंका अध्ययन करें। अुन्हें जान लेना चाहिये कि कपड़ेका

अेक कारखाना स्थापित करनेमें कितना समय लगता है और कितनी पूंजीकी जरूरत होती है। अुन्हें यह भी मालूम होना चाहिये कि मिलोंके अनिश्चित विस्तारकी संभावनाकी क्या मर्यादाअें हैं। अुन्हें अिस बातका ज्ञान भी होना चाहिये कि मिलोंके जरिये और हाथ-कताअी तथा हाथ-बुनाअीके जरिये धनके वितरणका क्या तरीका है। अुन्हें जानना चाहिये कि हाथ-कताअी और भारतीय वस्त्र-अुद्योग किस प्रकार नष्ट किये गये थे। अुन्हें समझना चाहिये और प्रमाण-पूर्वक बता सकना चाहिये कि लाखों भारतीय किसानोंकी झोंपड़ियोंमें हाथ-कताअीको अपनानेका क्या असर होगा। अुन्हें जानना चाहिये कि अिस कुटीर-अुद्योगके पूरी तरह पुनर्जीवित होनेसे हिन्दू और मुसलमानोंके फटे हुअे दिल किस तरह अेक हो जायंगे।

यंग अिंडिया, ११–१२–'२४

कताअी और विज्ञान

मेरे कहनेका यह मतलब नहीं है कि हमारी शिक्षा-संस्थाओंको निरी कताअी और बुनाअीकी संस्थाअें बन जाना चाहिये। मैं कताअी और बुनाअीको किसी भी राष्ट्रीय शिक्षा-प्रणालीका आवश्यक अंग जरूर मानता हूं। अिस कामके लिअे बालकोंका सारा समय लेनेका मेरा लक्ष्य नहीं है। अेक चतुर वैद्यकी भांति मैं रोगग्रस्त अंग पर ही अपना सारा ध्यान लगाता हूं और अुसीकी देखभाल करता हूं, क्योंकि मैं जानता हूं कि दूसरे अंगोंकी देखभालका यही अुत्तम अुपाय है। मैं बालकके हाथोंका, मस्तिष्कका और अुसकी आत्माका विकास करूंगा। हाथ हमारे लगभग अशक्त हो गये हैं। आत्माकी सर्वथा अुपेक्षा की गअी है। अिसलिअे मैं हमारे यहांकी शिक्षाके अिन गंभीर दोषोंको ठीक करनेके लिअे मौके-बेमौके वकालत करता रहता हूं। क्या रोज आध घंटेकी कताअीका हमारे बच्चों पर बहुत अधिक बोझा पड़ेगा? क्या अिसका परिणाम दिमागी लकवा होगा?

मैं विभिन्न विज्ञानोंकी शिक्षाकी कीमत करता हूं। हमारे बालक रसायनशास्त्र और भौतिक विज्ञान जितना भी सीखें अुतना ही थोड़ा है। और जिन संस्थाओंमें मेरी सीधी दिलचस्पी मानी जाती है, अुनमें अिन चीजों पर यदि ध्यान नहीं दिया गया है तो अुसका कारण यह है कि अिस कामके लिअे हमारे पास अध्यापक नहीं हैं, और यह भी कारण है कि अिन विज्ञानोंकी व्यावहारिक शिक्षाके लिअे बड़ी खर्चीली प्रयोगशालाओंकी जरूरत होती है, जिनके लिअे अनिश्चितता और शुरुआतकी मौजूदा स्थितिमें हम तैयार नहीं हैं।

यंग अिंडिया, १२–३–'२५

पाठशालाओंमें कताअी

अगर कताअीको अेक अनिवार्य अुद्योगके रूपमें फिरसे जिन्दा करना है, तो अुस पर गंभीरतासे ध्यान देना पड़ेगा और सुव्यवस्थित पाठशालाओंमें दूसरे विषयोंकी तरह ठीक और वैज्ञानिक ढंगसे अुसे सिखाना पड़ेगा। फिर तो चरखे पूरी तरह अच्छी हालतमें रखे जायंगे, और अिस पत्रमें समय समय पर अच्छे चरखेकी जो कसौटियां बताअी गअी हैं, अुन पर वे खरे अुतर सकेंगे। और विद्यार्थियोंके कामकी रोज नियमपूर्वक वैसी ही जांच की जायगी, जैसी दूसरे विषयोंमें दिये हुअे सबककी की जाती है या की जानी चाहिये।

जहां चरखे पर कातना अिसलिअे सिखाया जाता है कि लड़के-लड़कियां चाहें तो अपने अपने घरोंमें चरखेका अुपयोग कर सकें, वहां वर्ग-कताअीके लिअे तकली ही सबसे सस्ता और लाभदायक औजार है।

यंग अिंडिया, १५–१०–'२५

राष्ट्रीय बनाम सरकारी शिक्षा

हमारे विद्यार्थियोंमें से अेक बारडोलीमें जेल गया है। और भी बहुतसे जायंगे। अुन पर विद्यापीठको गर्व है। सरकारी संस्थाओंके

विद्यार्थी यदि अैसा करना भी चाहें तो क्या अुनमें अिसकी हिम्मत है? तुम्हारी तरह अुनको यह छूट नहीं है कि बारडोली जाकर वल्लभभाअीकी मदद कर सकें। वे गुप्त सहानुभूति ही रख सकते हैं। वह शिक्षा किस कामकी जो राष्ट्रीय जीवनके अेक नाजुक मौके पर हमें कुंठित कर दे और अपना कर्तव्य करनेसे रोक रखे? ज्ञान और साहित्यिक शिक्षा सत्त्वहीनताकी क्षति-पूर्ति नहीं कर सकती।

और फिर हमारे और अुनके शिक्षाके तरीकेमें जमीन-आसमानका फर्क है। अुदाहरणार्थ, जिस ढंगसे वे अंग्रेजी सिखाते हैं अुससे हम नहीं सिखायेंगे। हम अुस भाषाका कामचलाअू ज्ञान दे सकते हैं, परंतु हम मातृभाषाकी अुपेक्षा नहीं कर सकते। मातृभाषाकी अुपेक्षा करना और अंग्रेजीको अपने विचारोंका वाहन बनानेका अर्थ राष्ट्रीय आत्महत्या करना होगा। अिस राष्ट्रीय संस्थामें हम अिस खतरनाक रिवाजको दुरुस्त करनेकी कोशिश करते हैं। हमें अपने सारे विषय गुजराती भाषाके द्वारा ही सीखने चाहिये। हमें अुसे संपन्न और सब प्रकारके विचारों और भावनाओंको प्रकट करनेके योग्य बनाना चाहिये।

दूसरा अुदाहरण अर्थशास्त्रकी शिक्षाका लें। अर्थशास्त्रके शिक्षणकी सरकारी संस्थाओंमें प्रचलित वर्तमान पद्धति खराब है। हरअेक देशका अपना अर्थशास्त्र होता है। जर्मन पाठ्यपुस्तकें अंग्रेजी पाठ्यपुस्तकोंसे भिन्न हैं। मुक्त व्यापारमें अिंग्लैण्डकी मुक्ति होगी। लेकिन हमारा अुसमें नाश है। हमें अभी भारतीय अर्थशास्त्रकी प्रणालीका निर्माण करना है।

यही बात अितिहासकी है। अेक फ्रांसीसी भारतका अितिहास लिखेगा तो अपने ही ढंगसे लिखेगा। अंग्रेज बिलकुल दूसरी तरहसे लिखेगा। अंग्रेजों और फ्रांसीसियोंमें जो युद्ध हुअे, अुनके वर्णन लेखकोंके अनुसार अलग अलग होंगे। अंग्रेज लेखक अुनका वर्णन अेक तरहसे करेगा, फ्रांसीसी लेखक दूसरी तरहसे। मौलिक साधनोंके आधार पर अेक भारतीय देशभक्तका लिखा हुआ भारतीय अितिहास अुस
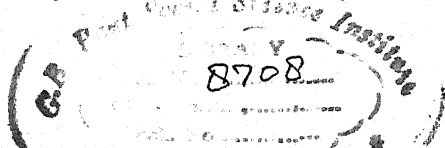
अितिहाससे भिन्न होगा जो अेक अंग्रेज हाकिमने लिखा होगा, यद्यपि दोनों सर्वथा प्रामाणिक हो सकते हैं। हमने अपने राष्ट्रीय जीवनकी घटनाओंके अंग्रेजी मूल्यांकनोंको स्वीकार करके सख्त गलती की है। तुम्हारे और तुम्हारे शिक्षकोंके लिअे मौलिक अनुसंधानका यह अेक विशाल क्षेत्र है।

हमारा अंकगणित जैसे विषयका शिक्षण भी दूसरी ही तरहका होगा। अंकगणितका हमारा शिक्षक अपने अुदाहरण भारतीय परि-स्थितियों परसे बनायेगा। अिस प्रकार अंकगणितके साथ ही साथ वह भारतीय भूगोल भी सिखायेगा।

साथ ही हम हाथकी और अुद्योगकी तालीम पर खास जोर दे रहे हैं। अैसा सोचनेकी भूल न करना कि अिस तालीमसे तुम्हारी बुद्धि मन्द हो जायगी। हमारी समझका विकास अपने मस्तिष्कको अैसा भंडार बनानेसे नहीं होता, जिसमें तथ्योंको ठूंस ठूंसकर भरा जाय। औद्योगिक तालीमको समझकर अपनानेसे अकसर साहित्यके अूपरी अध्ययनकी अपेक्षा बुद्धिको अधिक मूल्यवान सहायता मिलती है।

यंग अिंडिया, २१–६–'२८

तीसरा विभाग : नअी तालीम

६

नअी तालीमकी जड़ लोगोंकी संस्कृति और जीवनमें हो

राष्ट्रीय शिक्षा

जिस पाठचक्रमसे और शिक्षा-संबंधी जिन विचारोंसे वर्तमान शिक्षाका ढांचा बना है, वे ऑक्सफोर्ड और केम्ब्रिज, अेडिनबरा और लन्दनसे लाये गये थे। परंतु वे मूलत: विदेशी हैं और जब तक अुनका त्याग न किया जाय, राष्ट्रीय शिक्षा असंभव है। फिलहाल हमें अिस समस्याकी चर्चा नहीं करनी है कि यूरोपीय शिक्षाके बिना भारतका काम चल सकता है या नहीं; (और अिस संबंधमें हम यह कहेंगे कि हम अंग्रेजी प्रणालीको यूरोपकी प्रणालीका सिर्फ विशेष संस्करण मानते हैं) । यूरोपसे लड़नेकी जरूरत तो है ही। अिस आवश्यकताके प्रकाशमें भारत यदि यूरोपसे अुसीके हथियारों अर्थात् अुद्योगवाद, पूंजीवाद, सैनिकवाद आदिके जरिये लड़नेका और अपने बच्चोंको नकली यूरोपीय, सैनिक, विस्फोटक पदार्थोंके आविष्कारकर्ता, विज्ञानका दुरुपयोग करनेवाले और अीश्वरको भुला देनेवाले बनानेके पक्षमें निर्णय करता है, तो कुछ भी आपत्ति आये, अुसे अपने मार्ग पर गंभीर होकर और आंखें खोलकर आगे बढ़ना होगा। परंतु अुस सूरतमें अुसे राष्ट्रीय शिक्षाके बिना काम चलानेका निश्चय कर लेना चाहिये, क्योंकि राष्ट्रीय शिक्षासे वे अुद्देश पूरे नहीं होंगे और अुसकी सन्तान वे काम करनेके लायक नहीं बनेगी। समझ लेनेकी बात यह है कि अपनी दीर्घ कालसे स्थापित और विकसित सभ्यताके कारण अेक समय था जब भारतवर्षकी अपनी निजी

शिक्षा-प्रणाली थी और अुसीको 'राष्ट्रीय' शिक्षा-प्रणाली कहा जा सकता है। परन्तु वह अेंग्लो-अिंडियन ढंगकी शिक्षा और अुससे अुत्पन्न झूठी राष्ट्रीय शिक्षासे मौलिक रूपमें भिन्न थी। तो प्रश्न अब यह है: राष्ट्रीय और विदेशी शिक्षाके बीच साफ और आखिरी तौर पर चुनाव हो जाना चाहिये। अुसका प्रकार और आधार क्या हो, क्या अुसका हेतु हो, क्या लक्ष्य और क्या साधन हो, अिसका निर्णय हो जाना चाहिये। अभी तक यह निर्णय नहीं हुआ है। हमें तो विश्वास है कि लोगोंको चुनावकी आवश्यकता ही महसूस नहीं हुअी है। जब तक अिस मामलेमें गड़बड़ चलती रहेगी, 'राष्ट्रीय' शिक्षा पनप नहीं सकती। और अुसका कारण सीधा है। सरकार अेक खास ढंगकी शिक्षा पहलेसे ही दे रही है और किसी भी खालिस गैर-सरकारी संस्थाके लिअे अुस ढंगकी शिक्षामें अुससे स्पर्धा करना असंभव है। सरकारी संगठन अधिक बड़ा है, अुसके पास ज्यादा रुपया है और वह अधिक पुरस्कार दे सकता है। हमारा विश्वास है कि यह मूल समस्या अुस वक्त तक बनी रहेगी, जब तक बुनियादी बातोंके बारेमें प्रबल और स्पष्ट विचार नहीं किया जाता। यदि विचारपूर्ण निश्चयोंके फलस्वरूप हम जनताको यह वचन दे सकें कि हम जो शिक्षा देंगे वह वास्तवमें भारतीय होगी और सरकारी स्कूल-कॉलेजोंमें दी जाने-वाली शिक्षाकी सिर्फ घटिया नकल नहीं होगी, तो लोग हमारी बात अवश्य सुनेंगे। हम मानते हैं कि जो लोग वर्तमान व्यवस्थाके परिणामसे कष्ट भुगत रहे हैं, जिन्हें अुसके कारण समाजमें हो रही टूट-फूटका दुःख है और जो युवकोंकी बरबादी पर खिन्न हैं, वे अिन सबसे बचनेका मार्ग पाकर आभारी होंगे। जो संस्थाअें राष्ट्रीय और सामाजिक परंपराओंकी पुनःस्थापनाके लिअे अनिवार्य क्रान्तिकी प्रतीक होंगी, भविष्यका रहस्य अुन्हींके हाथोंमें रहेगा।

क्योंकि, याद रखनेकी बात यह है। वर्तमान शिक्षा-प्रणालीकी सबसे बड़ी प्रत्यक्ष बुराअी, जो स्वयं अधिक गहरे दोषोंका प्रमाण है,

यह है कि अुसने हमारी जीवनकी अविच्छिन्नताको भंग कर दिया है। सब तरहकी सही शिक्षाका अुद्देश्य यह होना चाहिये कि वह मौजूदा पीढ़ीको पिछली पीढ़ीका भार अुठा लेने और समाजके जीवनको टूट-फूट या विनाशसे बचाकर कायम रखनेके लायक बनाये। सामाजिक जीवनका भार लगातार चलता रहता है और अगर किसी मंजिल पर कोअी पीढ़ी अपनी पिछली पीढ़ीके प्रयत्नोंके साथ सर्वथा सम्पर्क खो देती है या किसी तरह अपने पर या अपनी सभ्यता पर लज्जित होने लगती है तो वह नष्ट हो जाती है। समाजको जो बल बांधकर रखता है, वह है अूंचे दर्जेके कर्तव्यों और वफादारियोंकी अेक शृंखला। अिसमें आन्तरिक विश्वास, धंधा, मां-बाप, परिवार और धर्मके प्रति वफादारी शामिल है। भारतकी प्राचीन शिक्षा-प्रणाली बेशक स्वाभिमान और सेवाकी लंबी परम्पराकी, सामाजिक तथा राजनीतिक जीवनमें प्रत्येक वर्ग या वर्णके स्थानकी रक्षा करती थी। यह भी अुतना ही निश्चित है कि आधुनिक, विदेशी, अराष्ट्रीय शिक्षा नौजवानोंको जीवनमें किसी भी अुपयोगी कामके लिअे अयोग्य बना देती है। जो लोग अपने बच्चोंको अंग्रेजी पाठशालाओंमें भेजते हैं अुनमें से अधिकांश किसान हैं, जो अीश्वरमें गहरी और चिर-स्थायी श्रद्धा रखते हैं। अिसमें शक नहीं कि ये लड़के जब लौट कर आते हैं तो अुन्हें खेतीका कुछ भी ज्ञान नहीं होता, अुन्हें अपने पैतृक धंधेके प्रति सचमुच गहरा तिरस्कार होता है और अीश्वर तथा अुसकी दयामें अुनका कोअी विश्वास नहीं रह जाता। अिस विनाशक परम्परा-भंगकी दुःखद घटनामें सरकारी जरूरतके लिअे कारकूनों और सहायकोंकी अेक निश्चित संख्या मात्रकी मर्यादा जरूर रही है, मगर अिससे असलमें अिस सौदेके असली रूप पर पर्दा नहीं पड़ जाना चाहिये। शिक्षा-प्रणालीमें सुधारोंके बाद सुधार हुअे हैं। आयोगोंने विश्वविद्यालयोंके मामले पर विचार किया है, प्रारंभिक शिक्षाको अनिवार्य बनानेके प्रयत्न किये गये हैं। परन्तु अिस सचाअीको

कहीं भी समझनेकी कोशिश नहीं हुअी है कि सारी वस्तु ही बुरी है, क्योंकि वह सारे राष्ट्रीय जीवन और विकासकी जड़ोंको ही नष्ट कर रही है। यह प्रणाली अुठा ही दी जानी चाहिये; और फौरन जांच होनी चाहिये कि भारतीय विश्वविद्यालयोंके बननेसे पहले, शिक्षाके सम्बन्धमें लॉर्ड मैकालेकी घातक सम्मति लिखी जानेसे पहले भारतमें शिक्षाका स्वरूप क्या था। यह काम तुरन्त होना चाहिये, क्योंकि पुराने शिक्षकोंकी पीढ़ी लगभग लुप्त हो गअी है और अुनके तरीकोंका रहस्य अुनके साथ चला जा सकता है। अुन पाठ्यक्रमोंके पुनर्जीवित होनेका परिणाम यह हो सकता है कि राजनीतिक अितिहास और भूगोल लुप्त हो जायं, परन्तु अिस संभावनासे हमें जरा भी डर महसूस नहीं होता। कमसे कम देशके अेक भागमें हमने पुराने पाठ्यक्रमोंके मूल तत्त्वको खोजनेका प्रयत्न किया है और हम पूरी अीमानदारी और दावेके साथ कह सकते हैं कि यूरोपसे आनेवाली ताजीसे ताजी चीजसे भी वे हमें कहीं अधिक सक्षम तथा संतोषजनक प्रतीत होते हैं। परन्तु हम स्वीकार करते हैं कि यह अेक साधारण आदमीकी राय है। अिसलिअे हम पसन्द करेंगे कि अिस मामलेकी विशेषज्ञोंसे जांच करा ली जाय। यदि अिस तरहकी जांच हो और अुसके नतीजों पर विचार किया जाय तथा अुन्हें कार्यान्वित किया जाय, तो हमें विश्वास है कि देशवासियोंको अुससे बहुत लाभ होगा और वे अिस कदमकी प्रशंसा करेंगे।

यंग अिंडिया, २०–३–'२४

लगभग शुरूसे ही आजकलकी पाठ्यपुस्तकोंमें अुन चीजोंकी चर्चा नहीं होती जिनसे लड़के-लड़कियोंका अपने घरोंमें काम पड़ता है, परन्तु अुन वस्तुओंकी होती है जिन्हें वे बिलकुल नहीं जानते। कोअी लड़का पाठ्यपुस्तकोंसे यह नहीं सीखता कि घरू जीवनमें क्या ठीक है और क्या बेजा है। अुसे अैसी शिक्षा कभी नहीं दी जाती कि जिससे अुसके मनमें अपने पड़ोसियोंके विषयमें अभिमान जाग्रत हो। वह जितना आगे पढ़ता जाता है, अुतना ही अपने घरसे

दूर होता जाता है——यहां तक कि अपनी शिक्षाके अंतमें अपनी आसपासकी परिस्थितियोंसे अुसका चित्त हट जाता है। अुसे गृह-जीवनमें कोअी कवित्व अनुभव नहीं होता। ग्रामीण दृश्योंमें अुसे कोअी आकर्षण नहीं होता। अुसकी अपनी सभ्यता अुसे निःसत्त्व, जंगली, वहमी और लगभग निकम्मी बताअी जाती है। अुसकी शिक्षा अुसे अपनी परम्परागत संस्कृतिसे दूर हटानेके लिअे दी जाती है और यदि सारेके सारे शिक्षित युवक राष्ट्रीयतासे सर्वथा हीन नहीं हो जाते, तो अुसका कारण यह है कि प्राचीन संस्कृति अुनमें अितनी गहरी पैठी हुअी है कि अुसके विकासकी दुश्मन शिक्षासे भी अुसकी जड़ें पूरी तरह नहीं अुखड़ पातीं। अगर मेरा बस चले तो मैं अवश्य ही अधिकांश वर्तमान पाठ्यपुस्तकोंको नष्ट कर दूं और अैसी पाठ्यपुस्तकें लिखवाअूं जिनका गृहजीवनसे संबंध और मेल हो, ताकि जैसे-जैसे लड़का सीखता जाय वैसे-वैसे वह आसपासके जीवनसे हिलता-मिलता जाय और अुसमें सक्रिय हिस्सा लेने लगे।

यंग अिंडिया, १–९–’२१

परिस्थितियोंसे कोअी संबंध नहीं

दुर्भाग्यवश अिस शिक्षा-प्रणालीका हमारे आसपासकी परिस्थितियोंसे कोअी संबंध नहीं होता और अिसलिअे राष्ट्रके बिलकुल थोड़ेसे लड़के-लड़कियोंको मिलनेवाली अिस शिक्षासे वे लगभग अछूती रहती हैं।

हरिजन, २३–५–’३६

अुनके हेतु अुत्तम होते तो भी अंग्रेज शिक्षक अंग्रेजी और भारतीय आवश्यकताओंका अन्तर पूरी तरह नहीं समझ सकते थे। हमारी आबहवामें अुन अिमारतोंकी जरूरत नहीं है जिनकी अुन्हें होती है। हमारे बच्चोंका लालन-पालन मुख्यतः ग्रामीण वातावरणमें होता है, अिसलिअे अुन्हें अुस ढंगकी शिक्षाकी जरूरत नहीं है, जिसकी मुख्यतः शहरी वातावरणमें पले हुअे अंग्रेज बच्चोंको होती है।

जब हमारे बालक पाठशालाओंमें भरती होते हैं, तो अुन्हें पट्टी, पेन्सिल और पुस्तकोंकी नहीं, परन्तु देहातके अुन सीधे-सादे औजारोंकी जरूरत होती है, जिनका वे आजादीसे अुपयोग कर सकें और जिनके जरिये वे कुछ कमा भी सकें। अिसका मतलब शिक्षाके तरीकोंमें क्रान्ति है। परन्तु क्रान्तिसे कम कोअी चीज शिक्षाको पाठशाला जानेकी अुम्रवाले प्रत्येक बालकके लिअे अुपलब्ध नहीं कर सकती।

यह स्वीकार किया जाता है कि लिखने-पढ़ने और अंकगणितका जो कथित ज्ञान अिस समय सरकारी पाठशालाओंमें दिया जाता है, वह अुत्तर-जीवनमें लड़के-लड़कियोंके बहुत कम काम आता है। काम न पड़नेसे ही सही, अुसका अधिकांश तो साल भरके भीतर ही भुला दिया जाता है।

परन्तु यदि बच्चोंको अुनके आसपासकी परिस्थितियोंके अनुकूल कोअी औद्योगिक शिक्षा ही दी जाय, तो वे न केवल पाठशालाओंमें हुअे खर्चको पूरा कर देंगे, बल्कि अुत्तर-जीवनमें भी अुस तालीमसे लाभ अुठायेंगे। मैं कल्पना कर सकता हूं कि किसी स्कूलको कताअी-बुनाअीकी संस्था बना दिया जाय और अुसके साथ कपासका खेत जोड़ दिया जाय तो वह बिलकुल स्वावलंबी हो सकता है।

मैं जिस योजनाका प्रतिपादन कर रहा हूं, अुसमें साहित्यिक शिक्षाका बहिष्कार नहीं है। प्राथमिक शिक्षाका कोअी पाठ्यक्रम, जिसमें पढ़ना-लिखना और अंकगणित शामिल न हो पूरा नहीं समझा जा सकता। अितना ही है कि लिखना और पढ़ना आखिरी सालमें शुरू होगा। क्योंकि असलमें लड़का या लड़की वर्णमाला सही सही सीखनेके लिअे अुसी समय तैयार होती है। हस्तलेखन अेक कला है। जैसे कलाकार अपने चित्र खींचता है, वैसे ही प्रत्येक अक्षर ठीक ठीक बनाया जाना चाहिये। यह तभी हो सकता है जब लड़कों और लड़कियोंको पहले आरम्भिक चित्रकारी सिखाअी जाय। अिस प्रकार औद्योगिक शिक्षाके साथ साथ, जिसमें अुनका पाठशालाका अधिकांश

दिन लग जायगा, वे प्रारंभिक अितिहास, भूगोल और अंकगणितकी मौखिक शिक्षा भी प्राप्त करते रहेंगे। वे शिष्टाचार सीखेंगे और व्यावहारिक स्वच्छता और स्वास्थ्य-विज्ञानके पदार्थपाठ ग्रहण करेंगे; और ये सब बातें वे अपने घर ले जायंगे जहां वे शान्त क्रान्तिकारी बन जायंगे।

यंग अिंडिया, ११–७–'२९

७

चरित्रका विकास

हृदयकी शिक्षा

दो शब्द हृदयकी शिक्षाके बारेमें। मैं नहीं मानता कि वह पुस्तकोंके द्वारा दी जा सकती है। यह काम शिक्षकके सजीव संपर्कके द्वारा ही किया जा सकता है। तब यह सवाल अुठता है कि प्रारंभिक तथा माध्यमिक पाठशालाओंमें जो शिक्षक हैं, वे कैसे हैं? क्या वे श्रद्धावान और चरित्रवान स्त्री-पुरुष हैं? क्या अुन्होंने खुद हृदयकी तालीम हासिल की है? क्या अुनसे यह भी आशा रखी जाती है कि वे अपने संरक्षणमें रखे गये लड़कों और लड़कियोंके स्थायी तत्त्वकी — अुनके नैतिक विकासकी देखभाल कर लेंगे? क्या नीचेकी पाठशालाओंके लिअे शिक्षकोंकी नियुक्तिका तरीका चरित्र-विकासके लिअे पूरी रुकावट नहीं है? क्या शिक्षकोंको जीवन-वेतन भी मिलता है? हमें मालूम है कि प्रारंभिक पाठशालाओंके शिक्षक अपने देश-प्रेमके कारण नहीं चुने जाते हैं। अिस काममें वे ही लोग आते हैं जिन्हें और कोअी नौकरी नहीं मिलती।

यंग अिंडिया, १–९–'२१

स्वतन्त्रता परंतु अनुशासनके अधीन

विद्यार्थियोंमें स्वतंत्र बुद्धि होनी चाहिये; अुन्हें निरे नकलची नहीं होना चाहिये। अुन्हें अपने आप सोचना और करना तो सीखना ही चाहिये और फिर भी पूरे आज्ञाकारी और अनुशासनबद्ध रहना चाहिये। सर्वोच्च ढंगकी स्वतंत्रताके साथ अधिकसे अधिक अनुशासन और नम्रता लगी हुअी है। जो आजादी अनुशासन और नम्रतासे आती है अुसे छीना नहीं जा सकता। अनियंत्रित स्वच्छन्दता अुच्छृंखलताकी निशानी है और अुससे अपनी और अपने पड़ोसियों, दोनोंकी हानि होती है।

यंग अिंडिया, ३–६–'२६

हृदयकी शुद्धि अनिवार्य है

सही ढंगकी शिक्षाका निर्माण करनेके लिअे व्यक्तिगत जीवनकी पवित्रता अेक अनिवार्य शर्त है। हजारों विद्यार्थियोंसे मेरी जो मुलाकातें होती हैं और विद्यार्थियोंके साथ मेरा जो सतत पत्र-व्यवहार होता है — जिसमें वे मुझ पर विश्वास करके अपनी अत्यन्त भीतरी भावना भी बेखटके कह डालते हैं — अुनसे मुझे बिलकुल स्पष्ट मालूम होता है कि अिस दिशामें बहुत सुधारकी आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि तुम सब अच्छी तरह समझते हो कि मेरा क्या आशय है। हमारी भाषाओंमें विद्यार्थी शब्दका पर्यायवाची अेक सुन्दर शब्द है; वह है 'ब्रह्मचारी'। विद्यार्थी शब्द गढ़ा हुआ है और ब्रह्मचारीका घटिया पर्याय है। मुझे आशा है कि तुम्हें ब्रह्मचारी शब्दका अर्थ मालूम है। अिसका मतलब अीश्वरकी खोज करनेवाला, अिस तरहका आचरण करनेवाला मनुष्य है, जिससे वह कमसे कम समयमें अीश्वरके नजदीक पहुंच जाय। संसारके तमाम बड़े बड़े धर्म आपसमें कितने ही मतभेद रखते हों, फिर भी अेक बुनियादी बात पर वे बिलकुल सहमत हैं कि अशुद्ध हृदयकी कोअी भी स्त्री या पुरुष भगवानके सम्मुख नहीं पहुंच

सकता। हमारा वेदोंका सारा ज्ञान या पाठ, संस्कृत, लैटिन, ग्रीक और दुनियाभरकी दूसरी चीजोंका सही ज्ञान कुछ भी काम नहीं आयेगा, अगर वह हमें हृदयकी पूर्ण शुद्धता प्राप्त न कराये। सब प्रकारके ज्ञानका लक्ष्य चरित्रका निर्माण होना चाहिये।

यंग अिंडिया, ८–९–'२७

सेवा — शिक्षाका अेक आवश्यक अंग

सर अेम० विश्वेश्वरैयाने हमारी वर्तमान शिक्षाके अेक गंभीर दोषकी ओर हमारा ध्यान खींचा है; वह केवल लिखने-पढ़नेकी योग्यताको ही महत्त्व देती है। मैं अुससे भी ज्यादा गंभीर अेक दूसरा दोष बताअूंगा; वह यह है कि विद्यार्थियोंको यह समझाया जाता है कि जिस समय वे अपना साहित्यिक अध्ययन कर रहे हैं, अुस समय अपनी पढ़ाअीको नुकसान पहुंचाकर सेवाके छोटेसे छोटे या अस्थायी काम भी न करें। जिस प्रकारका कष्ट-निवारण कार्य कुछ विद्यार्थियोंके द्वारा गुजरातमें किया जा रहा है, वैसा काम करनेके लिअे अगर वे अपनी साहित्यिक या औद्योगिक शिक्षाको स्थगित कर दें, तो अुनकी कुछ भी हानि नहीं होगी और बहुत लाभ होगा। अवश्य ही सब प्रकारकी शिक्षाका लक्ष्य सेवा होना चाहिये और अगर किसी विद्यार्थीको पढ़ाअी करते हुअे भी सेवा करनेका मौका मिलता है, तो अिस मौकेका अुसे अलभ्य अवसरके रूपमें स्वागत करना चाहिये। अुस विद्यार्थीको समझना चाहिये कि अिससे अुसकी शिक्षा स्थगित नहीं होती, बल्कि अधिक सम्पूर्ण बनती है।

यंग अिंडिया, १३–१०–'२७

प्राणीमात्रकी अेकता

सच्ची शिक्षा अिस बातमें है कि आपके अुत्तम गुण बाहर आयें। मानवताकी पुस्तकसे अच्छी कौनसी पुस्तक हो सकती है? रोज-रोज हरिजन मोहल्लोंमें जाने और हरिजनोंको अेक मानव-परिवारके

सदस्य माननेंसे बेहतर तालीम और क्या हो सकती है? वह अेक अूंचा अुठानेवाली, अुदात्त बनानेवाली पढ़ाअी होगी। मेरा धर्म संकीर्ण नहीं है। वह मनुष्यके बुनियादी भ्रातृभावको अुपलब्ध करनेका मार्ग है।

हरिजन, ३०–३–'३४

मैडम मॉन्टेसरीसे

जिस तरह आप बच्चोंके प्रेमसे प्रेरित होकर अपनी अनेक संस्थाओं द्वारा बालकोंको अुनके अुत्तम गुण बाहर लाकर शिक्षा देनेका प्रयत्न कर रही हैं, अुसी तरह मुझे आशा है कि अिस प्रकारकी शिक्षा पाना न केवल धनिकों और सम्पन्न लोगोंके बच्चोंके लिअे ही बल्कि गरीबोंके बालकोंके लिअे भी संभव होगा। आपने बहुत ठीक कहा है कि अगर हमें अिस संसारमें सच्ची शान्ति प्राप्त करना है और युद्धके विरुद्ध सच्ची लड़ाअी लड़नी है, तो हमें बच्चोंसे शुरुआत करनी होगी; और अगर वे अपनी स्वाभाविक निर्दोषता कायम रखकर विकास करेंगे तो हमें कशमकश नहीं करनी पड़ेगी, व्यर्थके प्रस्ताव पास नहीं करने होंगे, बल्कि हम प्रेम और शांतिके मार्ग पर दिन-दिन आगे बढ़ेंगे और अन्तमें संसारके कोने कोनेमें वह अमन और प्रेम छा जायगा, जिसके लिअे जाने या अनजाने सारी दुनिया तड़प रही है।

यंग अिंडिया, १९–११–'३१

८

केवल पुस्तकीय शिक्षा नहीं

विद्यार्थी विवेक सीखें

विद्यार्थियोंको यह विवेक करना आना चाहिये कि क्या चीज ग्रहण की जाय और क्या न की जाय। शिक्षकका धर्म है कि अपने विद्यार्थियोंको विवेक सिखलाये। अगर हम विवेकके बिना जो सिखाया जाय वही लेते चले जायं, तो हमारी हालत मशीनोंसे बेहतर नहीं होगी। हम विचार करनेवाले, ज्ञान रखनेवाले प्राणी हैं और अिस कालमें हमें सत्य और असत्यका, मधुर और कटु भाषणका, शुद्ध और अशुद्ध वस्तुओंका और अिसी प्रकार दूसरी चीजोंका फर्क मालूम होना चाहिये। परन्तु आजकल विद्यार्थियोंके रास्तेमें भलाअी-बुराअीका विवेक करनेकी अपेक्षा और भी अधिक कठिनाअियां बिखरी हुअी हैं। अृषि-मुनि अपने शिष्योंको पुस्तकोंके बिना पढ़ाते थे । वे अुन्हें थोड़ेसे मंत्र दे देते थे, जिन्हें विद्यार्थी अपनी स्मृतिमें संचित कर लेते थे और व्यावहारिक जीवनमें अुन पर अमल करते थे। आजकलके विद्यार्थियोंको किताबोंके अैसे ढेरमें गड़ा रहना पड़ता है, जो अुनका दम घोटनेको काफी है।

यंग अिंडिया, २९–१–'२५

पाठ्यपुस्तकें

बहुतसी पाठ्यपुस्तकें होनेका भारतके लिअे यह परिणाम होगा कि अधिकांश देहाती बच्चे शिक्षाके साधनसे वंचित रहेंगे। अिसलिअे भारतवर्षमें पाठ्यपुस्तकें मुख्यतः छोटी कक्षाओंमें विद्यार्थियोंके लिअे न होकर शिक्षकोंके लिअे होनी चाहिये। मेरा विश्वास है कि बच्चोंके लिअे ज्यादातर प्रारंभिक शिक्षा जबानी दी जाना बेहतर

है। छोटी अुम्रके बालकों पर साधारण ज्ञान प्राप्त कर सकनेसे पहले वर्णमालाका ज्ञान और पढ़नेकी क्षमता थोपना अुन्हें अैसे समय, जब कि अुनका मन ताजा होता है, मौखिक शिक्षाको हजम करनेकी शक्तिसे वंचित करना है। अुदाहरणके लिअे, क्या सात सालके अेक लड़केको रामायण सीखनेके लिअे अुस समय तक प्रतीक्षा करना चाहिये जब तक कि वह अुसे पढ़ न सके? जब हम भारतके शहरोंमें रहनेवाले कुछ लाख लोगोंकी बात सोचते हैं, तब जो परिणाम निकलते हैं वे अुन परिणामोंसे बिलकुल भिन्न हैं, जो ग्रामीण भारतके करोड़ों मनुष्योंकी दृष्टिसे विचार करने पर हमें प्राप्त होते हैं।

यंग अिंडिया, १६–९–'२६

शिक्षक और पाठ्यपुस्तकें

अिसमें कोअी संदेह नहीं है कि आम-स्कूलोंमें जो पुस्तकें खास तौर पर बच्चोंके लिअे अिस्तेमाल की जाती हैं, वे जब हानिकारक नहीं होती हैं तो अधिकांशमें निकम्मी अवश्य होती हैं। अिससे अिनकार नहीं किया जा सकता कि अुनमें से बहुतसी होशियारीके साथ लिखी जाती हैं। जिन लोगों और जिन परिस्थितियोंके लिअे वे लिखी जाती हैं, अुनके लिअे वे सबसे अच्छी भी हो सकती हैं। परंतु वे भारतीय लड़कों और लड़कियोंके लिअे और भारतीय परिस्थितियोंके लिअे नहीं लिखी जातीं। जब वे अिस तरह लिखी जाती हैं तो वे आम तौर पर अधकचरी नकल होती हैं और अुनसे विद्यार्थियोंकी आवश्यकता पूरी नहीं होती। अिस देशमें आवश्यकताअें बच्चोंके प्रान्तों और वर्गोंके अनुसार भिन्न भिन्न हैं। मिसालके लिअे, हरिजन बालकोंकी आवश्यकताअें कमसे कम आरंभिक अवस्थामें अन्य बालकोंसे भिन्न होती हैं।

अिसलिअे मैं अिस नतीजे पर पहुंचा हूं कि पुस्तकोंकी आवश्यकता विद्यार्थियोंकी अपेक्षा शिक्षकोंके लिअे अधिक है। और

प्रत्येक शिक्षकको, यदि अपने विद्यार्थियोंके प्रति वह पूरा न्याय करना चाहता है, अुपलब्ध सामग्रीसे अपना दैनिक पाठ खुद तैयार करना होगा। अिसे भी अुसे अपनी कक्षाकी विशेष आवश्यकताओंके अनुकूल बनाना होगा।

सच्ची शिक्षाका काम शिक्षा पानेवाले लड़कों और लड़कियोंके अुत्तम गुण बाहर लाना है। यह काम विद्यार्थियोंके दिमागमें अनाप-शनाप और अनचाही जानकारी ठूंस देनेसे कभी नहीं हो सकता। अिस तरहकी जानकारी अेक जड़ बोझ बन जाती है, जो अुनकी सारी मौलिकताको कुचल डालती है और अुन्हें निरी मशीनें बना देती है। अगर हम खुद अिस प्रणालीके शिकार न होते, तो हम बहुत पहले ही अनुभव कर लेते कि सामूहिक शिक्षा देनेके मौजूदा तरीकेने, खासकर भारतमें, कितनी हानि की है।

बेशक, कअी संस्थाओंने कम या ज्यादा सफलताके साथ अपनी पाठ्यपुस्तकें खुद तैयार करनेके प्रयत्न किये हैं। परन्तु मेरी रायमें अुनसे देशकी प्राणभूत आवश्यकताओंकी पूर्ति नहीं होती।

मैंने यहां जिन विचारोंका प्रतिपादन किया है, अुनकी मौलिकताका मेरा कोअी दावा नहीं है। अुन्हें यहां पर हरिजन पाठशालाओंके व्यवस्थापकों और शिक्षकोंके लाभके लिअे दोहराया गया है, क्योंकि अुनके सामने जबरदस्त काम है। अिस तरहके महज यांत्रिक कामसे वे संतुष्ट नहीं हो सकते, जिसमें कि अुनकी देखभालमें पढ़नेवाले बच्चे मनमाने तौर पर चुनी हुअी पुस्तकोंको बेमनसे और तोतेकी तरह सीखें। अुन्होंने अेक बड़ी जिम्मेदारीका काम हाथमें लिया है, जिसे अुन्हें साहस, बुद्धि और अीमानदारीसे पूरा करना चाहिये।

यह काम कठिन तो काफी है, परंतु अितना कठिन नहीं है जितनेकी कोअी कल्पना कर ले, बशर्ते कि शिक्षक या व्यवस्थापक अिस काममें अपना सारा हृदय लगा दे। अगर वह अपने विद्यार्थियोंका पिता बन जाता है, तो अुसे अपने-आप मालूम हो जायगा कि अुनकी

आवश्यकता क्या है और वह अुसकी पूर्ति करनेमें लग जायगा। अगर अुसमें यह योग्यता नहीं है, तो वह अुसे प्राप्त करनेका प्रयत्न करेगा। और यह देखते हुअे कि हमने शुरुआत अिस विचारके साथ की है कि लड़के-लड़कियोंको अुनकी आवश्यकताओंके अनुसार शिक्षा प्राप्त करनी है, हरिजनोंके या दूसरे बच्चोंके भी शिक्षकमें असाधारण कुशलता अथवा बाह्य ज्ञानका होना जरूरी नहीं है।

और अगर यह याद रखा जाय कि सभी प्रकारकी शिक्षाका मुख्य लक्ष्य विद्यार्थियोंका चरित्र निर्माण करना है या होना चाहिये, तो जिस शिक्षकके पास चरित्र है अुसे हिम्मत नहीं हारनी चाहिये।

हरिजन, १–१२–'३३

९

आत्म-निर्भरता और शरीर-श्रमका आदर

आत्म-निर्भरता

गुरुकुलके प्रेमीकी हैसियतसे मैं समिति और माता-पिताओंको अेक-दो सुझाव देनेकी अिजाजत चाहता हूं। गुरुकुलके लड़कोंको आत्म-निर्भर और स्वावलंबी बनना है, तो अुन्हें अच्छी औद्योगिक तालीमकी जरूरत है। मुझे अैसा प्रतीत होता है कि हमारे देशमें, जहांकी पच्चासी प्रतिशत आबादी कृषिप्रधान है और शायद दस प्रतिशत आबादी किसानोंकी आवश्यकताअें पूरी करनेके काममें लगी हुअी है, प्रत्येक युवककी शिक्षाका यह अंग होना चाहिये कि अुसे खेती और हाथकी बुनाअीका खासा व्यावहारिक ज्ञान हो। यदि वह औजारोंको ठीक तरह काममें लाना जानता है, किसी तखतेके टुकड़ेको सीधा चीर सकता है और अैसी दीवार बना सकता है जो समडोरीके गलत अिस्तेमालके कारण गिर नहीं पड़ेगी तो वह कुछ खोयेगा नहीं।

जिस लड़केकी यह तैयारी हुअी हो वह संसारसे संग्राम करनेमें अपनेको कभी निस्सहाय अनुभव नहीं करेगा और कभी बेकारीमें नहीं रहेगा। स्वास्थ्य और सफाअीके नियमोंका ज्ञान और बच्चोंका पालन करनेकी कला भी गुरुकुलके विद्यार्थियोंकी शिक्षाका आवश्यक अंग होना चाहिये। मेलेमें सफाअीका प्रबंध जैसा चाहिये वैसा नहीं था। मक्खियोंका त्रास अपनी कहानी आप ही कहता था। ये अदम्य सफाअी-निरीक्षक हमें सतत चेतावनी दे रहे थे कि सफाअीके मामलेमें हमारा हाल अच्छा नहीं था। वे साफ सुझा रहे थे कि हमारी जूठन और मैलेको ठीक तरहसे गाड़नेकी जरूरत है। मुझे अफसोस हो रहा था कि हम वार्षिक यात्रियोंको सफाअीका व्यावहारिक पाठ सिखानेका सुनहला मौका चूक रहे हैं। परंतु यह काम लड़कोंसे शुरू होना चाहिये। अिस प्रकार संचालकोंको वार्षिक सम्मेलन पर तीन सौ व्यावहारिक सफाअी-शिक्षक मिल जायंगे। आखिरी किन्तु महत्त्वकी बात यह है कि माता-पिताओं और समितिको चाहिये कि अपने लड़कोंको आधुनिक विलासकी वस्तुओंका अुपयोग और यूरोपीय पोशाककी नकल करने देकर वे अुन्हें बिगाड़े नहीं। ये चीजें अुन्हें अुनके अुत्तर-जीवनमें बाधक होंगी और ब्रह्मचर्यकी शत्रु हैं। हम सबमें समान रूपसे जो दुष्ट प्रवृत्तियां हैं, अुनके विरुद्ध लड़नेका काम अुनके लिअे काफी है। अुनके प्रलोभनोंमें वृद्धि करके हम अुनकी लड़ाअीको और मुश्किल न बनायें।

स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी, पृष्ठ ३३४, ३३५

शरीर-श्रम

आप पूछ सकते हैं: ‘हमें अपने हाथोंसे काम क्यों करना चाहिये?’ और कह सकते हैं कि ‘हाथका काम अुन लोगोंको करना होगा जो निरक्षर हैं। मैं तो अपने आपको साहित्य और राज-नीतिक निबंध पढ़नेके काममें ही लगा सकता हूं।’ मेरे खयालसे हमें

श्रमका गौरव पहचाननेकी आवश्यकता है। अगर कोअी नाअी या मोची विद्यालय जाता है, तो अुसे नायी या मोचीका धंधा नहीं छोड़ देना चाहिये। मेरे खयालसे नाअीका पेशा अुतना ही अच्छा है जितना डॉक्टरका।

स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी, पृष्ठ ३८८, ३८९; १६–२–'१६

और देशोंके बारेमें कुछ भी सही हो, कमसे कम भारतमें तो — जहां अस्सी फी सदी आबादी खेती करनेवाली है और दूसरी दस फी सदी अुद्योगोंमें काम करनेवाली है — शिक्षाको निरी साहित्यिक बना देना और लड़कों और लड़कियोंको अुत्तर-जीवनमें हाथके कामके लिअे अयोग्य बना देना गुनाह है। मेरी तो राय है कि चूंकि हमारा अधिकांश समय अपनी रोजी कमानेमें लगता है, अिसलिअे हमारे बच्चोंको बचपनसे ही अिस प्रकारके परिश्रमका गौरव सिखाना चाहिये। हमारे बालकोंकी पढ़ाअी अैसी नहीं होनी चाहिये, जिससे वे मेहनतका तिरस्कार करने लगें। कोअी कारण नहीं कि क्यों अेक किसानका बेटा किसी स्कूलमें जानेके बाद खेतीके मजदूरके रूपमें आजकलकी तरह निकम्मा बन जाये। यह अफसोसकी बात है कि हमारी पाठशालाओंके लड़के शारीरिक श्रमको तिरस्कारकी दृष्टिसे न सही, पर नापसन्दगीकी नजरसे जरूर देखते हैं।

यंग अिंडिया, १–९–'२१

कातनेका धर्म

किसी भी भावी पाठ्यक्रममें कताअी अेक अनिवार्य विषय होना चाहिये। जैसे हम सांस लिये और खाये बगैर जी नहीं सकते, ठीक अुसी तरह हमारे लिअे यह असंभव है कि घरू कताअीको फिरसे जिन्दा किये बिना अिस प्राचीन देशसे दरिद्रताका मुंह काला किया जा सके और हम आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त कर सकें। मैं

प्रत्येक घरमें चरखेका होना अुतना ही जरूरी मानता हूं जितना चूल्हेका होना। दूसरी कोअी भी योजना लोगोंकी लगातार गम्भीर हो रही दरिद्रताकी समस्याको कभी हल नहीं कर सकेगी।

तो फिर प्रत्येक घरमें कताअी कैसे दाखिल की जा सकती है? मैं पहले ही सुझा चुका हूं कि हरअेक राष्ट्रीय पाठशालामें कताअी और सूतका व्यवस्थित अुत्पादन जारी किया जाय। अेक बार हमारे लड़के और लड़कियोंने यह कला सीख ली कि वे अुसे आसानीसे अपने घरोंमें ले जा सकते हैं।

यंग अिंडिया, १९-१-'२१

१०

आर्थिक आत्म-निर्भरता

अगर हरअेक पाठशालामें कताअी जारी कर दी जाय, तो अुससे शिक्षाके आर्थिक प्रबंध-संबंधी हमारे विचारोंमें क्रान्ति हो जायगी। हम पाठशालाओंको छह घंटे रोज चलाकर विद्यार्थियोंको मुफ्त शिक्षा दे सकते हैं। मान लीजिये कि अेक लड़का प्रतिदिन चार घंटे चरखे पर काम करता है, तो वह दस तोला सूत रोज तैयार करेगा, और अिस तरह अपनी पाठशालाके लिअे अेक आना रोज कमायेगा। यह भी मान लीजिये कि पहले महीने वह बहुत कम माल तैयार करता है और पाठशाला महीनेमें २६ दिन ही काम करती है। प्रथम मासके बाद वह हर महीने अेक रुपया दस आने कमा सकता है। पहले महीनेके बाद तीस लड़कोंकी अेक कक्षाकी मासिक आय अड़तालीस रुपये बारह आना होगी।

अब लिखाअी-पढ़ाअीकी शिक्षाके बारेमें कहता हूं। छहमें से दो घंटे वह दी जा सकती है। स्पष्ट है कि बहुत प्रयत्न किये

बिना ही प्रत्येक पाठशाला स्वावलंबी बनाओ जा सकती है और राष्ट्र अपनी पाठशालाओंके लिअे अनुभवी अध्यापक रख सकता है।

अिस योजना पर अमल करनेमें मुख्य कठिनाओ चरखेकी है। यदि यह कला लोकप्रिय हो जाती है, तो हमें हजारों चरखोंकी जरूरत होगी। सौभाग्यसे हरअेक देहाती बढ़ओ अिन मशीनोंको आसानीसे बना सकता है। अुन्हें आश्रमसे या और कहींसे मंगवाना गंभीर भूल है। कताओकी खूबी यह है कि वह अत्यन्त सरल है, आसानीसे सीखी जा सकती है और हर गांवमें खास कुछ खर्च किये बिना दाखिल की जा सकती है।

मैंने जो रास्ता सुझाया है वह शुद्धि और परीक्षाके अिस वर्षके लिअे ही है। जब साधारण समय आ जायगा और स्वराज्य कायम हो जायगा, तब कताओको केवल अेक घंटा और बाकी समय साहित्यिक शिक्षाको दिया जा सकता है।

यंग अिंडिया, २–२–’२१

हमारी शिक्षाके लिअे रुपया आबकारीकी आमदनीमें से या जमीनके लगानसे नहीं आना चाहिये। स्वराज्य होने पर अुसका मुख्य आधार चरखा होना चाहिये। अगर चरखा और करघा हर पाठ-शाला और विद्यालयमें जारी कर दिये जायं, तो हमारी शिक्षाका खर्च आसानीसे निकल आयेगा। आज तो मैं चाहूंगा कि हमारे लड़के अपना सारा समय कताओमें दें। स्वराज्य हो जानेके बाद कमसे कम अेक घंटा देना होगा। स्वराज्यकी प्रतिक्रिया हमारे जीवनके प्रत्येक विभागमें होनी चाहिये। अिस समय तो हमारी पाठशालाअें गुलाम तैयार करनेके कारखाने हैं। स्वराज्यमें शिक्षाका लक्ष्य लड़कोंको छुटपनसे ही स्वावलंबी बनाना होगा। अुन्हें और कोओ भी धंधा सिखाया जा सकता है, परंतु कातना अनिवार्य होगा। चरखेको दुखियोंके संतोषका साधन होना चाहिये। और किसी चीजमें अिसके जैसे

गुण नहीं हैं, क्योंकि खेतीकी पूर्ति सिर्फ चरखा ही कर सकता है। सभी बढ़ओी या लोहार नहीं बन सकते, परंतु कातनेवाले सब बन सकते हैं और सबको या तो अपने देशके लिअे या अपनी कमाओीकी पूर्ति करनेके लिअे कातना ही चाहिये। चूंकि कपड़ेकी आवश्यकता सार्वत्रिक है, अिसलिअे चरखा भी जरूर सार्वत्रिक होना चाहिये।

हम साहित्यिक शिक्षाके साथ साथ अुसके लाजिमी अंगकी तरह कताओीको अभीसे जारी करवा दें, ताकि स्वराज्य होने पर हमें अिस प्रश्न पर फिरसे न लड़ना पड़े।

यंग अिंडिया, ३०–३–'२१

मैं आपको यह सुझानेका साहस करता हूं कि देशके लिअे अपने बच्चोंको शराबकी आमदनीसे शिक्षा पाते हुअे देखना गहरे अपमानकी बात है। हम आनेवाली पीढ़ीके शापके भागी होंगे, अगर हम बुद्धिमानी-पूर्वक शराबकी बुराओीको बन्द कर देनेका फैसला नहीं करते, फिर चाहे अिसके फलस्वरूप हमें अपने बच्चोंकी शिक्षाको भी क्यों न कुर्बान कर देना पड़े। परंतु शिक्षाको कुर्बान करनेकी जरूरत नहीं होगी। मैं जानता हूं कि आपमें से बहुतोंने मेरे अिस विचारकी हंसी अुड़ाओी है कि हमारे स्कूल-कॉलेजोंमें कताओी जारी करके शिक्षाको स्वावलंबी बनाया जाय। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि अिससे शिक्षाकी समस्या जिस प्रकार हल होती है वैसे और किसी चीजसे नहीं हो सकती। देश नये करोंको बरदाश्त नहीं कर सकता। मौजूदा कर ही असह्य हैं। हमें न केवल अफीम और शराबकी आमदनीको मिटा देना होगा, बल्कि दूसरे करोंमें भी बहुत अधिक कमी करनी पड़ेगी, यदि निकट भविष्यमें आम लोगोंकी बढ़ती हुओी गरीबीका सवाल हल करना है।

यंग अिंडिया, ८–६–'२१

बिना ही प्रत्येक पाठशाला स्वावलंबी बनाअी जा सकती है और राष्ट्र अपनी पाठशालाओंके लिअे अनुभवी अध्यापक रख सकता है।

अिस योजना पर अमल करनेमें मुख्य कठिनाअी चरखेकी है। यदि यह कला लोकप्रिय हो जाती है, तो हमें हजारों चरखोंकी जरूरत होगी। सौभाग्यसे हरअेक देहाती बढ़अी अिन मशीनोंको आसानीसे बना सकता है। अुन्हें आश्रमसे या और कहींसे मंगवाना गंभीर भूल है। कताअीकी खूबी यह है कि वह अत्यन्त सरल है, आसानीसे सीखी जा सकती है और हर गांवमें खास कुछ खर्च किये बिना दाख़िल की जा सकती है।

मैंने जो रास्ता सुझाया है वह शुद्धि और परीक्षाके अिस वर्षके लिअे ही है। जब साधारण समय आ जायगा और स्वराज्य कायम हो जायगा, तब कताअीको केवल अेक घंटा और बाकी समय साहित्यिक शिक्षाको दिया जा सकता है।

यंग अिंडिया, २–२–'२१

हमारी शिक्षाके लिअे रुपया आबकारीकी आमदनीमें से या जमीनके लगानसे नहीं आना चाहिये। स्वराज्य होने पर अुसका मुख्य आधार चरखा होना चाहिये। अगर चरखा और करघा हर पाठ-शाला और विद्यालयमें जारी कर दिये जायं, तो हमारी शिक्षाका खर्च आसानीसे निकल आयेगा। आज तो मैं चाहूंगा कि हमारे लड़के अपना सारा समय कताअीमें दें। स्वराज्य हो जानेके बाद कमसे कम अेक घंटा देना होगा। स्वराज्यकी प्रतिक्रिया हमारे जीवनके प्रत्येक विभागमें होनी चाहिये। अिस समय तो हमारी पाठशालाअें गुलाम तैयार करनेके कारखाने हैं। स्वराज्यमें शिक्षाका लक्ष्य लड़कोंको छुटपनसे ही स्वावलंबी बनाना होगा। अुन्हें और कोअी भी धंधा सिखाया जा सकता है, परंतु कातना अनिवार्य होगा। चरखेको दुखियोंके संतोषका साधन होना चाहिये। और किसी चीजमें अिसके जैसे

गुण नहीं हैं, क्योंकि खेतीकी पूर्ति सिर्फ चरखा ही कर सकता है। सभी बढ़ई या लोहार नहीं बन सकते, परंतु कातनेवाले सब बन सकते हैं और सबको या तो अपने देशके लिअे या अपनी कमाअीकी पूर्ति करनेके लिअे कातना ही चाहिये। चूंकि कपड़ेकी आवश्यकता सार्वत्रिक है, अिसलिअे चरखा भी जरूर सार्वत्रिक होना चाहिये।

हम साहित्यिक शिक्षाके साथ साथ अुसके लाजिमी अंगकी तरह कताअीको अभीसे जारी करवा दें, ताकि स्वराज्य होने पर हमें अिस प्रश्न पर फिरसे न लड़ना पड़े।

यंग अिंडिया, ३०–३–'२१

मैं आपको यह सुझानेका साहस करता हूं कि देशके लिअे अपने बच्चोंको शराबकी आमदनीसे शिक्षा पाते हुअे देखना गहरे अपमानकी बात है। हम आनेवाली पीढ़ीके शापके भागी होंगे, अगर हम बुद्धिमानी-पूर्वक शराबकी बुराअीको बन्द कर देनेका फैसला नहीं करते, फिर चाहे अिसके फलस्वरूप हमें अपने बच्चोंकी शिक्षाको भी क्यों न कुर्बान कर देना पड़े। परंतु शिक्षाको कुर्बान करनेकी जरूरत नहीं होगी। मैं जानता हूं कि आपमें से बहुतोंने मेरे अिस विचारकी हंसी अुड़ाअी है कि हमारे स्कूल-कॉलेजोंमें कताअी जारी करके शिक्षाको स्वावलंबी बनाया जाय। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि अिससे शिक्षाकी समस्या जिस प्रकार हल होती है वैसे और किसी चीजसे नहीं हो सकती। देश नये करोंको बरदाश्त नहीं कर सकता। मौजूदा कर ही असह्य हैं। हमें न केवल अफीम और शराबकी आमदनीको मिटा देना होगा, बल्कि दूसरे करोंमें भी बहुत अधिक कमी करनी पड़ेगी, यदि निकट भविष्यमें आम लोगोंकी बढ़ती हुअी गरीबीका सवाल हल करना है।

यंग अिंडिया, ८–६–'२१

कौन नहीं जानता कि पिताओंने अपने बच्चोंकी शिक्षाके लिअे रुपयेकी जरूरतके मारे कैसी कैसी आपत्तिजनक बातें करना अपना फर्ज समझा है? मुझे पक्का विश्वास है कि अगर हमने अपनी शिक्षाकी सारी पद्धतिको नहीं बदला, तो हमारे लिअे और भी बुरा जमाना आनेवाला है। हमने बालकोंके महासागरका किनारा-मात्र छुआ है। अुनकी विशाल संख्या अब भी शिक्षासे वंचित है और यह अिसलिअे नहीं कि माता-पिताकी अिच्छा नहीं है, बल्कि अिसलिअे कि अुनमें सामर्थ्य और ज्ञानका अभाव है। खासकर हमारे जैसे गरीब राष्ट्रकी दृष्टिसे अिसमें अवश्य कुछ न कुछ मौलिक भूल है कि मां-बापको बड़े बड़े बच्चोंकी अितनी संख्याका भरण-पोषण करना पड़े, अुन्हें अितनी महंगी शिक्षा देनी पड़े और बच्चे अुसका कोओी भी तात्कालिक बदला न दें। मुझे अिसमें कुछ भी बेजा दिखाओी नहीं देता कि बालक अपनी शिक्षाके आरंभसे ही कामके रूपमें शिक्षाका खर्च अदा करें। निस्सन्देह, सबसे सादी दस्तकारी जो सबके लिअे अनुकूल और सारे भारतके लिअे जरूरी है वह है कताओी और अुसकी सारी पूर्ववर्ती क्रियायें। अगर हम अिसे अपनी शिक्षा-संस्थाओंमें जारी कर दें, तो हम तीन अुद्देश्य पूरे करेंगे : शिक्षाको स्वावलंबी बना देंगे, बालकोंके शरीर और मस्तिष्कको तालीम देंगे और विदेशी सूत और कपड़ेके संपूर्ण बहिष्कारके लिअे रास्ता बना देंगे। साथ ही, अिस प्रकार तैयार होकर बालक आत्म-निर्भर और स्वाधीन बनेंगे।

यंग अिंडिया, १५–६–’२१

अगर हम चाहते हैं — और अैसी अिच्छा हमें अवश्य रखना चाहिये — कि पाठशाला जानेकी अुम्रवाला प्रत्येक लड़का और लड़की सार्वजनिक पाठशालाओंमें जाने लगे, तो हमें जानना चाहिये कि न तो हमारे पास मौजूदा ढंगकी शिक्षाका खर्च अुटानेके लिअे पैसा है और

न लाखों माता-पिताओंमें अिस समय प्रचलित फीस चुकानेकी शक्ति है। अिसलिअे शिक्षाको सार्वत्रिक होना है तो वह मुफ्त ही होनी चाहिये। पाठशाला जानेकी अुम्रवाले तमाम बच्चोंकी शिक्षाका प्रबंध करनेके लिअे दो अरब रुपये जरूरी होंगे। मैं समझता हूं कि आदर्श शासन-व्यवस्थामें भी हम अिस काम पर अितनी बड़ी रकम नहीं लगा सकेंगे। अिसलिअे अिससे यह नतीजा निकलता है कि हमारे बच्चोंको जो भी शिक्षा मिलती है, अुसका थोड़ा या पूरा खर्च बालकोंको मेहनत करके चुकाना चाहिये। मेरे विचारके अनुसार अैसा सार्वत्रिक श्रम, जिससे साथ ही कुछ आय भी हो, हाथ-कताअी और हाथ-बुनाअी ही हो सकता है। परंतु मेरे प्रस्तावके लिअे यह महत्त्वकी बात नहीं है कि हम कताअीको रखें या और किसी प्रकारके श्रमको रखें, जब तक कि अुससे लाभ हो सकता है। अितना ही है कि जांच करनेसे पता लगेगा कि व्यावहारिक, लाभदायक और व्यापक पैमाने पर कपड़ेके अुत्पादनसे संबंध रखनेवाली प्रक्रियाओंके सिवा और कोअी धंधा अैसा नहीं है जिसे भारत-भरके स्कूलोंमें प्रचलित किया जा सके।

हमारे जैसे गरीब मुल्कमें हाथकी तालीम जारी करनेसे दो हेतु सिद्ध होंगे। अुससे हमारे बालकोंकी शिक्षाका खर्च निकल आयगा और वे अैसा धंधा सीख लेंगे, जिसका अगर वे चाहें तो अुत्तर-जीवनमें अपनी जीविकाके लिअे सहारा ले सकते हैं। अिस पद्धतिसे हमारे बालक आत्म-निर्भर अवश्य हो जायेंगे। राष्ट्रको कोअी चीज अितना कमजोर नहीं बनायेगी, जितना यह बात कि हम श्रमका तिरस्कार करना सीखें।

यंग अिंडिया, १–९–'२१

११

विद्यार्थीका सर्वांगीण विकास

समग्र शिक्षा

मेरा मत है कि बुद्धिकी सच्ची शिक्षा हाथ, पैर, आंख, कान, नाक आदि शरीरके अंगोंके ठीक अभ्यास और शिक्षणसे ही हो सकती है। दूसरे शब्दोंमें, अिन्द्रियोंके बुद्धिपूर्वक अुपयोगसे बालककी बुद्धिके विकासका अुत्तम और लघुतम मार्ग मिलता है। परंतु जब तक मस्तिष्क और शरीरका विकास साथ साथ न हो और अुसी प्रमाणमें आत्माकी जागृति न होती रहे, तब तक केवल बुद्धिके अेकांगी विकाससे कुछ विशेष लाभ नहीं होगा। आध्यात्मिक शिक्षासे मेरा आशय हृदयकी तालीमसे है। अिसलिअे मस्तिष्कका ठीक और चतुर्मुखी विकास तभी हो सकता है, जब वह बच्चेकी शारीरिक और आध्यात्मिक शक्तियोंकी तालीमके साथ साथ होता हो। ये सब बातें अेक और अविभाज्य हैं। अिसलिअे अिस सिद्धान्तके अनुसार यह मान बैठना बिलकुल गलत होगा कि अुनका विकास टुकड़े टुकड़े करके या अेक-दूसरेसे स्वतंत्र रूपमें किया जा सकता है।

शरीर, मन और आत्माकी विविध शक्तियोंमें ठीक ठीक मेल और अेकरसता न होनेके दुष्परिणाम स्पष्ट हैं। वे हमारे चारों ओर विद्यमान हैं; अितना ही है कि अपने वर्तमान विकृत संस्कारोंके कारण वे हमें दिखाअी नहीं देते। हमारे देहाती लोगोंकी बात लीजिये। अपने बचपनसे ही वे अपने खेतोंमें सुबहसे रात तक जिन पशुओंके बीच रहते हैं अुन्हींकी तरह घोर परिश्रम करते हैं। अुनका जीवन, अेक थका देनेवाला, अनन्त बेगारका चक्र है, जिसमें बुद्धि या जीवनके अुच्चतर सौन्दर्यका कहीं प्रकाश नजर नहीं आता। अपने

मन और आत्माके विकासके अवसरोंसे संपूर्ण वंचित रहकर वे जानवरोंकी सतह पर पहुंच गये हैं। जीवन अुनके लिअे अेक विषम अूबड़-खाबड़ रास्ता है, जिसे वे किसी तरह पार करते हैं। अुधर आजकल शहरोंके स्कूल-कॉलेजोंमें जो चीज शिक्षाके नामसे प्रचलित है, वह दरअसल बुद्धिका दुरुपयोग-मात्र है। वहां बौद्धिक तालीमको अैसी चीज समझा जाता है, जिसका हाथके या शरीरके कामके साथ कोअी संबंध नहीं है। परंतु क्योंकि शरीरको स्वस्थ रखनेके लिअे कोअी न कोअी शारीरिक व्यायाम करना आवश्यक है, अिसलिअे शरीर-निर्माणके अेक बनावटी और निष्फल तरीकेके जरिये वे अुस अुद्देश्यको पूरा करनेकी व्यर्थ चेष्टा करते हैं। यह तरीका, अगर अिसका परिणाम अितना दुःखद न होता तो, अितना हास्यास्पद होता कि अुसका वर्णन नहीं किया जा सकता। अिस प्रणालीमें से निकलकर जो नौजवान आता है, वह शारीरिक सहिष्णुतामें अेक मामूली मजदूरके साथ किसी भी तरह स्पर्धा नहीं कर सकता। शरीर पर जरासी मेहनत पड़ी कि अुसका सिर दुखने लगता है; हलकी-सी धूप लग गअी तो अुसे चक्कर आने लगते हैं। अितना ही नहीं, ये सब बातें बिलकुल 'स्वाभाविक' मानी जाती हैं। जहां तक हृदयकी शक्तियोंका संबंध है, अुन्हें मुरझाने दिया जाता है, या मनमाने अनुशासन-हीन तरीकों पर किसी भी तरह बढ़नेके लिअे छोड़ दिया जाता है। नतीजा होता है नैतिक और आध्यात्मिक अराजकता। और यह प्रशंसनीय बात समझी जाती है।

अिसके विपरीत अेक अैसे बालकको लें, जिसके हृदयकी शिक्षा पर शुरूसे ध्यान दिया गया है। मान लीजिये अुसे अपनी शिक्षाके लिअे कताअी, बढ़ओगिरी और खेती वगैरा जैसे किसी अुपयोगी धंधेमें लगा दिया जाता है और अुस संबंधमें अुसे जो विविध क्रियाअें करनी हैं अुनके सिद्धान्तके बारेमें और जिन औजारोंसे काम लेना है अुनके अुपयोग और बनावटके बारेमें पूरा व्यापक ज्ञान करा दिया जाता है।

वह न सिर्फ अेक बढ़िया और स्वस्थ शरीर ही, परंतु अेक अैसी अच्छी और सबल बुद्धि भी निर्माण कर लेगा, जो केवल किताबी ज्ञानवाली ही नहीं होगी, बल्कि जिसकी जड़ अनुभवमें पक्की होगी और जिसकी व्यावहारिक जीवनमें प्रतिदिन आजमाअिश होती रहेगी। अुसकी बौद्धिक शिक्षामें गणित और अुन विभिन्न शास्त्रोंका ज्ञान शामिल होगा, जो अुसके अपने धंधेको अच्छी तरह और बुद्धिपूर्वक करनेमें अुपयोगी हैं। अगर अिसमें मनोरंजनके तौर पर साहित्य और जोड़ दिया जाता है, तो अिससे अुसे अेक संपूर्ण, सुसंतुलित और सर्वांगीण शिक्षा मिल जायगी, जिसमें बुद्धि, शरीर और आत्मा सब पूरी तरह काम करेंगे और साथ साथ विकास करके अेक स्वाभाविक और अेकरस संपूर्ण वस्तु बन जायेंगे। मनुष्य न तो कोरी बुद्धि है, न स्थूल शरीर और न केवल हृदय या आत्मा ही है। संपूर्ण मनुष्यके निर्माणके लिअे तीनोंके अुचित और अेकरस मेलकी जरूरत होती है और यही शिक्षाकी सच्ची व्यवस्था है।

हरिजन, ८–५–'३७

१२

शिक्षा अुद्योग-केन्द्रित होनी चाहिये

ग्राम-अुद्योगोंके शिक्षणको शिक्षाका आधार और केन्द्र समझनेकी जरूरत और कीमतके बारेमें मुझे जरा भी शक नहीं। भारतकी संस्थाओंमें जो तरीका अपनाया जाता है, अुसे मैं शिक्षा अर्थात् मनुष्यके अुत्तम गुणोंको बाहर लाना न कहकर मस्तिष्कका दुरुपयोग कहता हूं। वह किसी तरहसे मस्तिष्कमें जानकारी भर देता है, जब कि शुरूसे ही ग्राम-अुद्योगोंके द्वारा, अुन्हें ही केन्द्र बनाकर, मस्तिष्कको शिक्षा देनेकी पद्धतिसे मस्तिष्कका वास्तविक और अनुशासनबद्ध विकास होगा और फलस्वरूप बौद्धिक शक्तिकी और अप्रत्यक्ष रूपमें आध्यात्मिक शक्तिकी भी रक्षा होगी।

हरिजन, ५–६–'३७

अिसलिअे मैं बच्चेकी शिक्षाका श्रीगणेश अुसे कोअी अुपयोगी दस्तकारी सिखाकर और जिस क्षणसे वह अपनी शिक्षा आरंभ करे अुसी क्षणसे अुसे अुत्पादनके योग्य बनाकर करूंगा। मेरा मत है कि अिस प्रकारकी शिक्षा-प्रणालीमें मस्तिष्क और आत्माका अुच्चतम विकास संभव है। अितना ही है कि प्रत्येक दस्तकारी आजकलकी तरह निरे यांत्रिक ढंगसे न सिखाकर वैज्ञानिक तरीके पर सिखानी पड़ेगी, अर्थात् बालकको प्रत्येक प्रक्रियाका क्यों और कैसे बताना होगा। यह मैं विश्वासके बिना नहीं लिख रहा हूं, क्योंकि अिसके पीछे अनुभवका बल है। जहां कहीं कार्यकर्ताओंको कताअी सिखाअी जा रही है, यह तरीका प्राय: संपूर्ण रूपमें अपनाया जा रहा है। मैंने खुद चप्पलें बनाना और कातना तक अिस ढंगसे सिखाया है और अुसके परिणाम अच्छे आये हैं।

हरिजन, ३१–७–'३७

चौथा विभाग : धार्मिक शिक्षाका प्रश्न

१३

धार्मिक शिक्षा

धार्मिक शिक्षाका सवाल बड़ा कठिन है। फिर भी अिसके बिना हमारा काम नहीं चल सकता। भारत निरीश्वरवादी कभी नहीं होगा। अिस भूमि पर नास्तिकता पनप नहीं सकती। काम बेशक मुश्किल है। जब मैं धार्मिक शिक्षाका विचार करता हूं, तो मेरा सिर चकराने लगता है। हमारे धर्माचार्य दंभी और स्वार्थी हैं। हमें अुनके पास जाना होगा। कुंजी मुल्लाओं, दस्तूरों और ब्राह्मणोंके हाथमें है। परंतु यदि अुनमें सद्बुद्धि नहीं आयगी, तो अंग्रेजी शिक्षासे हमने जो शक्ति प्राप्त की है, अुसे धार्मिक शिक्षामें लगाना पड़ेगा। यह बहुत मुश्किल नहीं है। महासागरका किनारा-मात्र गंदा हुआ है और जो लोग किनारेके भीतर हैं केवल अुन्हींकी शुद्धिकी जरूरत है। हम लोग जो अिस श्रेणीमें आते हैं खुद भी अपनी शुद्धि कर सकते हैं, क्योंकि मेरी बात करोड़ों लोगों पर लागू नहीं होती। भारतवर्षको फिरसे अुसकी मूल गौरवपूर्ण स्थितिमें लानेके लिअे हमें ही अुस ओर पहुंचना पड़ेगा।

हिन्द स्वराज्य (१९०८), पृष्ठ १०७

मेरे लिअे धर्मका अर्थ सत्य और अहिंसा या यों कहिये कि केवल सत्य है, क्योंकि अहिंसा सत्यकी खोजका आवश्यक और अनिवार्य साधन होनेके कारण सत्यमें शामिल है। अिसलिअे जो भी चीज अिन गुणोंके पालनमें सहायक होती है, वह धार्मिक शिक्षा

देनेका साधन है और मेरी रायमें अिसके लिअे अुत्तम मार्ग यह है कि शिक्षक लोग खुद अिन गुणोंका कड़ाअीसे पालन करें। अुस हालतमें चाहे खेलके मैदानमें हो चाहे कक्षाके कमरेमें, लड़कोंके साथ अुनके संपर्कसे ही विद्यार्थियोंको अिन बुनियादी गुणोंकी सुन्दर शिक्षा मिलेगी।

यह बात तो हुअी धर्मके सार्वत्रिक सिद्धान्तोंकी शिक्षाके बारेमें। धार्मिक शिक्षाके पाठ्यक्रममें अपने सिवा दूसरे धर्मोंके सिद्धान्तोंका अध्ययन भी शामिल होना चाहिये। अिसके लिअे विद्यार्थियोंको तालीम दी जानी चाहिये कि वे संसारके विभिन्न महान धर्मोंके सिद्धान्तोंको आदर और अुदारतापूर्ण सहनशीलताकी भावना रखकर समझने और अुनकी कदर करनेकी आदत डालें। यह काम ठीक ढंगसे किया जाय तो अिससे अुनकी आध्यात्मिक निष्ठा दृढ़ होगी और स्वयं अपने धर्मकी अधिक अच्छी समझ प्राप्त होनेमें मदद मिलेगी। परंतु अेक नियम अैसा है, जिसे सब महान धर्मोंका अध्ययन करते समय हमेशा ध्यानमें रखना चाहिये; और वह यह है कि अलग अलग धर्मोंका अध्ययन अुनके माने हुअे भक्तोंकी रचनाओंके द्वारा ही करना चाहिये। अुदाहरणके लिअे, अगर कोअी भागवत पढ़ना चाहता है, तो अुसे किसी विरोधी आलोचकके किये हुअे अनुवादके जरिये नहीं पढ़ना चाहिये, बल्कि भागवतके किसी प्रेमीके तैयार किये हुअे अनुवादके द्वारा पढ़ना चाहिये। अिसी तरह बाअिबिलका अध्ययन भक्त अीसाअियोंकी टीकाओंके द्वारा करना चाहिये। अपने सिवा दूसरे धर्मोंके अिस प्रकारके अध्ययनसे सब धर्मोंकी मौलिक अेकता समझमें आ जायगी और अुस सार्वत्रिक और निर्लेप सत्यकी भी झांकी मिल जायगी जो 'मत-मतान्तरोंके धूल-धमाके' से परे है।

किसीको क्षण भरके लिअे भी यह डर नहीं रखना चाहिये कि दूसरे धर्मोंके आदरपूर्ण अध्ययनसे स्वयं अपने धर्ममें श्रद्धाकी कमी या कमजोरी आनेकी संभावना है। हिन्दू दर्शनशास्त्र मानता है कि सब धर्मोंमें सत्यके तत्त्व मौजूद हैं और अुन सबके प्रति आदर और

पूजाकी वृत्ति रखनेका आदेश देता है। अवश्य ही अिससे पहले खुद अपने धर्मके लिअे आदर होना जरूरी है। दूसरे धर्मोंके अध्ययन और आदरसे यह आदर कम नहीं होना चाहिये। अिसका परिणाम यह होना चाहिये कि वह आदर बढ़कर दूसरे धर्मोंके लिअे भी हो जाय।

अिस बातमें धर्मकी स्थिति वही है जो संस्कृतिकी है। अपनी संस्कृतिकी रक्षाका अर्थ दूसरोंकी संस्कृतिका तिरस्कार नहीं है, बल्कि अपनी संस्कृतिकी रक्षा ज्यादा अच्छी तरह करनेके लिअे दूसरी तमाम संस्कृतियोंमें जो अुत्तम बातें हों अुन्हें हजम कर लेनेकी जरूरत है। ठीक यही बात धर्मके मामलेमें होनी चाहिये।

यंग अिंडिया, ६-१२-'२८

पांचवां विभाग : भाषाकी समस्या

१४

शिक्षाका माध्यम

मातृभाषा

मैं आशा रखता हूं कि यह विश्वविद्यालय* अैसी व्यवस्था करेगा कि जो युवक यहां आते हैं अुन्हें अुनकी मातृभाषाओंके माध्यमसे शिक्षा मिले। हमारी भाषा हमारा अपना प्रतिबिंब होती है और अगर आप मुझसे यह कहें कि हमारी भाषाअें अितनी गरीब हैं कि अुनमें अुत्तम विचार प्रगट नहीं किये जा सकते, तो मैं कहता हूं कि हमारी हस्ती जितनी जल्दी मिट जाय अुतना ही हमारे लिअे अच्छा है। क्या कोअी भी आदमी अैसा है, जो सपनेमें भी यह खयाल रखता हो कि अंग्रेजी कभी भी भारतकी राष्ट्रभाषा बन सकती है। ('कभी नहीं' के नारे) तब राष्ट्रके सिर पर यह बोझ क्यों? जरा क्षणभरके लिअे सोचिये तो सही कि हमारे लड़कोंको प्रत्येक अंग्रेज लड़केके साथ कितनी असमान दौड़ लगानी पड़ती है। मुझे पूनाके कुछ अध्यापकोंसे गहरी बातचीत करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। अुन्होंने मुझे यकीन दिलाया कि प्रत्येक भारतीय युवकको अंग्रेजी भाषाके द्वारा ज्ञान प्राप्त करनेके कारण अपने जीवनके कमसे कम छह कीमती वर्ष खो देने पड़ते हैं। हमारे स्कूल-कॉलेजोंसे निकलनेवाले विद्यार्थियोंकी संख्यासे अिसका गुणा करके आप खुद देख लीजिये कि अिस तरह राष्ट्रके कितने वर्ष बरबाद हो गये। हमारे विरुद्ध आरोप यह है कि हममें मौलिकता नहीं है, स्वतंत्र आरंभकी शक्ति नहीं है। वह हो कैसे, यदि हमें

---

* बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय।

अपने जीवनके मूल्यवान वर्ष अेक विदेशी भाषा पर काबू पानेमें लगाने पड़ें? हम अिस प्रयत्नमें भी असफल होते हैं। . . . मैंने लोगोंको यह कहते सुना है कि आखिर तो अंग्रेजी पढ़े-लिखे भारतवासी ही राष्ट्रके लिअे सब कुछ कर रहे हैं; नेतृत्व तो वही कर रहे हैं। अैसा नहीं होता तो आश्चर्यकी बात होती। हमें अेकमात्र शिक्षा जो मिलती है वह अंग्रेजी शिक्षा है। अवश्य ही हमें अुसका कुछ न कुछ फल तो दिखा सकना चाहिये। परंतु मान लीजिये कि पिछले पचास सालमें हम अपनी देशी भाषाओंके द्वारा तालीम हासिल करते, तो आज हमें क्या मिला होता? अैसा होता तो हमें आज स्वतंत्र भारत मिल गया होता, हमारे शिक्षित मनुष्य अपने ही देशमें विदेशियों जैसे न होकर अपनी वाणीसे राष्ट्रके हृदयको छूते; वे गरीबसे गरीब लोगोंमें काम करते होते और पिछले पचास वर्षमें वे जो कुछ प्राप्त करते वह देशके लिअे विरासत बन जाता (तालियां)। आज तो हमारे अुत्तम विचारोंमें हमारी पत्नियां तक हिस्सेदार नहीं हैं। अध्यापक बोस और अध्यापक रायको देखिये और अुनकी चमत्कारपूर्ण खोजोंको देखिये। क्या यह शर्मकी बात नहीं है कि अुनकी खोजें आम लोगोंकी सम्मिलित संपत्ति नहीं हैं?

स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी, पृष्ठ ३१८–२०; ४–२–’१६

विदेशी माध्यम

विदेशी माध्यमसे हमारे विद्यार्थी दिमागी थकावटके शिकार हुअे हैं, अुनके ज्ञानतंतुओं पर अनुचित भार पड़ा है, वे रट्टू और नकलची बन गये हैं, मौलिक कार्य और विचारके लिअे वे अयोग्य हो गये हैं और अपनी विद्याको परिवार अथवा जनसाधारण तक पहुंचानेमें असमर्थ हो गये हैं। विदेशी माध्यमने हमारे बालकोंको अपने ही देशमें लगभग विदेशी बना डाला है। वर्तमान पद्धतिका यह सबसे बड़ा

दु:खद परिणाम है। विदेशी माध्यमने हमारी देशी भाषाओंके विकासको रोक दिया है। अगर मेरे पास अेक निरंकुश शासककी सत्ता हो, तो मैं विदेशी माध्यमके द्वारा हमारे लड़कों और लड़कियोंकी पढ़ाअी आज ही रोक दूं और तमाम शिक्षकों और अध्यापकोंसे कह दूं कि अगर बरखास्त नहीं होना है तो अिसे फौरन ही बदलें। मैं पाठ्य-पुस्तकोंके तैयार होनेकी प्रतीक्षा नहीं करूंगा। वे अिस परिवर्तनके बाद तैयार हो जायंगी। यह अैसी बुराअी है जिसका अिलाज अेक-दम हो जाना चाहिये।

यंग अिंडिया, १–९–'२१

अगर यह बात सच न होती कि अेकमात्र अुच्च शिक्षा, शिक्षाके नामके योग्य अेकमात्र वस्तु, हमें अंग्रेजी माध्यमके द्वारा मिली है, तो अैसी स्वयंसिद्ध बातको प्रमाणित करनेकी आवश्यकता न होती कि किसी राष्ट्रको यदि राष्ट्र बने रहना है, तो अुसके युवकोंको अुच्चसे अुच्च शिक्षा-सहित सारी तालीम अुसकी अपनी ही भाषा या भाषाओंमें मिलनी चाहिये। अवश्य ही यह अेक स्वयं-प्रमाणित बात है कि अगर किसी राष्ट्रके युवकोंको आम लोगोंकी समझमें आनेवाले माध्यमके द्वारा ज्ञान प्राप्त और हजम नहीं हुआ है, तो वे जन-साधारणके साथ सजीव संपर्क नहीं रख सकते और न स्थापित कर सकते हैं। राष्ट्रको होनेवाली अुस असीम हानिका हिसाब कौन लगा सकता है, जो अुसके हजारों नौजवानोंको अेक विदेशी भाषा और अुसके मुहावरे पर प्रभुत्व पानेमें — जिसका अुनके दैनिक जीवनमें अत्यन्त थोड़ा अुपयोग है और जिसे सीखनेमें अुन्हें स्वयं अपनी मातृ-भाषा और अपने साहित्यकी अुपेक्षा करनी पड़ती है — वर्षों बरबाद करनेके लिअे मजबूर होनेसे होती है? अिससे बड़ा कोअी अंधविश्वास कभी नहीं देखा गया कि किसी भाषा-विशेषमें विकासकी अथवा सूक्ष्म या वैज्ञानिक विचारोंको प्रगट करनेकी क्षमता नहीं हो सकती।

भाषा अुसके बोलनेवालोंके चरित्र और विकासका ठीक ठीक प्रतिबिंब होती है।

विदेशी शासनकी अनेक बुराअियोंमें से देशके नौजवानों पर अेक विदेशी माध्यमका यह विनाशक भार अितिहासमें बड़ीसे बड़ी जबरदस्ती मानी जायगी। अिसने राष्ट्रकी शक्तिको चूस डाला है, अिसने विद्यार्थियोंकी जिन्दगियां घटा दी हैं और अुन्हें जनसाधारणके लिअे पराया बना दिया है। अुसने शिक्षाको अनावश्यक रूपमें खर्चीली बना दिया है। अगर अिस प्रक्रियाको अब भी जारी रहने दिया गया, तो वह राष्ट्रकी आत्माको नष्ट कर देगी। अिसलिअे शिक्षित भारत जितनी जल्दी अिस विदेशी माध्यमके जादूसे अपने आपको मुक्त कर लेगा अुतना ही अुनके और लोगोंके लिअे बेहतर होगा।

यंग अिंडिया, ५–७–'२८

मेरा अपना अनुभव

मैं अपने अनुभवोंका अेक प्रकरण भी दे दूं। १२ सालकी अुम्र तक मैंने जो भी शिक्षा पायी अपनी मातृभाषा गुजरातीमें पायी थी। अुस समय मैं कुछ कुछ अंकगणित, अितिहास और भूगोल जानता था। फिर मैंने हाअीस्कूलमें प्रवेश किया। पहले तीन बरस तक फिर भी मातृभाषाका ही माध्यम रहा। परंतु शिक्षकका काम तो यही था कि विद्यार्थीके सिरमें अंग्रेजी ठूंसे। अिसलिअे हमारा आधेसे ज्यादा समय अंग्रेजी सीखने और अुसके मनमाने हिज्जों और अुच्चारण पर काबू पानेमें दिया जाता था। अेक अैसी भाषा सीखना, जिसका अुच्चारण वैसा नहीं किया जाता जैसी वह लिखी जाती है, हमारे लिअे अेक नया और कष्टपूर्ण अनुभव था। हिज्जे रटना भी अजीब मालूम होता था। खैर, यह तो मैंने प्रसंगवश कहा; मेरी दलीलके साथ अिसका कोअी संबंध नहीं है। फिर भी प्रथम तीन वर्ष तो गाड़ी ठीक ठीक चलती रही।

मुसीबत तो चौथे वर्षके साथ शुरू हुआी। भूमिति, बीजगणित, रसायनशास्त्र, खगोलविद्या, अितिहास, भूगोल सब कुछ अंग्रेजीके जरिये सीखना पड़ता था। अंग्रेजीका जुल्म अितना बड़ा था कि संस्कृत या फारसी तक मातृभाषाके द्वारा न सीखकर अंग्रेजीके द्वारा सीखनी पड़ती थी। कक्षामें अगर कोअी विद्यार्थी गुजरातीमें, जिसे वह समझता था, बोलता तो अुसे सजा दी जाती थी। हां, कोअी खराब अंग्रेजी बोलता, जिसका वह न तो शुद्ध अुच्चारण कर सकता था और न जिसे वह पूरी तरह समझ सकता था, तो शिक्षकको अिसकी कोअी परवाह नहीं थी। शिक्षक क्यों चिन्ता करे? अुसकी अपनी अंग्रेजी भी निर्दोष नहीं होती थी। अिसके सिवा और होता भी क्या? अंग्रेजी जितनी अुसके विद्यार्थियोंके लिअे विदेशी भाषा थी, अुतनी ही अुसके लिअे भी थी। नतीजा बड़ी गड़बड़ी थी। हम लड़कोंको बहुतसी बातें रट लेनी पड़ती थीं, चाहे हम अुन्हें पूरी तरह और अकसर बिलकुल नहीं समझ सकते थे। जब शिक्षक हमें भूमिति समझानेके लिअे कशमकश करते, तब मेरा सिर घूमने लगता था। जब तक हम यूक्लिडकी पहली पुस्तकके तेरहवें साध्य तक नहीं पहुंचे, तब तक मुझे भूमितिकी टांग-पूंछ कुछ भी समझमें नहीं आयी थी। और मैं पाठकोंके सामने स्वीकार करता हूं कि मातृभाषाके लिअे मेरा अितना प्रेम होते हुअे भी मैं आज तक भूमिति, बीजगणित आदिके गुजराती पारिभाषिक शब्द नहीं जानता। अब मेरी समझमें आता है कि अगर अंग्रेजीके बजाय मैंने गुजरातीके द्वारा सीखा होता, तो अंकगणित, भूमिति, बीजगणित, रसायनशास्त्र और खगोलविद्याके बारेमें जो बातें सीखनेमें मुझे चार वर्ष लगे, अुन्हें मैं आसानीसे अेक सालमें सीख लेता। अुन विषयोंका ज्ञान मुझे ज्यादा आसानीसे और अधिक स्पष्ट होता। मेरा गुजराती शब्द-भंडार अधिक संपन्न हो गया होता। अिस ज्ञानका मैं अपने घरमें अुपयोग करता। अिस अंग्रेजी माध्यमने मेरे और मेरे घरवालोंके बीचमें अेक जबरदस्त दीवार खड़ी कर दी, क्योंकि

वे लोग अंग्रेजी स्कूलकी पढ़ाअीमें से नहीं गुजरे थे। मेरे पिताजीको कुछ पता नहीं था कि मैं क्या कर रहा हूं। मैं चाहता भी तो जो कुछ मैं सीख रहा था अुसमें अपने पिताजीकी दिलचस्पी पैदा नहीं कर सकता था; क्योंकि अुनमें बुद्धि तो बहुत थी, परंतु अंग्रेजीका अेक शब्द भी अुन्हें नहीं आता था। मैं तेजीसे अपने ही घरमें पराया बन रहा था। हां, मैं औरोंसे कुछ अूंचा जरूर बन गया। यहां तक कि मेरी पोशाकमें भी अदृश्य परिवर्तन होने लगे। जो कुछ मेरे साथ हुआ, वह कोअी असाधारण अनुभव नहीं था। अधिकांश लोगोंका यही अनुभव होता है।

हाअीस्कूलके पहले तीन वर्षोंमें मेरे ज्ञान-भंडारमें बहुत कम वृद्धि हुअी। वह समय सब कुछ अंग्रेजीके द्वारा सिखानेके लिअे लड़कोंको तैयार करनेका था। हाअीस्कूल अंग्रेजोंकी सांस्कृतिक विजयके स्कूल थे। मेरे हाअीस्कूलके तीन सौ विद्यार्थियोंका प्राप्त किया हुआ ज्ञान सीमित संपत्ति बन गया। वह आम लोगों तक पहुंचानेके लिअे नहीं था।

अेक शब्द साहित्यके विषयमें भी कह दूं। हमें अंग्रेजी गद्य और अंग्रेजी कविताकी कअी पुस्तकें पढ़नी पड़ती थीं। बेशक, वह सब अच्छा था। परंतु आम जनताकी सेवा करने या अुसके संपर्कमें आनेके लिअे वह ज्ञान मुझे कुछ भी अुपयोगी नहीं हुआ है। मैं यह नहीं कह सकता कि मैंने अंग्रेजी गद्य और पद्य जो कुछ भी सीखा वह न सीखा होता, तो कोअी अलभ्य रत्न-भंडार खो दिया होता। अिसके बजाय अगर मैंने वे कीमती सात वर्ष गुजराती पर प्रभुत्व प्राप्त करनेमें और गुजरातीके द्वारा गणित, विज्ञान, संस्कृत और दूसरे विषय सीखनेमें बिताये होते, तो अिस प्रकार प्राप्त किये हुअे ज्ञानका मैं अपने पड़ोसियोंको आसानीसे हिस्सेदार बना सकता था। मैं गुजरातीको सम्पन्न बनाता, और कौन कह सकता है कि मेरी मेहनत करनेकी आदत और देश तथा मातृभाषाके प्रति मेरे असाधारण प्रेमको देखते

हुअे जनसाधारणकी सेवामें मैं और भी बड़ा तथा मूल्यवान् योग न देता?

किसीको यह गलतफहमी नहीं होनी चाहिये कि मैं अंग्रेजी अथवा अुसके श्रेष्ठ साहित्यकी निन्दा करता हूं। 'हरिजन' के स्तम्भ मेरे अंग्रेजीके प्रेमकी काफी गवाही देते हैं। परंतु अुसके साहित्यकी अुच्चता अिंग्लैंडकी ठंडी आबहवा या वहांके दृश्योंकी तरह भारतीय राष्ट्रके काम नहीं आ सकती। भारतका जलवायु, प्राकृतिक सौन्दर्य और साहित्य तीनों अिंग्लैण्डसे घटिया हों तो भी भारतको अपने ही जलवायु, प्राकृतिक सौन्दर्य और अपने ही साहित्यमें फलना-फूलना है। हमको और हमारी सन्तानोंको अपनी ही पैतृक संपत्तिके आधार पर अपनी विरासत बनानी होगी। अगर हम दूसरेकी संपत्ति अुधार लेंगे तो अपनी भी खो बैठेंगे। विदेशी टुकड़ों पर हम कभी बढ़ नहीं सकते। मैं चाहता हूं कि अुस भाषाके रत्नोंको और अुसके ही क्यों, संसारकी अन्य भाषाओंके रत्नोंको भी हम अपनी ही देशी भाषाओंके द्वारा जुटायें। रवीन्द्रनाथकी अद्वितीय रचनाओंकी खूबियोंको जाननेके लिअे मुझे बंगला सीखनेकी जरूरत नहीं होती। मुझे वे अच्छे अनुवादके द्वारा मिल जाती हैं। गुजराती लड़कों और लड़कियोंको टॉल्स्टॉयकी कहानियोंका रसास्वादन करनेके लिअे रूसी भाषा पढ़नेकी आवश्यकता नहीं होती। वे अुन्हें अच्छे अनुवादके द्वारा पढ़ लेते हैं। अंग्रेजोंको अिस बातका फख्र है कि संसारके साहित्यकी अुत्तम रचनायें प्रकाशित होनेके अेक सप्ताहके भीतर सादी अंग्रेजीमें अुस राष्ट्रके हाथोंमें पहुंच जाती हैं। शेक्सपीयर और मिल्टनके अुत्तम विचारों और अुनकी अुत्तम रचनाओं तक पहुंचनेके लिअे मुझे अंग्रेजी सीखनेकी जरूरत क्यों हो?

यह अेक अच्छी मितव्ययिता होगी यदि विद्यार्थियोंकी अेक अैसी श्रेणी अलग कर दी जाय, जिसका काम संसारकी भिन्न भिन्न भाषाओंमें अच्छीसे अच्छी बातें सीखकर देशी भाषाओंमें अुनका अनुवाद कर

देना हो। हमारे शासकोंने हमारे लिअे गलत रास्ता चुना और आदतके कारण गलत रास्ता ही हमें सही दिखाअी देने लगा है।

अिस झूठी और हमें अभारतीय बनानेवाली शिक्षा द्वारा हमारे करोड़ों लोगोंके साथ लगातार और दिन-दिन बढ़ता हुआ जो अन्याय हो रहा है, अुसका प्रमाण मुझे रोज मिलता है। ये ग्रेजुअेट, जो मेरे कीमती साथी हैं, खुद अटक जाते हैं, जब अुन्हें अपने आन्तरिक विचार प्रगट करने होते हैं। वे अपने ही घरोंमें अजनबी हैं। मातृभाषाके शब्दोंका अुनका ज्ञान अितना सीमित है कि वे अंग्रेजी शब्दों और वाक्यों तकका आश्रय लिये बिना अपनी बात हमेशा पूरी नहीं कर सकते। न वे अंग्रेजी पुस्तकोंके बिना रह सकते हैं। वे बहुधा अेक-दूसरेको अंग्रेजीमें लिखते हैं। अपने साथियोंकी बात मैं यह दिखानेको कह रहा हूं कि यह बुराअी कितनी गहरी पैठ गअी है, क्योंकि हमने तो अपना सुधार करनेकी जान-बूझकर कोशिश की है।

यह दलील की जाती है कि कॉलेजके विद्यार्थियोंमें से अेक भी जगदीश बोस निकल सके, तो हमारे कॉलेजोंमें होनेवाली समयकी बरबादीकी हमें चिन्ता नहीं होनी चाहिये। अगर यह बरबादी अनिवार्य होती तो मैं अिस तर्कको खुशीसे मान लेता। परन्तु मुझे आशा है कि मैंने यह बता दिया है कि यह न तो अनिवार्य थी और न है। साथ ही अेक बोसके पैदा होनेकी बातसे अिस तर्कको पोषण नहीं मिलता, क्योंकि बोस मौजूदा शिक्षाकी अुपज नहीं थे। अुन्हें जिन भयंकर बाधाओंके बीच परिश्रम करना पड़ा अुनके बावजूद वे अूंचे अुठे। और अुनका ज्ञान भी आम जनताके लिअे अप्राप्य हो गया। हम यह सोचने लग गये दीखते हैं कि जब तक कोअी अंग्रेजी नहीं जानता, तब तक बोस जैसा बननेकी आशा नहीं रख सकता। अिससे बड़े अन्धविश्वासकी मैं कल्पना नहीं कर सकता। कोअी जापानी अैसी लाचारी अनुभव नहीं कर सकता, जैसी हम करते दिखाअी देते हैं।

शिक्षाका माध्यम तुरन्त और किसी भी कीमत पर बदला जाना चाहिये और प्रान्तीय भाषाओंको अुनका अुचित स्थान मिलना चाहिये। जो दण्डनीय बरबादी नित्य बढ़ती जा रही है, अुसके बजाय मैं यह ज्यादा पसंद करूंगा कि थोड़े अरसेके लिअे अुच्च शिक्षामें अव्यवस्था फैल जाय। प्रान्तीय भाषाओंका दर्जा और आर्थिक मूल्य बढ़ानेके लिअे मैं चाहूंगा कि अदालतोंकी भाषा अुस प्रान्तकी भाषा हो जहां अदालतें स्थित हों। प्रान्तीय विधान-सभाकी कार्रवाअी अुस प्रान्तकी भाषामें होनी चाहिये; और यदि किसी प्रान्तकी सीमाके भीतर अनेक भाषायें हों, तो अुन सारी भाषाओंमें होनी चाहिये। विधान-सभाओंके सदस्योंसे मेरा कहना है कि वे काफी मेहनत करें, तो अेक मासके भीतर अपने प्रान्तोंकी भाषायें समझ सकते हैं। अेक तामिल निवासीके लिअे अैसी कोअी रुकावट नहीं है कि वह तामिल भाषासे सम्बन्धित तेलगु, मलयालम और कन्नड़ भाषाओंका मामूली व्याकरण और कुछ सौ शब्द आसानीसे न सीख सके। केन्द्रमें हिन्दुस्तानीका राज्य होना चाहिये।

मेरी रायमें यह सवाल विद्वानोंके तय करनेका नहीं है। वे यह निर्णय नहीं कर सकते कि किसी स्थानके लड़कों और लड़कियोंको किस भाषाके जरिये शिक्षा दी जाय। अिस प्रश्नका फैसला प्रत्येक स्वतंत्र देशमें अुनके लिअे पहले ही हो चुका है। वे यह भी निश्चय नहीं कर सकते कि क्या क्या विषय सिखाये जायं। यह अुनके देशकी जरूरतों पर निर्भर है। अुन्हें तो बस यही अधिकार प्राप्त है कि वे राष्ट्रकी अिच्छाको अच्छे तरीके पर अमलमें लायें। जब यह देश सचमुच आजाद हो जायगा, तब माध्यमका प्रश्न अेक ही ढंगसे तय होगा। अुसीके अनुसार विद्वान लोग पाठ्यक्रम बनायेंगे और पाठ्यपुस्तकें तैयार करेंगे। और स्वतंत्र भारतकी शिक्षा पाकर निकले हुअे लोग देशकी जरूरतें पूरी करेंगे, जैसे आजकल वे विदेशी शासकोंकी आवश्यकताकी पूर्ति करते हैं। जब तक हम शिक्षित वर्गके लोग अिस

प्रश्नके साथ खिलवाड़ करते रहेंगे, तब तक मुझे अंदेशा है कि हम अपने स्वप्नोंका स्वतंत्र और स्वस्थ भारत निर्माण नहीं कर सकेंगे। हमें कठोर प्रयत्नके द्वारा अपनी गुलामीसे मुक्त होना है, फिर वह चाहे शैक्षणिक हो, चाहे आर्थिक, सामाजिक अथवा राजनीतिक। तीन-चौथाअी लड़ाअी अिस प्रयत्नकी ही है।

हरिजन, ९–७–'३८

शीघ्र कदम अुठानेकी जरूरत

यदि माध्यम धीरे-धीरे न बदल कर तुरन्त बदल दिया जाय, तो आवश्यकताकी पूर्तिके लिअे हमें बहुत ही थोड़े समयमें पाठ्य-पुस्तकें और शिक्षक दोनों मिल जायेंगे। और अगर हममें लगन हो तो अेक वर्षके भीतर पता लग जायगा कि अेक विदेशी माध्यमके द्वारा संस्कृतिकी बुनियादी बातें सीखनेके प्रयत्नमें राष्ट्रका समय और शक्ति बरबाद करनेके दुःखद काममें शरीक होना हमारे लिअे कभी भी जरूरी नहीं था। बेशक, सफलताकी शर्त यह है कि प्रान्तीय भाषायें सरकारी दफ्तरों और न्यायालयोंमें तुरन्त जारी कर दी जायं, बशर्ते प्रान्तीय सरकारोंका अदालतों पर अधिकार या प्रभाव हो। अगर अिस सुधारकी आवश्यकतामें हमारा विश्वास है, तो हम अुसे आनन-फाननमें कर सकते हैं।

हरिजन, ३०–७–'३८

मातृभाषा द्वारा हुनर-विज्ञानकी शिक्षा

गांधीजीने अिस बातसे अपनी असहमति जाहिर की कि मातृ-भाषाके माध्यम द्वारा हुनर-विज्ञानकी शिक्षा दे सकनेके लिअे हमें बहुतसी खोज और तैयारीकी जरूरत होगी। जो लोग अिस तरहका तर्क करते हैं अुन्हें पता नहीं है कि हमारे गांवकी बोलियोंमें शब्दों और मुहावरोंके कैसे कैसे बहुमूल्य रत्न छिपे पड़े हैं। गांधीजीकी रायमें बहुतसे शब्दोंकी खोजमें संस्कृत या फारसीके पास जानेकी

आवश्यकता नहीं है। अुन्होंने कहा कि जब मैं चम्पारनमें था, तब मैंने देखा था कि वहांके देहाती लोग अेक भी विदेशी शब्द या मुहावरेकी मददके बिना अपने विचार पूरी तरह आसानीके साथ प्रकट कर सकते थे। अुनकी सूझके अुदाहरणके रूपमें गांधीजीने 'हवागाड़ी' शब्दका जिक्र किया, जो अुन्होंने मोटरकारके लिअे गढ़ रखा था।

हरिजन, १८–८–'४६

मातृभाषा बुनियादी वस्तु है

मेरी मातृभाषामें कितनी ही कमियां हों, फिर भी मैं अुससे अपनी माताकी छातीकी तरह चिपटा रहूंगा। वही मुझे प्राणदायक दूध दे सकती है।

हरिजन, २५–८–'४६

१५

राष्ट्रभाषा और लिपि

हिन्दी — भारतकी राष्ट्रभाषा

जैसे हमने शिक्षाके माध्यमका विचार किया है, वैसे ही हमें राष्ट्रभाषाके प्रश्न पर भी ध्यान देना चाहिये। अगर अंग्रेजीको राष्ट्र-भाषा बनना है, तो वह अेक अनिवार्य विषय समझी जानी चाहिये। परन्तु क्या अंग्रेजी राष्ट्रभाषा बन सकती है? कुछ विद्वान देशभक्तोंका कहना है कि यह सवाल अुठाना ही अज्ञान प्रगट करना है। अुनके मतसे अंग्रेजी पहलेसे ही अुस स्थान पर विराजमान है। माननीय वाअिसरॉय महोदयने अपने हालके भाषणमें सिर्फ आशामात्र प्रगट की है कि अंग्रेजीको वह स्थान प्राप्त हो जायगा। परन्तु अुनका अुत्साह अुतनी दूर तक नहीं जाता जितना अिन देशभक्तोंका। वाअिसरॉय महोदयका विश्वास है कि अंग्रेजीका स्थान दिन-दिन बढ़ेगा, वह

हमारे घरोंमें फैल जायगी और अन्तमें अुसे राष्ट्रभाषाका दर्जा मिल जायगा। अूपर अूपरसे विचार करने पर वाअिसरॉयके कथनका समर्थन होता मालूम होगा। हमारे शिक्षित वर्गोंकी हालत देखकर यह खयाल होता है कि अगर हम अंग्रेजीका अिस्तेमाल बन्द कर दें तो हमारे सब कामकाज ठप हो जायंगे। परंतु गहरे विचारसे सिद्ध हो जायगा कि अंग्रेजी भारतकी राष्ट्रभाषा न कभी हो सकती है और न होनी चाहिये। राष्ट्रभाषाकी कसौटी क्या है?

(१) सरकारी कर्मचारियोंके लिअे वह सीखनेमें आसान होनी चाहिये।

(२) अुस भाषामें भारतका आपसी धार्मिक, व्यापारिक और राजनीतिक कामकाज देश भरमें सम्भव होना चाहिये।

(३) वह भारतके अधिकांश निवासियोंकी बोली होनी चाहिये।

(४) सारे देशके लिअे अुसका सीखना सरल होना चाहिये।

(५) अिस प्रश्नका विचार करते समय क्षणिक या अस्थायी परिस्थितियों पर जोर नहीं देना चाहिये।

अंग्रेजी भाषा अुपरोक्त शर्तोंमें से अेक भी शर्त पूरी नहीं करती। पहली शर्त अंतिम होनी चाहिये थी, परन्तु मैंने जान-बूझकर अुसे प्रथम स्थान दिया है। क्योंकि अैसा आभास होता है कि अंग्रेजी भाषामें वह लक्षण है। परन्तु अधिक विचार करने पर हमें मालूम हो जाना चाहिये कि आज भी सरकारी कर्मचारियोंके लिअे वह कोअी आसान भाषा नहीं है। हमारी शासन-योजनामें यह मान लिया गया है कि अंग्रेज कर्मचारियोंकी संख्या दिन-दिन घटेगी और अन्तमें अंग्रेज कर्मचारियोंमें केवल वाअिसरॉय और दूसरे मुट्ठी भर लोग ही रह जायंगे। आज भी अधिकांश भारतीय हैं और अुनकी संख्या अवश्य बढ़ेगी। अिसे सभी स्वीकार करेंगे कि अुनके लिअे किसी भी देशी

भाषाकी अपेक्षा अंग्रेजी सीखना ज्यादा मुश्किल है। दूसरी शर्तकी जांच करने पर हमें पता चलता है कि जब तक आम जनता अंग्रेजी नहीं बोल सकती, तब तक अुस भाषाके द्वारा धार्मिक कामकाज होना असम्भव है। और जनसाधारणमें अुस हद तक अंग्रेजीका फैलना भी नामुमकिन मालूम होता है।

अंग्रेजी तीसरी शर्तको भी पूरा नहीं कर सकती, क्योंकि भारतमें अधिकांश लोग अुसे नहीं बोल सकते।

चौथी शर्त भी अंग्रेजीसे पूरी नहीं हो सकती, क्योंकि सारे भारतके लिअे सीखनेमें वह कोअी आसान भाषा नहीं है।

आखिरी शर्तका विचार करते हुअे हम देखते हैं कि अंग्रेजीको जो स्थान आज प्राप्त है वह क्षणिक है। स्थायी स्थिति यह है कि राष्ट्रीय कामकाजमें अंग्रेजीकी बहुत कम जरूरत होगी। बेशक, साम्राज्यके कामकाजके लिअे अुसकी आवश्यकता होगी और अिसलिअे वह साम्राज्यकी भाषा, कूटनीतिकी भाषा होगी। पर वह अेक अलग प्रश्न है। अिस कामके लिअे अुसका ज्ञान आवश्यक है। हमें अंग्रेजीसे द्वेष नहीं है। हमारा कहना अितना ही है कि अुसे अपने अुचित क्षेत्रसे आगे नहीं जाने देना चाहिये। और चूंकि वह साम्राज्यकी भाषा होगी, अिसलिअे हम अपने मालवीयजी, शास्त्रीजी और बनर्जी आदिको अुसे सीखनेके लिअे मजबूर करेंगे। और यह विश्वास रखेंगे कि वे संसारके अन्य भागोंमें भारतकी कीर्ति फैलायेंगे। परन्तु अंग्रेजी भारतकी राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती। अुसे यह स्थान देना 'अेस्पेरन्टो' दाखिल करनेके प्रयत्न जैसा है। मेरी रायमें यह कल्पना ही कि अंग्रेजी हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है, हमारी निर्बलताकी सूचक है। अेस्पेरन्टोको जारी करनेका प्रयत्न निरा अज्ञान प्रगट करता है। तो फिर वह भाषा कौनसी है जो अिन पांच शर्तोंको पूरा करती है? हमें मानना पड़ेगा कि हिन्दी अिन सब शर्तोंको पूरा करती है।

मैं अुस भाषाको हिन्दी कहता हूं, जिसे अुत्तर भारतके हिन्दू और मुसलमान बोल सकते हैं और जो देवनागरी या अुर्दू लिपिमें लिखी जाती है। अिस व्याख्या पर थोड़ी आपत्ति की गअी है। दलील यह की जाती है कि हिन्दी और अुर्दू भिन्न भाषायें हैं। यह वाजिब दलील नहीं है। भारतके अुत्तरी भागोंमें मुसलमान और हिन्दू अेक ही जबान बोलते हैं। भेद पढ़े-लिखे वर्गोंने पैदा किया है। विद्वान् हिन्दुओंने हिन्दीको संस्कृतमय बना दिया है। अिसलिअे मुसलमान अुसे नहीं समझ पाते। लखनअूके मुसलमानोंने अपनी भाषाको फारसीमय करके हिन्दुओंकी समझमें आने लायक नहीं रखा है। अिस अेक ही भाषाके ये दो अुग्र रूप हैं। आम लोगोंकी बोलीमें अुनकी कोअी जगह नहीं है। मैं अुत्तरमें रहा हूं। मैं हिन्दुओं और मुसलमानोंसे आजादीके साथ मिला हूं और मेरा हिन्दीका ज्ञान तो बहुत थोड़ा है। लेकिन अुनके साथ व्यवहार करनेमें मुझे कभी कोअी कठिनाअी नहीं मालूम हुअी। अुत्तरकी भाषाको आप अुर्दू या हिन्दी कुछ भी कहिये, है वह अेक ही। अगर आप अुसे अुर्दू अक्षरोंमें लिखें तो अुर्दू मान लीजिये। अुसीको नागरी लिपिमें लिख दीजिये तो वह हिन्दी हो जायगी।

अिसलिअे लिपिका भेद रह जाता है। फिलहाल मुसलमान लड़के बेशक अुर्दू लिपिमें लिखेंगे और हिन्दू ज्यादातर देवनागरीमें। 'ज्यादातर' मैं अिसलिअे कहता हूं कि हजारों हिन्दू अुर्दू लिपि काममें लेते हैं और कुछ तो नागरी लिपि जानते तक नहीं हैं। परन्तु जब हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच कोअी शंका-संदेह नहीं रह जायगा, जब अविश्वास पैदा करनेवाले कारण दूर हो जायंगे, तो जिस लिपिमें अधिक प्राण-शक्ति होगी वह अधिक व्यापक रूपमें अिस्तेमाल की जायगी और अिसलिअे राष्ट्रीय लिपि बन जायगी। अिस बीच जो हिन्दू और मुसलमान अपनी अर्जियां अुर्दू अक्षरोंमें लिखना चाहते हैं, अुन्हें अैसा करनेकी स्वतंत्रता होनी चाहिये और हक होना चाहिये कि राष्ट्रके स्थानोंमें अुन्हें स्वीकार किया जाये।

अिन पांचों शर्तोंको पूरा करनेमें हिन्दीकी बराबरी करनेवाली और कोअी भाषा नहीं है। हिन्दीके बाद बंगला आती है। परन्तु बंगालके बाहर खुद बंगाली भी हिन्दीको काममें लेते हैं। हिन्दी-भाषी मनुष्यको, चाहे वह कहीं भी जाय, हिन्दी काममें लेते देखकर किसीको आश्चर्य नहीं होता। हिन्दू धर्म-प्रचारक और मुसलमान मौलवी अपने धार्मिक प्रवचन हिन्दुस्तान भरमें हिन्दी और अुर्दूमें करते हैं और निरक्षर साधारण जन तक अुन्हें समझते हैं। बेपढ़े-लिखे गुजराती अुत्तरमें जाते हैं तो चन्द हिन्दी शब्द काममें लेनेकी कोशिश करते हैं, जब कि अुत्तरका अेक दरबान अपने मालिकसे भी गुजरातीमें नहीं बोलता, अिसलिअे अुसके मालिकको अुससे टूटी-फूटी हिंदीमें बात करनी पड़ती है। मैंने द्रविड़ देशमें भी हिन्दी बोली जाती सुनी है। यह कहना सही नहीं है कि मद्रासमें अंग्रेजीसे काम चल सकता है। मैंने वहां भी हिन्दीका सफल प्रयोग किया है। रेलगाड़ियोंमें बेशक मैंने मद्रासी मुसाफिरोंको हिन्दी बोलते सुना है। यह ध्यान देने लायक बात है कि मुसलमान सारे भारतमें अुर्दू बोलते हैं और वे हर प्रान्तमें बड़ी संख्यामें पाये जाते हैं। अिस प्रकार राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही होगी। भूतकालमें हमने अुसका यह अुपयोग किया है। अुर्दूकी अुत्पत्तिका भी यही कारण है। मुसलमान बादशाह फारसी या अरबीको राष्ट्रभाषा बनानेमें असमर्थ रहे। अुन्होंने हिन्दी व्याकरणको स्वीकार कर लिया, परन्तु अपनी भाषामें वे अुर्दू लिपि और फारसी शब्द अिस्तेमाल करने लगे। परन्तु वे अेक विदेशी भाषाके द्वारा आम लोगोंके साथ अपना व्यवहार नहीं चला सके। ये सब बातें अंग्रेजोंकी जानकारीसे बाहर नहीं हैं। जो सिपाहियोंके बारेमें कुछ भी जानते है, अुन्हें मालूम है कि अुनके लिअे फौजी शब्द हिन्दी या अुर्दूमें तैयार करने पड़े हैं। अिस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी ही राष्ट्रभाषा बन सकती है। मद्रासके पढ़े-लिखे वर्गोंके लिअे अिससे कुछ कठिनाअी अुपस्थित होती है। दक्षिण, गुजरात, सिन्ध और बंगालवालोंके लिअे

यह काफी आसान है। कुछ ही महीनोंमें हिन्दी पर अुनका अितना प्रभुत्व हो सकता है कि वे अुस भाषामें राष्ट्रीय व्यवहार कर सकें। तामिल लोगोंकी यह बात नहीं है। द्राविड़ी भाषायें रचना और व्याकरणमें अपनी बहन संस्कृतसे भिन्न हैं। संस्कृत भाषा और द्राविड़ भाषाओंके बीच सामान्य वस्तु अेक यही है कि अमुक हद तक अुनका शब्द-भण्डार संस्कृतका है। परन्तु यह कठिनाअी पढ़े-लिखे वर्ग तक ही सीमित है। हमें अुनकी देशप्रेमकी भावनासे अपील करनेका और यह आशा रखनेका हक है कि वे हिन्दी सीखनेके लिअे काफी कोशिश करेंगे। कारण, भविष्यमें जब हिन्दीको राज्यकी मान्यता मिल जायगी तब अुसे अन्य प्रान्तोंकी भांति मद्रासमें भी अनिवार्य भाषाके रूपमें जारी कर दिया जायगा और तब मद्रासमें और अुनमें परस्पर व्यवहार बढ़ जायगा। अंग्रेजी द्राविड़ी जनतामें प्रवेश नहीं कर सकी है। लेकिन हिन्दीको अिसमें समय नहीं लगेगा।

स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी, पृष्ठ ३९५-९९;
२०–१०–’१७

हिन्दुस्तानीकी जरूरत

मैंने प्रत्येक विद्यार्थीको यह सलाह देनेका साहस किया है कि वह हमारी परीक्षाका यह साल सूत तैयार करने और हिन्दुस्तानी सीखनेमें लगाये। मैं कलकत्तेके विद्यार्थियोंको धन्यवाद देता हूं कि अुन्होंने अिस सुझावके प्रति सहानुभूति दिखाअी है। बंगाल और मद्रास ही दो अैसे प्रान्त हैं, जो हिन्दुस्तानी न जाननेके कारण शेष भारतसे कटे हुअे हैं। बंगाल अिसलिअे कि वह भारतकी और कोअी भाषा सीखनेके खिलाफ है और मद्रास अिसलिअे कि द्राविड़ियोंको हिन्दुस्तानी सीखनेमें कठिनाअी होती है। औसत बंगाली तीन घंटे रोज दे, तो सचमुच दो महीनेमें हिन्दुस्तानी सीख सकता है, और द्राविड़ी अुसी हिसाबसे छह महीनेमें। अुतने ही समयमें कोअी बंगाली या

द्राविड़ी यही परिणाम अंग्रेजीके विषयमें प्राप्त करनेकी आशा नहीं रख सकता। अंग्रेजीके ज्ञानसे थोड़ेसे अंग्रेजी जाननेवाले भारतीयोंके साथ संपर्क हो सकता है, जब कि हिन्दुस्तानीका ज्ञान होनेसे हम अपने देशके अधिकसे अधिक लोगोंके साथ सम्पर्क रख सकते हैं। मुझे जरूर आशा है कि बंगाली या द्राविड़ी भाअी अगली कांग्रेसमें हिन्दुस्तानीकी कामचलाअू जानकारी लेकर आयेंगे। जब तक हमारी सबसे बड़ी सभा अुस भाषामें नहीं बोलती जिसे अधिकसे अधिक लोग समझ सकते हैं, तब तक वह जनसाधारणके लिअे सच्चा पदार्थ-पाठ नहीं बन सकती। मैं द्राविड़ियोंकी मुश्किलको समझता हूं, परन्तु अुनकी परिश्रमशील देशभक्तिके सामने कोअी चीज कठिन नहीं है।

यंग अिंडिया, २–२–'२१

हिन्दुस्तानी सीखनेकी अपील

आपने, मैंने और हम सबने अुस सच्ची शिक्षाकी अुपेक्षा की है, जो हमें अपनी राष्ट्रीय पाठशालाओंमें मिलनी चाहिये थी। बंगालके युवकों, गुजरातके युवकों और दक्षिणके नौजवानोंके लिअे मध्यप्रदेश, अुत्तरप्रदेश, पंजाब और भारतके अुन तमाम विशाल भूभागोंमें जाना असम्भव है, जो हिन्दुस्तानीके सिवा और कोअी भाषा नहीं बोलते ; और अिसलिअे मैं आप सबसे अपनी फुरसतके समयमें हिन्दुस्तानी भी सीखनेके लिअे कहता हूं। क्षण भरके लिअे भी यह न सोचिये कि आप अंग्रेजीको आम लोगोंके व्यवहारका सामान्य माध्यम बना सकते हैं। बाअीस करोड़ भारतीय हिन्दुस्तानी भाषा जानते हैं — अुन्हें और कोअी भाषा नहीं आती। और अगर आप अुनके दिलोंमें प्रवेश करना चाहते हों, तो अिसके लिअे हिन्दुस्तानी ही अेक भाषा है।

यंग अिंडिया, २–२–'२१

हिन्दी भाषाकी सम्पन्नता

आप हिन्दी साहित्यकी गरीबीकी बात करते हैं — वर्तमान हिन्दीकी गरीबीकी बात करते हैं, लेकिन अगर आप तुलसीदासकी रामायणमें गहरा गोता लगायें, तो शायद आप मुझसे सहमत होंगे कि कोअी और पुस्तक अैसी नहीं है जो आधुनिक भाषाओंमें संसारके साहित्यमें अिसकी बराबरी कर सके। अिस अेक पुस्तकने मुझे वह श्रद्धा और आशा प्रदान की है जो और किसी पुस्तकने नहीं की। मेरे खयालसे यह अैसी पुस्तक है जो साहित्यिक लालित्यमें, कवित्वमें और धार्मिक भावोंकी गहराअीमें किसी भी आलोचना और किसी भी परीक्षामें टिक सकती है।

यंग अिंडिया, ९–२–'२१

हिन्दुस्तानी और मातृभाषा

गांधीजीने कहा कि यह भय प्रगट किया गया है कि राष्ट्र-भाषाका प्रचार प्रान्तीय भाषाओंके लिअे हानिकर सिद्ध होगा। अिस डरकी जड़ अज्ञान है। प्रान्तीय भाषाअें ही वह मजबूत बुनियाद हैं, जिस पर राष्ट्रभाषाकी अिमारत खड़ी होनी चाहिये। दोनों अेक-दूसरेकी पूर्तिके लिअे हैं, न कि अेक-दूसरेका स्थान लेनेके लिअे।

हरिजन, १८–८–'४६

अेक सामान्य लिपि

अगर हमें अेक राष्ट्र होनेका अपना दावा सिद्ध करना है, तो हमारी अनेक बातें अेकसी होनी चाहिये। भिन्न-भिन्न धर्म और सम्प्रदायोंको अेक सूत्रमें बांधनेवाली हमारी अेक सामान्य संस्कृति है। हमारी त्रुटियां और बाधायें भी अेकसी हैं। मैं यह बतानेकी कोशिश कर रहा हूं कि हमारी पोशाकके लिअे अेक ही तरहका कपड़ा न केवल वांछनीय है, बल्कि आवश्यक भी है। हमें अेक सामान्य

भाषाकी भी जरूरत है, देशी भाषाओंकी जगह पर नहीं परन्तु अुनके सिवा। अिस बातमें साधारण सहमति है कि यह माध्यम हिन्दुस्तानी ही होना चाहिये, जो हिन्दी और अुर्दूके मेलसे बने और जिसमें न तो संस्कृतकी और न फारसी या अरबीकी ही भरमार हो। हमारे रास्तेकी सबसे बड़ी रुकावट हमारी देशी भाषाओंकी कअी लिपियां हैं। अगर अेक सामान्य लिपि अपनाना संभव हो, तो अेक सामान्य भाषाका हमारा जो स्वप्न है — अभी तो वह स्वप्न ही है — अुसे पूरा करनेके मार्गकी अेक बड़ी बाधा दूर हो जायगी।

भिन्न-भिन्न लिपियोंका होना कअी तरहसे बाधक है। वह ज्ञानकी प्राप्तिमें अेक कारगर रुकावट है। आर्य भाषाओंमें अितनी समानता है कि अगर भिन्न-भिन्न लिपियां सीखनेमें बहुतसा समय बरबाद न करना पड़े, तो हम सब किसी बड़ी कठिनाअीके बिना कअी भाषाअें जान लें; अुदाहरणके लिअे, जो लोग संस्कृतका थोड़ा भी ज्ञान रखते हैं, अुनमें से अधिकांशको रवीन्द्रनाथ टागोरकी अद्वितीय कृतियोंको समझनेमें कोअी कठिनाअी न हो, अगर वे सब देवनागरी लिपिमें छपें। परन्तु बंगला लिपि मानो गैर-बंगालियोंके लिअे 'दूर रहो' की सूचना है। अिसी तरह यदि बंगाली लोग देवनागरी लिपि जानते हों, तो वे तुलसीदासकी रचनाओंकी अद्भुत सुन्दरता और आध्यात्मिकताका तथा अन्य अनेक हिन्दुस्तानी लेखकोंका आनन्द अनायास लूट सकते हैं। जब मैं १९०५ में भारत लौटा तब मुझे अेक संस्थाका अेक खत मिला, जिसका मुख्य केन्द्र मेरे खयालसे कलकत्तेमें था और जिसका अुद्देश्य सारे भारतके लिअे अेक सामान्य लिपिका समर्थन करना था। मैं अुस संस्थाकी प्रवृत्तियोंको नहीं जानता, परन्तु अुसका अुद्देश्य अच्छा है और थोड़ेसे लगनवाले कार्यकर्ता अिस दिशामें बहुतसा ठोस काम कर सकते हैं। मर्यादायें तो स्पष्ट ही हैं। समस्त भारतके लिअे अेक सामान्य लिपि अेक दूरका आदर्श है। परन्तु जो भारतीय संस्कृतसे अुत्पन्न भाषायें और दक्षिणकी भाषायें बोलते हैं, अुन सबके

लिअे अेक सामान्य लिपि अेक व्यावहारिक आदर्श है, अगर हम सिर्फ अपनी-अपनी प्रान्तीयता छोड़ दें। अुदाहरणके लिअे, किसी गुजरातीका गुजराती लिपिसे चिपटे रहना अच्छी बात नहीं है। प्रान्त-प्रेम वहां अच्छा है, जहां वह अखिल भारतीय देश-प्रेमकी बड़ी धाराको पुष्ट करता है। अिसी प्रकार अखिल भारतीय प्रेम भी अुसी हद तक अच्छा है, जहां तक वह विश्वके और भी बड़े लक्ष्यकी पूर्ति करता है। परन्तु जो प्रान्त-प्रेम यह कहता है कि "भारत कुछ नहीं; गुजरात ही सर्वस्व है", वह बुरी चीज है। मैंने गुजरातको अिसलिअे चुना है कि अुसकी बीचकी स्थिति है और मैं खुद गुजराती हूं। गुजरातमें, कुछ सौभाग्यसे, जिन्होंने प्रारंभिक शिक्षाके सिद्धान्त निश्चित किये, अुन्होंने देवनागरी लिपिको अनिवार्य करनेका निर्णय किया। अिसलिअे प्रत्येक गुजराती लड़का या लड़की, जो किसी पाठशालासे निकला है, गुजराती और देवनागरी दोनों लिपियां जानता है। अगर समितिने शुद्ध नागरी लिपिका ही फैसला किया होता तो और भी बेहतर होता। बेशक, अनुसंधान करनेवाले तो फिर भी पुरानी पाण्डु-लिपियोंकी शोधके लिअे गुजराती लिपि सीखते ही। परन्तु गुजराती लड़कोंको दोके बजाय अेक ही लिपि सीखनी पड़ती, तो अुनकी शक्ति और अधिक अुपयोगी श्रमके लिअे बच जाती। जिस समितिने महाराष्ट्रके लिअे शिक्षा-योजना निश्चित की, वह अधिक विचारवान थी और अुसने केवल देवनागरी लिपिकी ही जरूरत समझी। फल यह हुआ है कि जहां तक सिर्फ पढ़नेका संबंध है, अेक महाराष्ट्री तुलसीदासको — पढ़नेकी हद तक — अुतनी ही आसानीसे पढ़ता है जितनी आसानीसे तुकारामको, और गुजराती तथा हिन्दुस्तानी लोग भी तुकारामको अुतनी ही आसानीसे पढ़ते हैं। परन्तु बंगालकी समितिने दूसरा ही निर्णय किया और फल जो हुआ है वह हम सब जानते हैं, और हममें से बहुतोंको अुस पर दुःख है। भारतकी सबसे सम्पन्न देशी भाषाके रत्न बंगालियोंके लिअे मानो जान-बूझकर दुर्लभ बना

दिये गये हैं। मैं मानता हूं कि अिस बातका कोअी प्रत्यक्ष प्रमाण देनेकी जरूरत नहीं कि देवनागरी ही सर्वसामान्य लिपि होनी चाहिये, क्योंकि अुसके पक्षमें निर्णायक बात यह है कि अुसे भारतके अधिकांश भागके लोग जानते हैं।

ये विचार मेरे मनमें अिसलिअे अुत्पन्न होते हैं कि मेरी कटक यात्रामें मुझसे अेक व्यावहारिक प्रश्न हल करनेका अनुरोध किया गया था। वहां अेक अैसी जाति है जो बिहारके हिन्दी-भाषी लोगों और अुड़ीसाके अुड़िया बोलनेवाले लोगोंके बीचमें आती है। अुसके बच्चोंकी शिक्षाके लिअे क्या किया जाय? अुन्हें हिन्दीके द्वारा पढ़ाया जाय या अुड़ियाके द्वारा? या अुन्हें अपनी ही बोलीमें शिक्षा दी जाय? और अुनकी अपनी बोलीमें दी जाय, तो लिपि देवनागरी हो या कोअी नयी आविष्कृत लिपि? अुत्कलवासियोंका पहला विचार यह हुआ कि अिस कबीलेको अुड़िया लोगोंमें पचा लिया जाय। बिहारी अुन्हें बिहारमें मिलाना चाहेंगे और अगर कबीलेके बुजुर्गोंकी सलाह ली जाय, तो कुदरती तौर पर शायद वे यही कहेंगे कि अुनकी बोली अुतनी ही अच्छी है जितनी अुड़िया या बिहारी है; बस अुसके लिअे अेक लिपि तय कर देना चाहिये। यदि नयी लिपिका आविष्कार न किया जाय — वैसे यह हो सकता है, और आधुनिक कालमें अिसके दो अुदाहरण तो मुझे भी मालूम हैं — तो अुड़िया या देवनागरीमें से कौनसी अपनायी जाय, अिसका निर्णय वे चित-पट करके कर लेंगे। सारे भारतकी दृष्टिसे सोचनेका प्रयत्न करते हुअे मैंने अपने मित्रोंको सुझाया कि अुनका अुड़िया-भाषी लोगोंमें अुड़िया भाषाको मजबूत करना तो अुचित है, पर अिस कबीलेके बच्चोंको हिन्दी सिखानी चाहिये और, जैसा कि स्वाभाविक है, लिपि देवनागरी होनी चाहिये। जो वृत्ति अितनी वर्जनशील और संकीर्ण हो कि हर बोलीको चिरस्थायी बनाना और विकसित करना चाहती हो, वह राष्ट्र-विरोधी और विश्व-विरोधी है। मेरी विनम्र सम्मतिमें तमाम अविकसित और

अलिखित बोलियोंका बलिदान करके अुन्हें हिन्दुस्तानीकी बड़ी धारामें मिला देना चाहिये। यह आत्मोत्कर्षके लिअे की गयी कुर्बानी होगी, आत्महत्या नहीं। अगर हमें सुसंस्कृत भारतके लिअे अेक सामान्य भाषा बनानी हो, तो हमें भाषाओं और लिपियोंकी संख्या बढ़ानेवाली या देशकी शक्तियोंको छिन्न-भिन्न करनेवाली किसी भी क्रियाका बढ़ना रोकना होगा। हमें अेक सामान्य भाषाकी वृद्धि करनी होगी। जैसा कि स्वाभाविक है, हमें लिपिसे शुरुआत करनी चाहिये और जब तक हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न हल नहीं हो जाय तब तक अिस सुधारको हिन्दू भारत तक ही सीमित रखना चाहिये। अगर मेरी चले तो जमी हुअी प्रान्तीय लिपिके साथ-साथ मैं सब प्रान्तोंमें देवनागरी लिपि और अुर्दू लिपिका सीखना अनिवार्य कर दूं और विभिन्न देशी भाषाओंकी मुख्य-मुख्य पुस्तकोंको अुनके शब्दशः हिन्दुस्तानी अनुवादके साथ देवनागरीमें छपवा दूं।

यंग अिंडिया, २७–८–'२५

रोमन लिपि

अुर्दू और नागरी लिपियोंके बजाय रोमन लिपि अपनानेके बारेमें मेरी राय यह है कि यह प्रस्ताव कितना ही आकर्षक मालूम हो, फिर भी अैसा करना घातक भूल होगी और हम कुअेंसे निकलकर खाअीमें पड़ जायंगे।

हरिजन, २३–३–'४७

१६

दूसरी भाषाअें

प्रत्येक सुसंस्कृत भारतवासीको अपनी ही प्रान्तीय भाषाके सिवा, वह हिन्दू हो तो संस्कृत, मुसलमान हो तो अरबी, पारसी हो तो फारसी जाननी चाहिये और सबको हिन्दी जाननी चाहिये। कुछ हिन्दुओंको अरबी और फारसी आनी चाहिये और कुछ मुसलमानों और पारसियोंको संस्कृत। कअी अुत्तर भारतीयों और पश्चिम भारतीयोंको तामिल सीखनी चाहिये। सारे भारतके लिअे सार्वत्रिक भाषा हिन्दी होनी चाहिये और अुसे फारसी या नागरी अक्षरोंमें लिखनेकी छूट होनी चाहिये। हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच निकट संबंध रहे, अिसके लिअे दोनों लिपियोंका जानना जरूरी है।

हिन्द स्वराज्य (१९०८), पृष्ठ १०७

अुस समय मैंने जो थोड़ीसी संस्कृत सीखी थी, वह न सीखी होती तो मुझे अपने धर्म-ग्रंथोंमें थोड़ी भी दिलचस्पी लेना मुश्किल होता। वस्तुतः मुझे गहरा दुःख है कि मैं अिस भाषाका अधिक पूर्ण ज्ञान प्राप्त न कर सका, क्योंकि मैंने तबसे अनुभव कर लिया है कि प्रत्येक हिन्दू बालक और बालिकाको संस्कृतका अच्छा ज्ञान होना चाहिये।

अब मेरी राय है कि अुच्च शिक्षाके सब भारतीय पाठ्यक्रमोंमें हिन्दी, संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेजीके लिअे स्थान होना चाहिये। प्रान्तीय भाषा तो रहे ही। अिस बड़ी सूचीको देखकर किसीको डरनेकी जरूरत नहीं है। यदि हमारी शिक्षा अधिक व्यवस्थित हो और लड़के अेक विदेशी माध्यमके द्वारा अपने विषय सीखनेके भारसे मुक्त हों, तो मुझे विश्वास है कि अिन सब भाषाओंका सीखना

अरुचिकर नहीं, बल्कि संपूर्ण आनन्दका विषय होगा। अेक भाषाके शास्त्रीय ज्ञानसे दूसरी भाषाओंका जानना बहुत आसान हो जाता है।

आत्मकथा (१९२६), पृष्ठ ३०

अंग्रेजीका स्थान

अंग्रेजी आन्तर-राष्ट्रीय व्यापारकी भाषा है, कूटनीतिकी भाषा है, अुसमें अनेक बढ़िया साहित्यिक रत्न भरे हैं और अुसके द्वारा हमें पाश्चात्य विचार और संस्कृतिका परिचय होता है। अिसलिअे हममें से कुछ लोगोंके लिअे अंग्रेजी जानना जरूरी है। वे राष्ट्रीय व्यापार और आन्तर-राष्ट्रीय कूटनीतिके विभाग चला सकते हैं और राष्ट्रको पश्चिमका अुत्तम साहित्य, विचार और विज्ञान दे सकते हैं। यह अंग्रेजीका अुचित अुपयोग होगा। आजकल तो अंग्रेजीने हमारे हृदयोंमें सबसे प्रिय स्थान जबरदस्ती छीनकर हमारी मातृभाषाओंको सिंहासन-च्युत कर दिया है। अंग्रेजोंके साथ हमारे बराबरीके संबंध न होनेके कारण वह अिस अस्वाभाविक स्थान पर बैठ गयी है। अंग्रेजीके ज्ञानके बिना ही भारतीय मस्तिष्कका अुच्चसे अुच्च विकास संभव होना चाहिये। हमारे लड़कों और लड़कियोंको यह सोचनेमें प्रोत्साहन देना कि अंग्रेजी जाने बिना अुत्तम समाजमें प्रवेश करना असंभव है, भारतके पुरुष-समाजके और खास तौर पर नारी-समाजके प्रति हिंसा करना है। यह विचार अितना अपमानजनक है कि सहन नहीं किया जा सकता। अंग्रेजीके मोहसे छुटकारा पाना स्वराज्यके लिअे अेक जरूरी शर्त है।

यंग अिंडिया, २–२–'२१

मैं जानता हूं कि अंग्रेजी और हिन्दीकी यह कशमकश लगभग चिरस्थायी है। जब जब मैंने विद्यार्थियोंकी सभामें भाषण दिया है, तब तब मुझे अंग्रेजीमें बोलनेकी मांग पर आश्चर्य हुआ है। आप जानते हैं या आपको जानना चाहिये कि मैं अंग्रेजी भाषाका प्रेमी

हूं। परंतु मेरा यह विश्वास जरूर है कि भारतके विद्यार्थी, जिनसे यह आशा रखी जाती है कि वे करोड़ों लोगोंके साथ अपना भाग्य मिलाकर अुनकी सेवा करेंगे, अगर अंग्रेजीकी अपेक्षा हिन्दीकी तरफ अधिक ध्यान दें तो वे अधिक योग्यता हासिल करेंगे। मैं यह नहीं कहता कि आपको अंग्रेजी नहीं सीखनी चाहिये; शौकसे सीखिये। परंतु जहां तक मुझे दिखाअी देता है, वह लाखों हिन्दुस्तानी घरोंकी भाषा नहीं हो सकती। वह हजारों या बहुत हुआ तो कुछ लाख तक पहुंचेगी। परंतु करोड़ों तक नहीं पहुंचेगी।

हरिजन, १७–११–’३३

अंग्रेजी भाषासे, अुसके अपने स्थान पर, मैं प्रेम करता हूं। परंतु यदि वह अैसा स्थान हड़प लेती है जो अुसका नहीं है, तो मैं अुसका कट्टर विरोधी हूं। अंग्रेजी आजकल मानी हुअी विश्वभाषा है। अिसलिअे मैं अुसे दूसरी वैकल्पिक भाषाका स्थान दूंगा, परंतु पाठ-शालाकी पढ़ाअीमें नहीं, विश्वविद्यालयकी पढ़ाअीमें दूंगा। अंग्रेजी थोड़ेसे चुने हुअे लोगोंके लिअे ही हो सकती है, करोड़ोंके लिअे नहीं। आज तो जब हमारे पास मुफ्त और अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा तक जारी करनेके लिअे साधन नहीं हैं, तब हम अंग्रेजी सिखानेका प्रबंध कैसे कर सकते हैं? रूसने अंग्रेजीके बिना ही अपनी सारी वैज्ञानिक प्रगति कर ली है। यह हमारी मानसिक दासता है कि हम समझते हैं कि अंग्रेजीके बिना हमारा काम नहीं चल सकता। मैं अिस पराजयकी भावनावाले विचारको कभी स्वीकार नहीं कर सकता।

हरिजन, २५–८–’४६

छठा विभाग : अनिवार्य शिक्षा

१७

अनिवार्य शिक्षा

मुझे पूरा भरोसा नहीं है कि मैं अनिवार्य शिक्षाका कभी भी विरोध नहीं करूंगा। मुझे सब तरहकी जबरदस्तीसे नफरत है। जैसे मैं अिस प्रकारके आपत्तिजनक अुपायोंसे राष्ट्रको निर्व्यसनी नहीं बनाना चाहूंगा, वैसे ही यह भी पसन्द नहीं करूंगा कि राष्ट्रको जबरन् शिक्षित बनाया जाय। परंतु जैसे मैं शराबकी दुकानें खोलनेसे अिनकार करके और मौजूदा दुकानोंको बन्द करके मद्यपानको निरुत्साहित करूंगा, वैसे ही रास्तेकी रुकावटोंको दूर करके और निःशुल्क पाठशालाअें खोलकर तथा अुन्हें लोगोंकी आवश्यकताओंके अनुसार चलनेवाली बनाकर निरक्षरताको मिटानेकी कोशिश करूंगा। परंतु अभी तो हमने निःशुल्क शिक्षाके प्रयोगको किसी बड़े पैमाने पर आजमाया तक नहीं है। हमने माता-पिताओंके सामने कोअी आकर्षण पेश नहीं किये हैं। हमने साक्षरताके महत्त्वका काफी या कुछ भी विज्ञापन नहीं किया है। हमारे पास तालीम देनेके लिअे जैसे चाहिये वैसे शिक्षक नहीं हैं। अिसलिअे मेरी रायमें जबरदस्तीका विचार करना बिलकुल जल्दबाजी होगी। मुझे तो यह भी भरोसा नहीं है कि अनिवार्य शिक्षाका प्रयोग जहां कहीं भी आजमाया गया है, वहां वह अच्छी तरह सफल ही हुआ है। अगर अधिकांश लोग शिक्षाको चाहते हैं, तो जबरदस्ती करना बिलकुल गैर-जरूरी है। और अगर वे नहीं चाहते हैं, तो यह प्रयत्न हानिकारक होगा। बहुमतका विरोध होते हुअे भी कानून पास करना किसी निरंकुश सरकारका ही काम होता है। क्या सरकारने अधिकांश लोगोंके

बच्चोंको शिक्षाकी पूरी सुविधायें दे दी हैं? हम पर पिछले सौ या अुससे भी अधिक सालसे जबरदस्ती होती रही है। राज्य हमसे पूर्व-स्वीकृति लिये बिना ही हमारे जीवनकी छोटी-बड़ी बातों पर शासन कर रहा है। अब समय आ गया है कि राष्ट्रको स्वेच्छापूर्ण तरीकोंका अभ्यास कराया जाय, भले ही फिलहाल अुस पर अुससे की जानेवाली प्रार्थनाओं और सलाह आदिका कोअी अनुकूल असर न हो। अभी तक प्रार्थनाओंका बहुत कम असर हुआ है। समाजके सच्चे विकासमें अिससे अधिक बड़ी बाधा और कोअी नहीं हो सकती कि अुसे यह माननेकी आदत पड़ जाय कि स्वेच्छापूर्ण प्रयत्नसे कोअी सुधार नहीं हो सकता। अिस तरहकी तालीम पाअी हुअी जनता स्वराज्यके लिअे सर्वथा अयोग्य हो जाती है।

मैंने अूपर जो कुछ कहा है, अुससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अगर हमें आज स्वराज्य मिल जाय, तो मैं अनिवार्य शिक्षाका कमसे कम तब तक विरोध करूंगा, जब तक कि स्वेच्छापूर्ण प्रारंभिक शिक्षाकी हरअेक कोशिश अीमानदारीसे न कर ली जाय और वह नाकामयाब न हो जाय। पाठकोंको यह न भूलना चाहिये कि भारतमें पचास वर्ष पहलेसे आज अधिक निरक्षरता है; अिसलिअे नहीं कि माता-पिताओंकी अिच्छा कम हो गअी है, परन्तु अिसलिअे कि पहले अुन्हें जो सुविधाअें थीं, वे अेक अैसी प्रणालीके कारण गायब हो गअी हैं, जो देशके लिअे पूर्ण विदेशी और अस्वाभाविक है।

यह मान बैठना अुचित नहीं है कि अधिकांश माता-पिता अितने मूर्ख या हृदयहीन हैं कि अुनके बच्चोंकी शिक्षा अुनके द्वार तक मुफ्त पहुंचा दी जाय तो भी वे अुसकी परवाह न करेंगे।

यंग अिंडिया, १४–८–'२४

सातवां विभाग : विशेष समूहोंकी शिक्षा

१८

प्रौढ़-शिक्षा

मेरी रायमें हमारे दु:खित और लज्जित होनेका कारण जितना हमारा अज्ञान है अुतना निरक्षरता नहीं है। अिसलिअे प्रौढ़-शिक्षाके लिअे मैं चाहूंगा कि सावधानीसे चुने हुअे शिक्षकों द्वारा और अुतनी ही सावधानीसे चुने हुअे पाठ्यक्रमके द्वारा अज्ञानको हटानेका तेज कार्यक्रम बनाया जाय। ये चुने हुअे शिक्षक अिस चुने हुअे पाठ्यक्रमके अनुसार प्रौढ़ ग्रामीणोंको शिक्षित बनायें। अिस कथनका यह अर्थ नहीं है कि मैं अुन्हें वर्णमालाकी जानकारी नहीं कराअूंगा। मेरी नजरमें अिसका अितना महत्त्व है कि मैं अिसका तिस्कार नहीं कर सकता और शिक्षाके साधनके रूपमें अुसके गुणोंकी कीमत कम नहीं कर सकता। प्रोफेसर लॉबकर्ने वर्णमालाको आसान बनानेके लिअे जो जबरदस्त मेहनत की है और प्रोफेसर भागवतने अुसी दिशामें जो महान और व्यावहारिक योग दिया है, अुसकी मैं कदर करता हूं। प्रोफेसर भागवतको तो मैंने निमंत्रण दिया है कि वे जब चाहें सेगांव आकर वहांके पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों तक पर अपनी कला आजमायें।

हरिजन, ५–६–’३७

प्रश्न : प्रौढ़-शिक्षाकी हमारी योजनाओंमें हमारा लक्ष्य साक्षरताका प्रचार होना चाहिये अथवा ‘अुपयोगी ज्ञान’ देना?

अुत्तर : जो बड़े हो गये हैं और कोअी धंधा कर रहे हैं, अुनकी मुख्य जरूरत यह है कि अुन्हें पढ़ना और लिखना आये। जन-

साधारणकी निरक्षरता भारतवर्षका कलंक है और यह मिटना ही चाहिये। अवश्य ही साक्षरताकी मुहिमका आदि और अन्त वर्णमालाके ज्ञानके साथ ही नहीं हो जाना चाहिये। वह अुपयोगी ज्ञानके प्रचारके साथ साथ चलनी चाहिये। परंतु नगरपालिकाओंको सावधान रहना चाहिये कि अगर वे अेक ही साथ दो घोड़ोंकी सवारी करनेकी कोशिश करेंगी तो अुन्हें निराश होना पड़ेगा।

हरिजन, १८–२–’३९

तिरुवेन्नाअीनाल्लुरकी गांधी-मिशन सोसायटीने अपने प्रौढ़ साक्षरता कार्यकी छमाही रिपोर्ट भेजी है। शिक्षित बनाये गये प्रौढ़ोंकी कुल संख्या १९७ थी। परंतु अुसके सामने असली समस्या यह है कि ‘अिस प्रकार मिले हुअे ज्ञानको प्रौढ़ लोग कायम कैसे रख सकते हैं’। रिपोर्टमें कहा गया है : ‘प्रथम सत्रमें जिन सदस्योंने कक्षामें भाग लिया, अुनमें से लगभग आधोंने कार्यकर्तासे कहा है कि वह अिन पाठोंको दुबारा पढ़ाये। सच तो यह है कि वे लोग फिर निर-क्षर बन गये थे। अिस बातको रोकनेके अुपाय निकालनेमें कार्यकर्ता अपने दिमाग लड़ा रहे हैं।’ कार्यकर्ताओंको जरा भी अपने दिमाग लड़ानेकी आवश्यकता नहीं। जब पढ़ाअी थोड़े दिन होती है तो अुसके बाद भूल जाना स्वाभाविक ही है। अिसे अिसी तरह रोका जा सकता है कि पढ़ाअीको ग्रामीणोंकी रोजमर्राकी जरूरतोंके साथ संबद्ध किया जाय। लिखने-पढ़ने और अंकगणितका शुष्क ज्ञान देहातियोंके जीवनका स्थायी अंग न आज है और न कभी हो सकता है। अुन्हें अैसा ज्ञान देना चाहिये जिसका अुन्हें रोज अुपयोग करना पड़े। वह अुन पर थोपा नहीं जाना चाहिये। अुसकी अुन्हें भूख होनी चाहिये। आजकल अुन्हें जो कुछ मिलता है वह अैसा है, जिसकी न अुन्हें आवश्यकता है और न कदर है। ग्रामवासियोंको गांवका गणित, गांवका भूगोल, गांवका अितिहास और साहित्यका वह ज्ञान सिखाअिये, जिसे

अुन्हें रोज काममें लेना पड़े, अर्थात् चिट्ठी-पत्री लिखना और पढ़ना बताअिये। वे अिस ज्ञानको जुटाकर रखेंगे और आगेकी मंजिलोंकी तरफ बढ़ेंगे। जिन पुस्तकोंसे अुन्हें दैनिक अुपयोगकी कोअी सामग्री नहीं मिलती, वे अुनके लिअे किसी कामकी नहीं।

हरिजन, २२–६–'४०

१९

स्त्री-शिक्षा

स्त्रियोंकी शिक्षा

स्त्री और पुरुषका दर्जा बराबर है, परंतु वे अेक नहीं हैं। अुनकी जोड़ी अद्वितीय है, क्योंकि वे अेक-दूसरेके पूरक हैं; वे अेक-दूसरेकी मदद करते हैं और अेकके बिना दूसरेके अस्तित्वकी कल्पना नहीं की जा सकती। अिसलिअे अिन बातोंसे अेक जरूरी परिणाम यह निकलता है कि जिस बातसे दोनोंमें से अेकके दर्जेकी भी हानि होगी, अुससे दोनोंकी समान बरबादी हो सकती है। स्त्री-शिक्षाकी कोअी भी योजना बनानेमें यह बुनियादी सत्य हमेशा ध्यानमें रखना चाहिये। किसी विवाहित जोड़ीकी बाह्य प्रवृत्तियोंमें पुरुष सर्वोपरि है और अिसलिअे यह अुचित ही है कि अुसे अुन बातोंका अधिक ज्ञान होना चाहिये। दूसरी तरफ, घरेलू जीवन सर्वथा स्त्रीका क्षेत्र है और अिसलिअे घरू मामलोंका, बच्चोंके लालन-पालन और शिक्षाका स्त्रियोंको अधिक ज्ञान होना चाहिये। बात यह नहीं है कि ज्ञानका कठोर विभागोंमें बंटवारा कर दिया जाय अथवा ज्ञानके कुछ विभागोंका द्वार किसीके लिअे बन्द कर दिया जाय; परंतु अगर शिक्षाक्रमका निर्माण अिन बुनियादी सिद्धान्तोंके आधार पर — अिन्हें

विवेकपूर्वक समझकर — नहीं किया जाय, तो स्त्री और पुरुषके संपूर्ण जीवनका विकास नहीं किया जा सकता।

स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी, पृष्ठ ४२५, ४२६; २०–२–'१८

स्त्रियां और अंग्रेजी शिक्षा

मैं नहीं मानता कि स्त्रियां आजीविकाके लिअे काम करें अथवा व्यापारिक धंधोंकी जिम्मेदारी अुठायें। जिन थोड़ीसी स्त्रियोंको अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करनेकी आवश्यकता या अिच्छा हो, वे पुरुषोंकी पाठशालाओंमें भर्ती होकर बहुत आसानीसे अपना अभीष्ट प्राप्त कर सकती हैं। स्त्रियोंकी पाठशालाओंमें अंग्रेजी शिक्षा जारी करनेका परिणाम हमारी लाचारीकी अुम्र बढ़ाना ही हो सकता है। मैंने अकसर लोगोंको यह कहते सुना और पढ़ा है कि अंग्रेजी साहित्यका रत्न-भंडार पुरुष और स्त्री दोनोंके लिअे समान रूपसे खोल देना चाहिये। मैं अत्यन्त नम्रतापूर्वक निवेदन करता हूं कि अिस तरहका रवैया अख्तियार करनेमें कोअी गलतफहमी हो रही है। किसीका यह अिरादा नहीं है कि यह भंडार पुरुषोंके लिअे खुला रखा जाय और स्त्रियोंके लिअे बन्द कर दिया जाय। अगर आपको साहित्यका शौक है, तो आप सारे संसारके साहित्यका अध्ययन कीजिये। दुनियामें किसीकी ताकत नहीं कि आपको कोअी रोक सके। परंतु शिक्षाक्रम जब सारे समाजकी जरूरतोंको ध्यानमें रखकर तैयार किये जाते हैं, तब आप अुन मुट्ठीभर लोगोंकी आवश्यकताअें पूरी नहीं कर सकते जिनमें साहित्यिक रुचि है।

स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी, पृष्ठ ४२६, ४२७; २०–२–'१८

स्त्रियोंमें निरक्षरता

स्त्रियोंमें जो निरक्षरता पायी जाती है, अुसका कारण पुरुषोंकी तरह निरा आलस्य और जड़ता नहीं है। अुसका अधिक प्रबल कारण वह

नीचा दर्जा है, जो दूर अतीतसे चली आयी परंपराने अन्यायपूर्वक स्त्रीको दे रखा है। पुरुषने अुसे अपनी संगिनी और 'अर्धांगिनी' समझनेके बजाय घरकी नौकरानी और अपने विलासका साधन बना लिया है! नतीजा यह है कि हमारा आधा समाज लकवेसे पीड़ित है। स्त्रीको मानव-जातिकी माता ठीक ही कहा गया है। हमारा अुसके और अपने दोनोंके प्रति यह धर्म है कि हमने अुसके साथ जो बड़ा भारी अन्याय किया है अुसे हम मिटा दें।

हरिजन, १८–२–'३९

२०

हरिजनोंकी शिक्षा

हरिजनोंकी शिक्षा सबसे कठिन है। कितने ही भौंड़े तरीकेसे क्यों न हो, परन्तु गैर-हरिजन बालकोंको अपने घरमें कुछ न कुछ संस्कार अवश्य मिल जाते हैं। हरिजन बालकसे समाज परहेज करता है, अिसलिअे अुसे कुछ भी नहीं मिलता। अिसलिअे जब तमाम प्रारंभिक पाठशालायें हरिजन बच्चोंके लिअे खुल जायंगी — आगेपीछे जरूर खुलेंगी और मेरी रायमें देरके बजाय जल्दी ही खुलनी चाहिये — तब भी हरिजन बालक अपनी अुक्त प्रारंभिक कमीके कारण दूसरोंकी तुलनामें हमेशा कुछ पीछे रह जायंगे। अुन्हें अुनकी अिस कठिनाअीसे बचानेके लिअे प्रारंभिक तैयारीकी विशेष पाठशालाओंकी जरूरत होगी। यह प्रारंभिक तालीम क्या हो, अिसकी खोज और आजमाअिश अुन बहुतसी हरिजन पाठशालाओंमें की जा सकती है, जो भारतमें फैले हुअे हरिजन-सेवक-संघोंकी देखरेखमें चलाअी जा रही हैं। यह प्रारंभिक तालीम हरिजन बालकोंको तौर-तरीके, अच्छी बोलचाल और अच्छा चाल-चलन सिखानेकी होनी चाहिये। अेक हरिजन बालक

चाहे जैसा बैठता है; चाहे जैसे कपड़े पहनता है; अकसर अुसकी आंखें, कान, दांत, बाल, नाखून और नाक मैलसे भरे होते हैं; बहुतोंको पता ही नहीं होता कि नहाना क्या चीज है। मुझे याद है कि १९१५ में जब त्रिकंबार (तामिलनाड) से मैं अेक हरिजन लड़केको अपने साथ कोचरबमें ले गया, जहां आश्रम अुस समय था, तो मैंने क्या किया था। मैंने अुसकी हजामत बनवाअी। फिर अुसे अच्छी तरह नहलाया और पहननेको अेक सादी धोती, बंडी और टोपी दी। कुछ ही मिनटमें अुसकी शकल अैसी हो गअी कि किसी सुसंस्कृत घरके बच्चेमें और अुसमें कोअी भेद नहीं किया जा सकता था। अुसका सिर, आंखें, कान और नाक सब अच्छी तरह साफ कर दिये गये। अुसके नाखून, जिनमें मैल भरा हुआ था, काट कर साफ कर दिये गये। अुसके पैरों पर मैल जमा हुआ था, वे भी रगड़ कर साफ कर दिये गये। यह क्रिया जरूरत हो तो पाठशाला जानेवाले हरिजन बच्चों पर रोज करनी पड़ेगी। पहले तीन महीने तक अुनका पाठ सफाअीकी शिक्षाके साथ शुरू होना चाहिये। अुन्हें ठीक ढंगसे खाना भी सिखाना चाहिये; यद्यपि जब मैं यह वाक्य लिख रहा हूं, तब मुझे अुड़ीसाकी पैदल यात्राका अेक दृश्य याद आ रहा है। अुस यात्रामें कुछ स्थानों पर हरिजन बालकों और बड़ोंको खाना खिलाया गया था। हरिजनोंने दूसरोंकी अपेक्षा बहुत सफाअीके साथ खाया। दूसरोंने अपनी अंगुलियां खराब कर लीं, अिधर अुधर जूठन बिखेर दी और अपनी जीमनेकी जगह गन्दी कर डाली थी। पर हरिजनोंने कोअी जूठन नहीं छोड़ी और अुनकी पत्तलें बिलकुल साफ थीं। अंगुलियोंको वे खाते खाते हर ग्रासके साथ चाटकर साफ कर लेते थे। मैं मानता हूं कि जिनका मैंने अूपर वर्णन किया है, तमाम हरिजन बालक अुन्हींकी तरह सफाअीसे नहीं खाते।

अगर सब हरिजन पाठशालाओंमें यह प्रारंभिक तालीम देनी है, तो शिक्षकोंके लिअे अुनकी भाषाओंमें ब्योरेवार हिदायतें देनेवाली

पुस्तिकायें तैयार करके बंटवानी चाहिये और पाठशाला-निरीक्षकोंसे कहा जाना चाहिये कि वे अपने निरीक्षणमें अिस विषय पर शिक्षकों और विद्यार्थियोंकी परीक्षा लें और अिस दिशामें होनेवाली प्रगतिके पूरे विवरण भेजें।

अिस कार्यक्रममें शिक्षकोंका चुनाव और मौजूदा कार्यकर्ताओंके प्रशिक्षणमें सावधानीकी जरूरत होगी। परन्तु ये सब बातें खूब ध्यान देने लायक हैं। तभी तो जो हजारों हरिजन बालक संघकी देखरेखमें आते हैं, अुनके प्रति वह अपना कर्तव्य पूरा कर सकेगा।

हरिजन, १८–५–'३५

आठवां विभाग: अुच्च शिक्षा

२१

राष्ट्रीय विश्वविद्यालय

यह राष्ट्रीय विश्वविद्यालय* अिस समय ब्रिटिश अन्यायके विरोध और राष्ट्रीय सम्मानकी रक्षाका प्रतीक है। परन्तु अब वह स्थिर हो गया है। वह संयुक्त भारतके राष्ट्रीय आदर्शोंसे प्रेरणा लेता है। वह अैसे धर्मका समर्थक है, जो हिन्दुओंका 'धर्म' और मुसलमानोंका 'अिस्लाम' है। वह भारतीय भाषाओंको अनुचित विस्मृतिसे बचा लेना और अुन्हें राष्ट्रीय पुर्ननिर्माण तथा भारतीय संस्कृतिके स्रोत बना देना चाहता है। वह मानता है कि अेशियाअी संस्कृतियोंका व्यवस्थित अध्ययन जीवनकी संपूर्ण शिक्षाके लिअे अुतना ही जरूरी है जितना पाश्चात्य विज्ञानका अध्ययन। संस्कृत और अरबी, फारसी और पाली तथा मागधीके विशाल भंडारोंको अच्छी तरह अुलट-पुलट कर यह पता लगाना पड़ेगा कि राष्ट्रके लिअे आवश्यक शक्तिका स्रोत कहां है। वह केवल प्राचीन संस्कृतियोंसे पोषण लेना या अुन्हें दोहराना नहीं चाहता। वह अेक अैसी नयी संस्कृतिका निर्माण करना चाहता है, जिसका आधार अतीतकी परम्पराअें हों, पर साथ ही जो परवर्ती कालके अनुभवसे समृद्ध की जाय। वह अुन विभिन्न संस्कृतियोंके सामंजस्यका प्रतीक है, जो भारतमें स्थापित हो गअी हैं, जिनका भारतीय जीवन पर प्रभाव पड़ा है और जो स्वयं भी अिस भूमिकी भावनासे प्रभावित हुअी हैं। यह सामंजस्य कुदरती तौर पर स्वदेशी ढंगका होगा और अुसमें प्रत्येक संस्कृतिको अुसका अुचित स्थान दिया जायगा। वह अमरीकी नमूनेका नहीं होगा, जहां अेक ही प्रधान संस्कृतिमें

---

* गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद।

बाकी सब संस्कृतियां समा गयी हैं और जहां लक्ष्य अेकरसताकी ओर नहीं है, परन्तु अेक बनावटी और जबरदस्तीकी अेकताकी ओर है। अिसी कारण यह विश्वविद्यालय चाहता है कि अुसके विद्यार्थी भारतके तमाम धर्मोंका अध्ययन करें। अिस प्रकार हिन्दुओंको कुरानके अध्ययनका मौका मिल सकता है और मुसलमानोंको यह जाननेका कि हिन्दू शास्त्रोंमें क्या है। अिस विश्वविद्यालयने किसी चीजका बहिष्कार किया है तो अुस भावनाका किया है, जो मानव-जातिके किसी भी अंगको सदाके लिअे अछूत मानती है। हिन्दुस्तानीको, जो संस्कृत, हिन्दी और फारसीमयी अुर्दूका राष्ट्रीय मिश्रण है, अनिवार्य बना दिया गया है। स्वाधीनताकी वृत्तिको न केवल धर्म, राजनीति और अितिहासके द्वारा ही, बल्कि औद्योगिक तालीमके जरिये भी पोषण दिया जायगा, क्योंकि अिसीसे देशके युवकोंको आर्थिक स्वाधीनता मिलेगी और वह पृष्ठबल मिलेगा जो स्वाभिमानकी वृत्तिसे पैदा होता है। विश्वविद्यालयको सभी देहाती कस्बोंमें हाअीस्कूल स्थापित करनेकी आशा है, ताकि शिक्षा दूर दूर तक फैल जाय और आम जनता तक जल्दीसे जल्दी पहुंच जाय। शिक्षाका माध्यम गुजराती रखनेसे यह प्रक्रिया आसान हो जायगी और थोड़े ही समयमें शिक्षितों और अशिक्षितोंमें पड़ी हुअी आत्म-घातक खाअी पट जायगी। और, भद्र लोगोंको अुद्योगकी और मजदूर-वर्गको साहित्यकी शिक्षा मिलनेसे यह परिणाम होगा कि धनका असमान बंटवारा और अुससे पैदा होनेवाला सामाजिक असंतोष बहुत कुछ रुक जायगा। सरकारी विश्वविद्यालयोंका सबसे बड़ा दोष यह रहा है कि अुन पर विदेशी नियंत्रण है और अुन्होंने 'केरियर' के बारेमें गलत मूल्य अुत्पन्न कर दिये हैं। विद्यार्थियोंमें यह विचार घर कर गया है कि शिक्षाका लक्ष्य बड़ी नौकरियां, या जिनमें ज्यादा पैसा मिलता है अैसे दूसरे काम करना ही है। गुजरात विद्यापीठने सरकारसे असहयोग करके अपनी व्यवस्थामें से अिन दोनों बुराअियोंको अपने-आप मिटा दिया है। संस्थापक और संचालक अिस निश्चय पर सरकारके

राष्ट्रीय बन जाने तक कायम रहे, तो अुन्हें राष्ट्रीय आदर्शों और राष्ट्रीय आवश्यकताओंकी स्पष्ट कल्पना बना लेनेमें मदद मिलेगी।

'टागोर', पृष्ठ ४५५–५७; १७–११–'२०

कॉलेजकी शिक्षा सरकारी खर्चसे नहीं

मैं कॉलेजकी शिक्षामें कायापलट करके अुसे राष्ट्रीय आवश्यकताओंके अनुकूल बनाअूंगा। यंत्रविद्याके तथा अन्य अिंजीनियरोंके लिअे डिग्रियां होंगी। वे भिन्न भिन्न अुद्योगोंके साथ जोड़ दिये जायंगे और अुन अुद्योगोंको जिन स्नातकोंकी जरूरत होगी अुनके प्रशिक्षणका खर्च वे अुद्योग ही देंगे। अिस प्रकार टाटावालोंसे आशा की जायगी कि वे राज्यकी देखरेखमें अिंजीनियरोंको तालीम देनेके लिअे अेक कॉलेज चलायें। अिसी तरह मिलोंके संघ अपनी जरूरतोंके स्नातकोंको तालीम देनेके लिअे अपना कॉलेज चलायेंगे।

अिसी तरह और अुद्योगोंके नाम लिये जा सकते हैं। वाणिज्य व्यवसायवालोंका अपना कॉलेज होगा। अब रह जाते हैं कला, औषधि और खेती। कअी खानगी कला-कॉलेज आज भी स्वावलंबी हैं। अिसलिअे राज्य अैसे कॉलेज चलाना बन्द कर देगा। डॉक्टरी कॉलेज प्रामाणिक अस्पतालोंके साथ जोड़ दिये जायंगे। चूंकि ये धनवानोंमें लोकप्रिय हैं, अिसलिअे अुनसे आशा रखी जाती है कि वे स्वेच्छासे दान देकर डॉक्टरी कॉलेजोंको चलायेंगे। और कृषि-कॉलेज तो अपने नामको सार्थक करनेके लिअे स्वावलंबी होने ही चाहिये। मुझे कुछ कृषि-स्नातकोंका दुःखद अनुभव है। अुनका ज्ञान अूपरी होता है। अुनमें व्यावहारिक अनुभवकी कमी होती है। परन्तु यदि वे देशकी जरूरतोंके अनुसार चलनेवाले और स्वावलंबी खेतों पर तालीम लें, तो अुन्हें अपनी डिग्रियां लेनेके बाद और अपने मालिकोंके खर्च पर तजुर्बा हासिल नहीं करना पड़ेगा।

हरिजन, ३१–७–'३७

अुच्च शिक्षा

अुच्च शिक्षाको और राष्ट्रीय आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिअे जरूरी शिक्षाको, चाहे वह विविध अुद्योगोंकी हो, कला-कौशलकी हो या साहित्य और ललित कलाओंकी हो, खानगी प्रयत्न पर छोड़ देना चाहिये।

राज्यके विश्वविद्यालय खालिस परीक्षा लेनेवाली संस्थायें रहें और वे अपना खर्च परीक्षा-शुल्कसे ही निकाल लिया करें।

विश्वविद्यालय शिक्षाके सारे क्षेत्रकी देखरेख रखेंगे और शिक्षाके विभिन्न विभागोंके पाठ्यक्रम तैयार करके अुन्हें मंजूरी देंगे। कोअी खानगी स्कूल अपने-अपने विश्वविद्यालयोंसे पूर्वस्वीकृति लिये बिना नहीं चलाये जाने चाहिये। विश्वविद्यालयके स्वीकृतिपत्र प्रमाणित योग्यतावाले और प्रामाणिक व्यक्तियोंकी किसी भी संस्थाको अुदारता-पूर्वक दिये जाने चाहिये। और हमेशा यह समझकर चला जायगा कि विश्वविद्यालयोंका राज्य पर कोअी खर्च नहीं पड़ेगा। अुसे सिर्फ अेक केन्द्रीय शिक्षा-विभागका खर्च ही अुठाना होगा।

अुपरोक्त योजनाके कारण राज्य अपनी आवश्यकताकी शिक्षा-संस्थायें चलानेकी जिम्मेदारीसे मुक्त नहीं हो जाता।

हरिजन, २–१०–'३७

(१) मैं संसारमें प्राप्त हो सकनेवाली अूंचेसे अूंचे दर्जेकी शिक्षाके भी विरुद्ध नहीं हूं।

(२) राज्यको जहां भी अुसका निश्चित अुपयोग हो वहां अुसका खर्च देना ही चाहिये।

(३) मैं अिस बातके खिलाफ हूं कि किसी भी प्रकारकी अुच्च शिक्षाका खर्च राज्यकी आम आयसे दिया जाय।

(४) यह मेरा पक्का विश्वास है कि हमारे कॉलेजोंमें दी जाने-वाली कथित कला-शिक्षाका अधिकांश नितान्त अपव्यय है और अिससे

शिक्षित वर्गमें बेकारी पैदा हुअी है। अितना ही नहीं, अुसने हमारे कॉलेजोंकी चक्कीमें से गुजरनेवाले अभागे लड़कों और लड़कियोंके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्यको भी नष्ट कर दिया है।

(५) विदेशी भाषाके माध्यमने, जिसके द्वारा भारतमें अुच्च शिक्षा दी जाती है, राष्ट्रकी अपार बौद्धिक तथा नैतिक हानि की है। हम अपने जमानेके अितने नजदीक हैं कि यह निर्णय नहीं कर सकते कि यह नुकसान कितना जबरदस्त है। और हम लोगोंको तो, जिन्होंने यह शिक्षा पाअी है, अुसके शिकार और निर्णायक दोनों बनना पड़ता है — जो लगभग असंभव कार्य है।

अिस प्रकार मेरा यह दावा है कि मैं अुच्च शिक्षाका शत्रु नहीं हूं। परन्तु जिस प्रकारकी अुच्च शिक्षा अिस मुल्कमें दी जाती है अुसका मैं दुश्मन हूं। मेरी योजनामें अधिक और बेहतर पुस्तकालय होंगे, अधिक और बेहतर प्रयोगशालायें होंगी और अधिक तथा बेहतर शोध-संस्थाअें होंगी। अुसके अनुसार हमारे यहां रसायन-शास्त्रियों, अिंजीनियरों और दूसरे विशेषज्ञोंकी अेक सेना होगी, जो राष्ट्रके सच्चे सेवक होंगे और दिन-दिन अपने अधिकारों और आवश्यकताओंके प्रति सजग होनेवाली जनताकी विविध और बढ़ती हुअी जरूरतें पूरी करेंगे। और ये सब विशेषज्ञ कोअी विदेशी भाषा न बोलकर जनताकी भाषा बोलेंगे। अुनका प्राप्त किया हुआ ज्ञान आम लोगोंकी संपत्ति होगा। निरे अनुकरणके स्थान पर सच्चा मौलिक कार्य होगा। और खर्च समान तथा न्यायपूर्ण ढंगसे बंट जायगा।

हरिजन, ९–७–'३८

अेक भूतपूर्व प्राध्यापकने अुच्च शिक्षावाला अुपरोक्त लेख पढ़ कर मुझे अेक लंबा पत्र लिखा है। अुसमें से मैं निम्नलिखित आवश्यक अंश यहां देता हूं :

“अुक्त लेखमें आपका यह तीसरा निष्कर्ष कि अुच्च शिक्षाका खर्च राज्यकी आम आयसे न दिया जाय, स्वीकार करनेमें

मैं असमर्थ हूं। अुस निष्कर्षके अिस परिणामको भी मैं स्वीकार नहीं कर सकता कि विश्वविद्यालयोंको स्वावलंबी होना चाहिये। मेरा विश्वास है कि किसी भी देशमें — अगर अुसे प्रगतिशील बनना है तो — ज्ञानकी **सभी** शाखाओंका अध्ययन करनेकी पर्याप्त सुविधायें होनी चाहिये। केवल रसायनशास्त्र, औषधिशास्त्र और अिजीनियरिंगकी ही नहीं, परन्तु साहित्य, दर्शन, अितिहास, समाजविज्ञान — सैद्धान्तिक और व्यावहारिक — सभी प्रकारके ज्ञानकी व्यवस्था होनी चाहिये। अूंचे दरजेके सभी प्रयत्नोंमें अनेक सुविधाओंकी जरूरत होती हैं, जो राज्यके आश्रयके बिना नहीं मिल सकतीं। अिस तरहके कामोंके लिअे **केवल** स्वेच्छापूर्ण प्रयत्नों पर निर्भर रहनेवाला देश पिछड़े और हानि अुठाये बिना नहीं रह सकता। वह स्वतंत्र होनेकी और अुस स्वतंत्रताको कायम रख सकनेकी हरगिज अुम्मीद नहीं कर सकता। राज्यको **सब** क्षेत्रोंमें अुच्च शिक्षाकी स्थिति पर बहुत ध्यान देना पड़ेगा। स्वेच्छापूर्ण प्रयत्न तो अवश्य हों और हमारे यहां भी नूफील्ड और रॉकफेलर जैसे दानी होने ही चाहिये। परन्तु राज्यको चुपचाप तमाशा देखते नहीं रहना चाहिये। अुसे सक्रिय रूपमें आगे आकर संगठन, सहायता और संचालन करना चाहिये। मैं चाहता हूं कि प्रश्नके अिस पहलूका आप स्पष्टीकरण करें।

“अपने लेखके अन्तमें आप कहते हैं: ‘मेरी योजनामें अधिक और बेहतर पुस्तकालय होंगे।’ आपने जिस योजनाका जिक्र किया है, वह मुझे आपके लेखमें नहीं मिलती और न मैं यह समझ पाया कि अुस योजनाके अनुसार ‘अधिक और बेहतर पुस्तकालय और प्रयोगशालायें’ कैसे स्थापित हो जायंगी। मेरी रायमें अैसे पुस्तकालय और प्रयोगशालायें कायम रखी जानी चाहिये और जब तक दानदाता और स्वेच्छा-संस्थाअें काफी

संख्यामें आगे नहीं आतीं, तब तक राज्य अिस जिम्मेदारीको छोड़ नहीं सकता।"

अगर 'निश्चित अुपयोग' शब्दप्रयोगका व्यापक अर्थ किया जाय तो मेरा वह लेख काफी स्पष्ट है। मैंने अैसे भारतकी कल्पना नहीं की है जो दरिद्रता-पीड़ित है और जिसमें करोड़ों अज्ञानी रहते हैं। मैंने अपने मनमें अैसे भारतका चित्र खींचा है, जो अपनी प्रकृतिके अनुकूल अुत्तम मार्ग पर लगातार आगे बढ़ता जा रहा हो। परंतु मैंने यह कल्पना नहीं की है कि वह पश्चिमकी मरती हुअी संस्कृतिकी घटिया अथवा बढ़िया नकल हो। अगर मेरा सपना पूरा हो जाय और सात लाख गांवोंमें से प्रत्येक गांव अेक अैसा सजीव गणतंत्र बन जाय, जिसमें कोअी बेपढ़ा-लिखा न हो, कोअी कामके बिना बेकार न हो, सबको अुपयोगी धंधा, पौष्टिक भोजन, हवादार मकान और तन ढंकनेके लिअे काफी खादी प्राप्त हो और जिसमें सभी ग्रामवासी सफाअी और तन्दुरुस्तीके नियम जानते और पालते हों, तो अैसे राज्यकी जरूरतें विविध और बढ़ती हुअी होंगी ही; और अगर अुसे प्रगति करनी है, तो अुन जरूरतोंको पूरा भी करना ही होगा। अिसलिअे मैं अच्छी तरह कल्पना कर सकता हूं कि पत्रलेखकने जिस शिक्षाका जिक्र किया है, अुसके लिअे और अुसके अलावा और भी अनेक बातोंके लिअे, जो मैं बता सकता हूं, राज्य रुपयोंका अिंतजाम करेगा। और अगर राज्यको जरूरत होगी तो वह अुस तरहके पुस्तकालय जरूर रखेगा।

परन्तु राज्य मेरी रायमें बी० अे०, अेम० अे० पास लोगोंकी फौज नहीं खड़ी करेगा — जिनकी बुद्धि हदसे ज्यादा रटाअीके कारण क्षीण और मस्तिष्क अंग्रेजोंकी तरह अंग्रेजी बोलने और लिखनेके असम्भव प्रयत्नसे लगभग बेकार हो गये हों। अिनमें से अधिकांशको न कोअी काम मिलता है, न नौकरी। कभी नौकरी मिलती है तो आम तौर पर क्लर्कीकी होती है, जिसमें हाअीस्कूल और कॉलेजके

बारह वर्षोंमें प्राप्त किया हुआ अधिकांश ज्ञान बिलकुल बेकार साबित होता है।

विश्वविद्यालयकी तालीम जब राज्य अुसका अुपयोग करता है तब स्वावलंबी बनती है। अैसी तालीमके लिअे खर्च करना पाप है, जिससे न राष्ट्रको लाभ है न व्यक्तिको लाभ है। मेरी रायमें जो व्यक्तिगत लाभ राष्ट्रीय लाभ साबित नहीं किया जा सकता वह लाभ ही नहीं है। और चूंकि मेरे अधिकांश आलोचक अिस बात पर सहमत मालूम होते है कि मौजूदा अुच्च शिक्षाका और, अितना ही क्यों, प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षाका भी वस्तुस्थितिसे कोअी सम्बन्ध नहीं है, अिसलिअे राज्यको अुससे लाभ नहीं हो सकता। जब अुसका प्रत्यक्ष आधार वस्तुस्थिति पर होगा और वह पूरी तरह मातृभाषाके द्वारा दी जायगी, तब शायद मेरे पास अुसके विरुद्ध कहनेको कुछ नहीं रहेगा। वस्तुस्थिति पर आधार रखनेका मतलब है राष्ट्रीय अर्थात् राज्यकी आवश्यकताओं पर आधार रखना। अैसी शिक्षाके लिअे राज्य खर्च करेगा। जब वह सुखद समय आ जायगा, तब भी हम देखेंगे कि अनेक संस्थायें स्वेच्छापूर्ण दानसे चल रही हैं, भले अुनसे राज्यको लाभ हो या न हो। आजकल शिक्षाके नामसे भारतमें जो कुछ चल रहा है, अुसका अधिकांश अिसी श्रेणीका है; और अिसलिअे मेरा बस चले तो अुसका खर्च राज्यकी आम आयसे नहीं दिया जायगा।

हरिजन, ३०–७–'३८

विश्वविद्यालयकी शिक्षाका पुनर्निर्माण

पूनामें शिक्षा-मंत्रियोंके सम्मेलनमें गांधीजीने कहा, "मैंने प्रौढ़-शिक्षाके बारेमें जो कुछ कहा है, वह विश्वविद्यालयकी शिक्षा पर भी लागू होता है। अुसका देशकी आवश्यकताओंसे पूरा-पूरा मेल होना चाहिये। अिसलिअे वह बुनियादी शिक्षाक्रमसे संबद्ध अुसका विस्तृत रूप ही होना चाहिये। यह मुख्य बात है। अगर अिस बातमें आप मुझसे

सहमत नहीं हैं, तो मेरे खयालसे मेरी सलाह आपके लिअे अुपयोगी नहीं होगी। लेकिन अगर आप अिसमें मुझसे सहमत हैं कि विश्वविद्यालयोंकी मौजूदा शिक्षा हमें स्वाधीनताके योग्य नहीं बनाती, बल्कि गुलाम ही बनाती है, तो आप भी मेरी तरह अिस प्रणालीका कायापलट करने और अुसे अुठा देनेके लिअे अधीर हो जायंगे और राष्ट्रीय आवश्यकताके अनुकूल नये ढंग पर अुसकी पुनर्रचना करेंगे।

आजकल हमारे विश्वविद्यालयोंमें शिक्षा पाये हुअे नौजवान या तो सरकारी नौकरियोंके पीछे दौड़ते हैं या गलत रास्ते लगकर लोगोंमें असंतोष पैदा करके अपने जीकी जलन मिटाते हैं। वे भीख मांगने या दूसरों पर निर्भर रहनेमें भी लज्जित नहीं होते। अुनकी अैसी दुर्दशा है। विश्वविद्यालयकी शिक्षाका लक्ष्य अैसे सच्चे लोकसेवक पैदा करना होना चाहिये, जो अपने देशकी स्वतंत्रताके लिअे जियें और अुसीके लिअे मरें। अिसलिअे मेरी राय है कि तालीमी संघके शिक्षकोंकी मददसे विश्वविद्यालयकी शिक्षाको बुनियादी शिक्षाके साथ जोड़ देना चाहिये।

हरिजन, २५–८–'४६

नये विश्वविद्यालय

प्रान्तोंमें नये विश्वविद्यालय कायम करनेकी लोगों पर सनक-सी सवार हो गअी मालूम होती है। गुजरात गुजरातीके लिअे, महाराष्ट्र मराठीके लिअे, कर्नाटक कन्नड़के लिअे, अुड़ीसा अुड़ियाके लिअे और आसाम आसामीके लिअे विश्वविद्यालय चाहता है। मैं अवश्य मानता हूं कि अगर अिन संपन्न प्रांतीय भाषाओं और अुन्हें बोलनेवाले लोगोंकी पूरी अुन्नति करनी हो तो ये विश्वविद्यालय होने चाहिये।

साथ ही मुझे डर है कि अिस लक्ष्यको पूरा करनेमें हमसे बेजा जल्दबाजी हो रही है। अिसके लिअे पहला कदम प्रान्तोंका भाषावार राजनीतिक बंटवारा होना चाहिये। अुनका शासन अलग हो जायगा तो स्वाभाविक तौर पर जहां विश्वविद्यालय नहीं हैं वहां वे कायम

हो जायंगे। बम्बअी प्रान्तमें गुजराती, मराठी और कन्नड़ तीन भाषाअें हैं। अिससे अुनका विकास रुका हुआ है। मद्रासमें तामिल, तेलगु, मलयालम और कन्नड़ चार भाषाअें हैं। अिस प्रकार अेक ही काम अेकसे अधिक जगहोंमें होता है। यह सच है कि आन्ध्र देशमें आन्ध्र विश्वविद्यालय है। मेरी रायमें आन्ध्र विदेशी नियंत्रणसे मुक्त अेक अलग शासनिक अिकाअी होता, तब अिस विश्वविद्यालयका जो स्थान होता वह अिस समय नहीं है। यह स्वतंत्रता भारतको अभी दो ही महीने पहले मिली है। यही बात अन्नमलाअी विश्वविद्यालयके लिअे कही जा सकती है। कौन कह सकता है कि अुस विश्वविद्यालयमें तामिलको अपना अुचित स्थान मिल गया है?

नये विश्वविद्यालयोंके लिअे अुचित पृष्ठभूमि होनी चाहिये। विश्वविद्यालय हों अुसके पहले अुनका पोषण करनेवाले स्कूल और कॉलेज होने चाहिये, जहां अपनी अपनी प्रान्तीय भाषाओंके माध्यमसे शिक्षा दी जाय। तभी विश्वविद्यालयोंका आवश्यक वातावरण खड़ा हुआ माना जा सकता है। विश्वविद्यालय चोटी पर होता है। शानदार चोटी तभी कायम रह सकती है जब बुनियाद अच्छी हो।

हम राजनीतिक दृष्टिसे तो स्वतंत्र हो गये, परंतु पश्चिमके सूक्ष्म प्रभावसे मुक्त नहीं हुअे हैं। मुझे अुस विचारधाराके राजनीतिज्ञोंसे कुछ नहीं कहना है, जो यह मानते हैं कि ज्ञान पश्चिमसे ही आ सकता है। मैं अिस विश्वाससे भी सहमत नहीं हूं कि पश्चिमसे कोअी अच्छी बात नहीं मिल सकती। मगर मुझे यह डर जरूर है कि अभी तक अिस मामलेमें हम किसी निर्णय पर नहीं पहुंच सके हैं। आशा है कोअी यह दावा नहीं करेगा कि चूंकि हमें विदेशी प्रभुतासे राजनीतिक मुक्ति मिल गअी मालूम होती है, सिर्फ अिसलिअे हम विदेशी भाषा और विदेशी विचारोंके प्रभावसे भी मुक्त हो गये हैं। क्या यह बुद्धिमानी नहीं है, क्या देशके प्रति हमारे कर्तव्यकी यह मांग नहीं है कि नये विश्वविद्यालय खड़े करनेसे पहले हम जरा सुस्ता कर अपनी नवप्राप्त स्वतंत्रताके

प्राणवायुसे अपने फेफड़ोंको भर लें? विश्वविद्यालयको बहुतसी शानदार अिमारतों और सोने-चांदीके खजानेकी कभी आवश्यकता नहीं होती। अुसे सबसे ज्यादा जरूरत लोकमत द्वारा समझ कर दिये गये सहारेकी है। अुसके पास शिक्षकोंका अेक बड़ा भण्डार होना चाहिये। अुसके संस्थापक दूरदर्शी होने चाहिये।

मेरी रायमें विश्वविद्यालयोंकी स्थापनाके लिअे रुपया जुटाना लोकतांत्रिक राज्यका काम नहीं है। लोगोंको अुनकी जरूरत होगी तो वे आवश्यक पैसा खुद जुटायेंगे। अिस प्रकार स्थापित विश्वविद्यालय देशके भूषण होंगे। जहां शासन विदेशियोंके हाथोंमें होता है, वहां लोगोंको जो कुछ मिलता है वह सब अूपरसे आता है और अिस प्रकार वे अधिकाधिक पराधीन हो जाते हैं। जहां अुसका आधार जनताकी अिच्छा पर और अिसलिअे व्यापक होता है, वहां हर चीज नीचेसे अुठती है और अिसलिअे टिकती है। वह दीखनेमें भी अच्छी होती है और लोगोंको शक्ति देती है। अैसी लोकतांत्रिक योजनामें विद्या-प्रचारमें लगाया हुआ रुपया लोगोंको दस गुना लाभ पहुंचाता है, जैसे अच्छी जमीनमें बोया हुआ बीज बढ़िया फसल देता है। विदेशी प्रभुताके अधीन कायम किये गये विश्वविद्यालय अुलटी दिशामें चले हैं। शायद और कोअी परिणाम हो भी नहीं सकता था। अिसलिअे जब तक भारतवर्ष अपनी नवप्राप्त स्वतंत्रताको पचा न ले, तब तक नये विश्वविद्यालय कायम करनेके बारेमें हर दृष्टिसे सावधान रहना चाहिये।

अब लीजिये हिन्दू-मुस्लिम प्रश्नको। यह जहर अितनी भयंकर मात्रामें फैल गया है कि यह अनुमान लगाना कठिन है कि वह हमें कहां ले जायगा। मान लीजिये कि अनहोनी बात हो जाती है और भारतीय संघमें अेक भी मुसलमान सुरक्षितता और अिज्जतके साथ नहीं रह सकता और न पाकिस्तानमें कोअी हिन्दू या सिक्ख अिस तरह रह सकता है। तब हमारी शिक्षा विषैला रूप धारण कर लेगी। अिसके विपरीत हिन्दू, मुसलमान और विभिन्न धर्मोंवाले और सब लोग दोनों

राज्योंमें पूरी सुरक्षितता और सम्मानके साथ रह सकें, तो अपने-आप हमारी शिक्षा बिलकुल सुखद स्वरूप ग्रहण कर लेगी। या तो अलग अलग धर्मोंके लोगोंने मित्रतापूर्वक साथ रहकर जो सुन्दर मिली-जुली संस्कृति पैदा कर ली है, अुसे हम सब स्थायी बनानेकी और अधिकाधिक बल पहुंचानेकी कोशिश करेंगे; या अुस समयकी तलाश करेंगे जब भारतमें केवल अेक ही धर्म था और हिन्दू लोग ही रहते थे। संभव है कि अितिहासमें अैसा कोअी समय न मिले। लेकिन अगर मिल गया और हमने अपने कदम अुसकी तरफ लौटाये, तो हम कअी सदी पीछे हट जायंगे और विश्वकी घृणाके पात्र बन जायंगे। अुदाहरणके लिअे, अगर हम मुस्लिम कालको मिटा देनेका व्यर्थ प्रयत्न करेंगे, तो हमें भूल जाना होगा कि दिल्लीमें अैसी शानदार जुम्मा मस्जिद थी जिसकी बराबरी संसारकी दूसरी कोअी मस्जिद नहीं कर सकती थी, या अलीगढ़में मुस्लिम विश्वविद्यालय था और मुगलकालमें बने हुअे दिल्ली और आगरेके बड़े बड़े किले थे। तब हमें वह दृष्टि सामने रखकर अपना अितिहास फिरसे लिखना पड़ेगा। अवश्य ही अिस समय हमारे यहां वह वातावरण नहीं है, जिसमें परस्पर विरोधी बातोंमें से ठीक बात चुनकर हम किसी सही नतीजे पर पहुंच सकें। हमारी दो मासकी आयुवाली स्वतंत्रता कोअी स्वरूप ग्रहण करनेके लिअे कशमकश कर रही है। हमें नहीं मालूम कि अन्तमें यह क्या शकल अख्तियार करेगी। जब तक हमें यह निश्चित रूपसे मालूम नहीं हो जाता, तब तक अितना काफी होना चाहिये कि वर्तमान विश्वविद्यालयोंमें जितने परिवर्तन संभव हों कर लिये जायं और हमारी मौजूदा शिक्षा-संस्थाओंमें स्वतंत्रताकी प्राणदायक भावना भर दी जाय। अिस प्रकार हमें जो अनुभव प्राप्त होगा वह अुस समय सहायक होगा, जब नये विश्वविद्यालय कायम करनेका समय आ जायगा।

हरिजन, २–११–'४७

विद्यार्थी

विद्यार्थी अुच्च शिक्षा छोड़ दें

जब करोड़ों लोगोंके लिअे गुजर करना भी मुश्किल है और लाखों लोग भूखसे मर रहे हैं, तब अपने संबंधियोंको खर्चीली शिक्षा देनेका विचार करना भयंकर अपराध है। मनका विकास और विस्तार तो कठोर अनुभवसे ही होगा। यह जरूरी नहीं कि वह कॉलेज या स्कूलके कमरेमें ही हो। जब हममें से कुछ लोग अपनेको और अपनोंको कथित अुच्च शिक्षासे वंचित रखेंगे, तभी हमें सच्ची अुच्च शिक्षा देने और पानेका सच्चा अुपाय मिलेगा। क्या अिसका कोअी मार्ग नहीं है या नहीं हो सकता कि प्रत्येक लड़का अपनी अपनी शिक्षाका खर्च खुद निकाले? संभव है अैसा कोअी मार्ग न हो। हो या न हो, परंतु अिसमें सन्देह नहीं कि जब हम अिस खर्चीली शिक्षा-प्रणालीका त्याग करेंगे, तभी यह देखकर कि अुच्च शिक्षाकी आकांक्षा अिष्ट वस्तु है, हम अुसकी पूर्तिका अुपाय अपनी परिस्थितिके अनुसार खोज निकालेंगे। अैसे सब मामलोंमें सुनहला नियम यह है कि जो चीज लाखों लोगोंको नहीं मिल सकती, अुसे लेनेसे दृढ़तापूर्वक अिनकार कर दिया जाय। अिनकार करनेकी यह योग्यता अचानक हमारे लिअे आकाशसे नहीं अुतर आयेगी। पहली चीज तो यह मानसिक वृत्ति पैदा करना है कि जिस संपत्ति या सुविधासे लाखों लोग वंचित रहते हों, अुसे हम स्वीकार न करें; और दूसरी तात्कालिक वस्तु यह है कि अिस मनोवृत्तिके अनुसार हम जल्दीसे जल्दी अपने जीवन फिरसे ढाल लें।

यंग अिंडिया, २४–६–'२६

स्वाध्याय

यह मान लेना घोर अन्धविश्वास है कि ज्ञान केवल स्कूल-कॉलेजोंमें जानेसे ही मिल सकता है। पाठशालाओं और विद्यालयोंके

पैदा होनेसे पहले भी संसारने प्रतिभाशाली विद्यार्थियोंको जन्म दिया है। स्वाध्याय जितना अूपर अुठानेवाला और स्थायी होता है, अुतनी और कोअी चीज नहीं होती। स्कूल और कॉलेज हममें से अधिकांशको फालतू ज्ञान भरनेका पात्र बना डालते हैं। गेहूं छोड़ दिया जाता है और खाली भूसी भर ली जाती है। मैं स्कूल-कॉलेजोंकी निन्दा नहीं करना चाहता। अुनका भी अुपयोग है। परन्तु हम अुन्हें जरूरतसे ज्यादा महत्त्व देते हैं। ज्ञानप्राप्तिके अनेक साधनोंमें से वे केवल अेक साधन हैं।

यंग अिंडिया, २५–६–'३१

अेक विद्यार्थीकी कठिनाअी

अेक विद्यार्थी पूछता है:

"अेक मैट्रिक या अेफ० अे० पास युवक, जो दुर्भाग्यसे दो तीन बच्चोंका बाप है, क्या करे जिससे अुसे गुजारेके लायक आमदनी हो जाय; और जब पचीस वर्षकी आयुसे भी पहले तथा अपनी मरजीके विरुद्ध विवाह करनेको मजबूर किया जाय तब अुसे क्या करना चाहिये?"

मुझे जो सीधा-सा अुत्तर सूझता है वह यह है कि जिस विद्यार्थीको अपने स्त्री-बच्चोंका पालन करना नहीं आता अथवा जो अपनी मरजीके खिलाफ विवाह करता है अुसने व्यर्थ ही पढ़ाअी की। परंतु यह तो अुसका पिछला अितिहास हुआ। परेशान विद्यार्थी अैसा अुत्तर पानेका पात्र है, जो अुसकी मदद कर सके। वह यह नहीं कहता कि अुसकी आवश्यकता क्या है। अगर वह मैट्रिक होनेके कारण अपनी आवश्यकताको बहुत बढ़ाचढ़ा कर नहीं रखे और अपनेको अेक मामूली मजदूरके बराबर समझ ले, तो अुसे आजीविका जुटानेमें कोअी कठिनाअी नहीं होनी चाहिये। अुसकी बुद्धिसे अुसके हाथ-पैरोंको मदद मिलनी चाहिये और अुसका काम अुस मजदूरसे अच्छा होना चाहिये, जिसे अपनी बुद्धिके विकासका अवसर नहीं मिला है। अिसका मतलब यह नहीं है कि जिस

मजदूरने अंग्रेजी बिलकुल न सीखी हो वह बुद्धिहीन होता है। दुर्भाग्यवश मजदूरोंको बुद्धिका विकास करनेमें कभी सहायता नहीं दी गयी है। और जो स्कूलोंमें से निकलते हैं अुन्हें बुद्धिका विकास करनेका मौका जरूर मिल जाता है, यद्यपि अुन्हें अैसी बाधामें से गुजरना पड़ता है जो संसारमें और कहीं नहीं पाअी जाती। लेकिन मानसिक तैयारीके साथ स्कूल और कॉलेजके दिनोंमें शानके झूठे खयाल अुनमें भर जाते हैं। अिस प्रकार विद्यार्थी समझते हैं कि वे कुर्सी पर बैठकर ही अपनी रोजी कमा सकते हैं। अिसलिअे अिस प्रश्नकर्ताको श्रमका गौरव अनुभव करना होगा और अुस क्षेत्रमें अपने और अपने परिवारके निर्वाहका साधन तलाश करना पड़ेगा।

और, कोअी कारण नहीं कि अुसकी पत्नी भी अपने अवकाशके समयका अुपयोग करके घरकी आमदनी क्यों न बढ़ाये। अिसी प्रकार बच्चे भी कोअी काम कर सकें तो अुन्हें भी अुत्पादक कार्यमें लगाना चाहिये। यह विचार बिलकुल झूठा है कि बुद्धिका विकास पुस्तकें पढ़नेसे ही हो सकता है। अुसका स्थान अिस सचाअीको लेना चाहिये कि बुद्धिका विकास शास्त्रीय ढंगसे कारीगरका काम सीखकर जल्दीसे जल्दी किया जा सकता है। ज्यों ही शिक्षार्थीको हर कदम पर यह सिखाया जाने लगता है कि हाथ या औजारोंकी कोअी विशेष क्रिया क्यों करनी पड़ती है, त्यों ही बुद्धिका सच्चा विकास आरंभ हो जाता है। यदि विद्यार्थी अपनेको साधारण मजदूरोंके बराबर समझ लें, तो अुनकी बेकारीकी समस्या किसी कठिनाअीके बिना हल की जा सकती है।

हरिजन, ९–१–'३७

विदेशोंमें अध्ययन

हमारे विद्यार्थी विदेशोंमें जायं, अिसका समर्थक मैं कभी नहीं रहा हूं। मेरा अनुभव मुझे बताता है कि अैसे लोग लौटने पर गोल सूराखमें चौकोर खूंटी जैसे बन जाते हैं। वे वापिस आकर यहांके

वातावरणमें फिट नहीं हो पाते। जो अनुभव देशमें मिलता है वही अुत्तम और हमारी अुन्नतिमें सबसे ज्यादा सहायक होता है।

हरिजन, ८–९–'४६

विद्यार्थी और राजनीति

यदि विद्यार्थियोंका अेक ठोस संगठन हो, तो वह सेवाका अेक जबरदस्त साधन बन सकता है। अुनका लक्ष्य अेक ही हो सकता है: रुपया कमानेके लिअे नहीं, परंतु मातृभूमिकी सेवाके लिअे योग्य बनना। अगर वे अैसा करें तो अुनका ज्ञान बड़ी अूंचाअी तक पहुंच जायगा। आन्दोलन अुन्हीं लोगोंके लिअे है, जो अपनी पढ़ाअी पूरी कर चुके हैं। पढ़ाअीके दिनोंमें विद्यार्थियोंका अेकमात्र काम अपने ज्ञानकी वृद्धि ही होना चाहिये। भारतके आम लोगोंकी दृष्टिसे आजकल जैसी शिक्षा दी जाती है वह हानिकारक है। यह सिद्ध किया जा सकता है कि वर्तमान शिक्षा देशके लिअे कुछ हद तक अुपयोगी सिद्ध हुअी है। पर मैं अिस अुपयोगिताको नगण्य मानता हूं। कोअी अिससे धोखेमें न आये। अुसकी अुपयोगिताकी खरी परीक्षा यह है: क्या वह अन्न-वस्त्रके अुत्पादनमें, जैसा कि होना चाहिये, कारगर मदद करती है? वर्तमान बुद्धिहीन हत्या-काण्डका शमन करनेमें विद्यार्थी-जगत क्या भाग अदा करता है? किसी देशमें जो भी शिक्षा दी जाय, अुसे अिस बातका प्रत्यक्ष प्रमाण देना होगा कि अुससे देशकी प्रगति हो रही है। अिससे कौन अिनकार करेगा कि भारतमें शिक्षाने यह हेतु पूरा नहीं किया? अिसलिअे विद्यार्थी-संगठनका अेक अुद्देश्य यह होना चाहिये कि वर्तमान शिक्षाकी त्रुटियोंका पता लगाया जाय और जहां तक हो सके अपने भीतरसे अुन्हें दूर करनेका प्रयत्न किया जाय। अपने सदाचरणसे वे शिक्षाधिकारियोंको अपने विचारका बना सकेंगे। अगर वे अैसा करेंगे तो राजनीतिक दलबंदीमें कभी नहीं फंसेंगे। नअी योजनामें स्वभावतः रचनात्मक और अुत्पादक कार्यक्रमको अुचित स्थान मिलेगा। अप्रत्यक्ष रूपमें अुनके कार्यसे देशकी राजनीति शुद्ध बनेगी।

देशकी आजादीकी लड़ाओके समय विद्यार्थियोंकी शिक्षाके मामलेमें मैंने जो बातें कही थीं, वे भुला दी गयी मालूम होती हैं। मैंने विद्यार्थियोंको यह नहीं कहा था कि अध्ययन-कालमें वे राजनीतिमें पड़ें। मैंने अहिंसात्मक असहयोगका अुपदेश दिया था। मैंने सुझाया था कि अुन्हें अिन शिक्षा-संस्थाओंको खाली करके स्वातंत्र्य-संग्राममें कूद पड़ना चाहिये। मैंने राष्ट्रीय विद्यापीठ, पाठशालाओं और विद्यालयोंको प्रोत्साहन दिया था।

हरिजन, ७–९–'४७

राजनीतिक दल और विद्यार्थी

गांधीजीने कुछ विद्यार्थियोंके अेक पत्रका जिक्र किया, जिसमें बताया गया था कि ९ तारीखको होनेवाली विद्यार्थियोंकी हड़तालका संगठन साम्यवादी विद्यार्थी कर रहे हैं, कांग्रेसी विद्यार्थी नहीं। गांधीजीने कहा, "मैं कांग्रेसी विद्यार्थियोंको बधाओ तो देता हूं कि अुन्होंने अपनेको प्रस्तावित हड़तालसे अलग रखा है, मगर मैं फिर वही बात कहूंगा जो अैसी हड़तालोंके बारेमें पहले कह चुका हूं — अर्थात् विद्यार्थियोंका राजनीतिक दलबन्दीसे कोओ संबंध नहीं होना चाहिये। विद्यार्थियोंमें समाजवादी, साम्यवादी, कांग्रेसी और अन्य गुट नहीं होने चाहिये। वे आदिसे अन्त तक शुद्ध विद्यार्थी ही रहें और अिस बातका निश्चय कर लें कि अधिकसे अधिक ज्ञान प्राप्त करेंगे और वह भी नौकरियां पानेके खातिर नहीं, बल्कि जनताकी सेवाके लिओ करेंगे।

हरिजन, १८–१–'४८

सूची